SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तरंग

संयुक्तांक 149-150

प्रयागराज

आस्था, संस्कृति और इतिहास का संगम

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

हिंदी

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है



(केवल विभागीय वितरण के लिए)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी पत्रिका

तरंग

(संयुक्तांक : 149 -150)
(सितंबर 2025 से अगस्त 2026)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

सम्पादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं।

मूल्य: "राजभाषा के प्रति निष्ठा"

आवरण पृष्ठ : प्रयागराज की ऐतिहासिक विरासत का चित्रण

अन्तिम आवरण पृष्ठ : प्रकाशमान कार्यालय का मनोरम दृश्य

तरंग परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री राजकुमार

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रधान एवं कार्यकारी संरक्षक

सुश्री प्रोमी

वरिष्ठ उप महालेखाकार

प्रशासन एवं ए.एम.जी.-III

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री रवि कथूरिया

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-I

(लेखापरीक्षा-प्रथम) उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री अमृतेश शुक्ला

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-IV

(लेखापरीक्षा-प्रथम), उत्तर प्रदेश प्रयागराज

श्री लोकेश चौधरी

उप महालेखाकार/ ए.एम.जी.-V

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री संदीप तिवारी

उप महालेखाकार/ ए.एम.जी.-II

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश,प्रयागराज

संपादक

सुश्री किरन लता

सहायक निदेशक/राजभाषा

सह संपादक मंडल

सुश्री रीनू गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री सुधीर कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुश्री दीपमाला शर्मा , लेखापरीक्षक



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'तरंग' का 149-150वाँ संयुक्तांक प्रकाशित हो रहा है। 150 अंकों की यह गौरवशाली यात्रा केवल एक पत्रिका की यात्रा नहीं है, बल्कि यह हमारे कार्यालय परिवार की रचनात्मकता, वैचारिक एकता और राजभाषा हिंदी के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की यात्रा है।

'तरंग' ने सदैव हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी भावनाओं, अनुभवों और प्रतिभा को अभिव्यक्त करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया है। यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हमें एक-दूसरे से जोड़ने का भी कार्य करती है।

मैं इस संयुक्तांक के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ और उन सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपनी मौलिक रचनाओं से इस अंक को समृद्ध बनाया है।

मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक आप सभी को प्रेरित करेगा और 'तरंग' भविष्य में भी इसी उत्साह के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

(राजकुमार)

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'तरंग' के नवीन अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान की आंतरिक अभिव्यक्ति और रचनात्मकता को मच देने में राजभाषा पत्रिकाओं की भूमिका सर्वोपरि होती है।

'तरंग' न केवल हमारी प्रशासनिक उपलब्धियों और कार्यों को रेखांकित करती है, बल्कि यह हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि, मौलिक विचारों और रचनात्मक सोच को भी सामने लाती है। यह पत्रिका सरकारी कामकाज में हिंदी के सरल और सहज प्रयोग को बढ़ावा देने का एक सराहनीय माध्यम है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी पाठकों के ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होगा और इसमें संकलित लेख, कविताएँ तथा संस्मरण सभी को प्रेरित करेंगे। इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए मैं संपादन मंडल, सभी लेखकों और सहयोगियों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

मैं विभागीय हिंदी पत्रिका 'तरंग' के 149-150 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी असीम शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रोमी

(प्रोमी)

वरिष्ठ उप महालेखाकार

प्रशासन एवं ए.एम.जी-III

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका तरंग का 149-150 वाँ संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। कार्यालय की यह पत्रिका कार्मिकों के मनोभाव को व्यक्त करने का माध्यम है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम हिन्दी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस दौर में हिन्दी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। उन्होंने कहा था, 'जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिन्दी है।'

मातृ भाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।'

राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के इस अंक के प्रकाशन में अपना योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और आशा करता हूँ कि कार्यालय की यह पत्रिका राजभाषा के विकास में अपना अमूल्य योगदान देती रहेगी।

हिन्दी पत्रिका 'तरंग' के सफल प्रकाशन एवं उद्देश्यपूर्ण प्रगति के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

(रवि कथूरिया)

उप महालेखाकार - ए.एम. जी. -I

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम)

उत्तरप्रदेश, प्रयागराज

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'तरंग' का 149-150 वां संयुक्त अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस गौरवपूर्ण अवसर पर मैं पत्रिका के संपादन और प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मठ रचनाकारों तथा संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके निरंतर प्रयासों से पत्रिका ने इस ऊंचे मुकाम को हासिल किया है।

भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि हमारे गहन विचारों और संस्कृति की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा हम न केवल एक-दूसरे के ज्ञान से लाभान्वित होते हैं, बल्कि अपनी सोच को समाज के बड़े हिस्से तक सरलता से पहुंचा सकते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा, नवोन्मेषी कौशल और उत्कृष्ट विचारों को राजभाषा हिंदी में प्रस्तुत करने का एक बेहतरीन मंच प्राप्त होता है।

मैं 'तरंग' पत्रिका के इस नए अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपूर्ण संपादक मंडल एवं लेखकों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

शुभकामनाओं सहित,

अमृतेश

(अमृतेश शुक्ल)
उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-IV
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
उत्तरप्रदेश, प्रयागराज



संदेश

यह मेरे लिए हर्ष और आत्मीय संतोष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'तरंग' का 149-150 वाँ संयुक्तांक अपने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत होने जा रहा है। किसी पत्रिका का प्रकाशन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचारों, अनुभूतियों और सृजनशीलता के उस प्रवाह को स्वर देना है, जिसमें किसी संस्थान की जीवंत आत्मा प्रतिबिंबित होती है।

शब्द जब संवेदना से जुड़ते हैं, तो संवाद बनते हैं और जब संवाद सरोकार से जुड़ता है, तो परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है। हिन्दी इसी जीवंत संवाद की भाषा है। यह हमारे विचारों को सहज अभिव्यक्ति देती है और हमारी सांस्कृतिक स्मृतियों, सामाजिक संवेदनाओं तथा मानवीय मूल्यों को एक सूत्र में पिरोती है।

राजभाषा का महत्व केवल कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग तक सीमित नहीं है। प्रशासन और नागरिक के मध्य विश्वास का सेतु भी भाषा के माध्यम से ही सुदृढ़ होता है। सरल भाषा प्रशासन को सहज बनाती है, सहजता उसे जनोन्मुखी बनाती है और जनोन्मुखी प्रशासन ही सुशासन की आधारभूमि तैयार करता है। अतः राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक, स्वाभाविक और प्रभावी प्रयोग हमारे प्रशासनिक दायित्व का महत्वपूर्ण अंग है।

'तरंग' इस भावना को निरंतर प्रवाहित करने वाली एक सृजनात्मक धारा है। इसके पृष्ठों पर प्रकाशित रचनाएँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ नहीं, बल्कि हमारे सहकर्मियों के अनुभवों, कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता और जीवन-दृष्टि की झलक भी प्रस्तुत करती हैं। व्यस्त प्रशासनिक एवं लेखापरीक्षा दायित्वों के बीच सृजन के लिए समय निकालना स्वयं में एक प्रशंसनीय प्रयास है।

मेरा विश्वास है कि इस अंक की विविध रचनाएँ पाठकों के मन में ज्ञान की जिज्ञासा, साहित्य के प्रति अनुराग और हिन्दी के प्रति आत्मीयता को और गहरा करेंगी। साथ ही, यह अंक कार्यालय में राजभाषा के प्रति सजगता तथा रचनात्मक अभिरुचियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक कदम सिद्ध होगा।

'तरंग' की यात्रा शब्दों से आरंभ होकर संवेदनाओं तक पहुँचे और संवेदनाओं से समाज के व्यापक सरोकारों तक, यही इसकी सार्थकता है। मेरी कामना है कि इसकी प्रत्येक नई कड़ी विचारों को नई दिशा, अभिव्यक्ति को नया विस्तार और हिन्दी को नई प्रतिष्ठा प्रदान करती रहे।

इस सुंदर एवं सार्थक प्रयास के लिए सम्पादक मंडल, रचनाकारों एवं सभी सहयोगियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

लोकेश

(डॉ. लोकेश चौधरी)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-V)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

शब्द जब विचारों का रूप लेते हैं और विचार जब संवेदनाओं से जुड़ते हैं, तब साहित्य जन्म लेता है। 'तरंग' इसी सृजनात्मक चेतना की एक सुंदर अभिव्यक्ति है।किसी संस्थान की पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं होती, बल्कि वह उस संस्थान की सृजनशील सोच, अनुभवों और मानवीय संवेदनाओं का प्रतिबिंब भी होती है। 'तरंग' ने अपने विभिन्न अंकों के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा, विचारों और रचनात्मक अभिव्यक्ति को हिन्दी के माध्यम से साझा करने का सशक्त मंच प्रदान किया है।

राजभाषा हिन्दी के प्रति अनुराग को बढ़ाने के साथ-साथ 'तरंग' ने साहित्य, ज्ञान और विचारों को एक साझा मंच पर लाने का सराहनीय कार्य किया है। इसके प्रत्येक अंक में कुछ नया कहने, कुछ नया सोचने और कुछ नया रचने की ऊर्जा दिखाई देती है।

इस उत्कृष्ट प्रयास को निरंतर आगे बढ़ाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, संपादक मंडल एवं सहयोगियों का अभिनंदन। मेरी कामना है कि 'तरंग' की यह रचनात्मक यात्रा अनवरत जारी रहे और आने वाले वर्षों में यह पत्रिका विचारों की नई दिशाओं तथा सृजन की नई ऊँचाइयों को स्पर्श करे।

'तरंग' के उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

(संदीप तिवारी)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संपादक की कलम से

प्रिय पाठकवृंद,

कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'तरंग' के 149-150वें संयुक्त अंक के साथ आपके समक्ष उपस्थित होते हुए मुझे अपार हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। 'तरंग' पत्रिका हमारे कार्यालय की वैचारिक निरंतरता, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और हिंदी के प्रति अटूट निष्ठा का जीवंत दस्तावेज है। 'तरंग' पिछले कई वर्षों से हमारे विचारों की, हमारी भावनाओं की, और हमारी उपलब्धियों की तरंग बनकर हम सबको एक सूत्र में पिरोती आ रही है।

यह संयुक्तांक प्रयागराज की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत को समर्पित है। जिस प्रकार प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है, उसी प्रकार 'तरंग' भी साहित्य, संस्कृति, कार्यालयीय गतिविधियों और हमारे साथियों की रचनात्मकता का पावन संगम है।

प्रधान महालेखाकार महोदय के संरक्षण में प्रकाशित पत्रिका का वर्तमान अंक मुख्यतः तीन खंडों में विभाजित हैं। पत्रिका के प्रथम खंड में प्रगति प्रतिवेदन को स्थान दिया गया है जिसके अंतर्गत कार्यालय का संक्षिप्त परिचय, शासन को प्रेषित प्रतिवेदन का संक्षिप्त विवरण एवं कार्यालय स्तर पर राजभाषा हिन्दी की प्रगति को शामिल किया गया है। पत्रिका का द्वितीय खंड कार्मिकों की विविधतापूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहा है। राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थल, वनस्पति एवं स्थानीय संस्कृति पर विषयगत आलेख आदि को सँजोये हुये यह खंड साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामयिक दृष्टि से अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कार्मिकों की मौलिक रचनाएँ उनके सकारात्मक विचारों की अभिव्यक्ति हैं।

तृतीय खंड के अंतर्गत कार्यालय की आंतरिक एवं बाह्य गतिविधियों को प्रमुखता से शामिल करते हुये इन सभी का सचित्र विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो अत्यंत आकर्षक एवं प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त कार्यालय से सेवानिवृत्त हुये कार्मिकों की खट्टी-मीठी यादें तथा दिवंगत आत्माओं के स्मृति शेष उनके प्रति हमारी गहरी संवेदनाओं को बयां करते हैं।

मैं उन सभी रचनाकारों, सहयोगियों और पाठकों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग के बिना यह लंबी यात्रा संभव नहीं थी। विशेष रूप से उन सभी साथियों का धन्यवाद जिन्होंने इस विशेष अंक के लिए अपनी मौलिक रचनाएँ प्रेषित कीं।

हमें विश्वास है कि पूर्व अंकों की भाँति इस विशेष संयुक्तांक की तरंगें भी आपके मन को स्पर्श करेंगी। आपकी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शक का कार्य करेंगे। गृह पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करते हुये मैं इसके स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करती हूँ।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में हम सभी इसी प्रकार योगदान देते रहें, इसी कामना के साथ।

जय हिंद, जय हिंदी!

(किरण लता)

सहायक निदेशक / राजभाषा

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक(सर्वश्री / सुश्री /श्री /श्रीमती)	पृष्ठ सं.
	खंड 1- प्रगति प्रतिवेदन		
1.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा प्रथम) का संक्षिप्त परिचय		16
2.	लेखापरीक्षा प्रतिवेदन		18
3.	हिन्दी की वार्षिक प्रगति		31
	खंड 2- कार्मिकों की अभिव्यक्ति		
1.	श्रद्धांजलि "एक था कर्मयोगी"	पंकज श्रीवास्तव वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	33
2.	मेरी रोमांचक यात्रा: "लद्दाख फतह"	प्रेम कुमार सिंह वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	37
3.	कार्बन पेपर से क्लाउड तक...	मनोज कुमार शर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	47
4.	महाभारत की गहन और प्रतीकात्मक व्याख्या- स्वयं को जानने की यात्रा	अशोक कुमार सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	49
5.	एक कारगिल ये भी	अम्बरीश श्रीवास्तव सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	51
6.	ईर्ष्या	कमला शंकर मिश्रा, सहा. पर्यवेक्षक	53
7.	सेवानिवृत्ति — एक सफ़र जो कभी ख़त्म नहीं होता	आशुतोष कुमार (आशुलिपिक ग्रेड-II)	54
8.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: साधन या संकट	दक्ष चतुर्वेदी पुत्र श्री अनुज कुमार चतुर्वेदी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	58
9.	सकारात्मक सोच की शक्ति	कीर्ति मेहरा, आशुलिपिक	60
10.	अपमान — आत्मसम्मान की अग्नि-परीक्षा	कोमल भारतीय, लिपिक	63
11.	पर्यावरण संरक्षण में लेखापरीक्षा की भूमिका : उत्तर प्रदेश के संदर्भ में	कुमार तेजस्वी आजाद मधुर लेखापरीक्षक	64
12.	शतरंज की बिसात	दीपमाला शर्मा, लेखापरीक्षक	66
13.	हिंदी भाषा का भविष्य: इतिहास, सत्ता, रोजगार और डिजिटल युग तक का सफर	किरण लता सहायक निदेशक/राजभाषा	67
14.	सामाजिक समरसता : भारतीय समाज की आधारशिला	रीनू गुप्ता कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	70
15.	ऑफिस " यादों का कारवां " – और 'आख़िरी' शब्द का वो डर	आशुतोष कुमार (आशुलिपिक ग्रेड-II)	72
16.	किताबों का सफ़र	उमाशंकर दूबे 'अनुज' सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	73
17.	नदियां	अर्चना गुप्ता बहन सुश्री रीनू गुप्ता रीनू गुप्ता कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	76
18.	नज़्म एवं कुछ अशआ'र	अमित कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	78 एवं 79
20.	दोस्ती	कीर्ति मेहरा, आशुलिपिक	81

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक(सर्वश्री / सुश्री /श्री /श्रीमती)	पृष्ठ सं.
21.	हमसफ़र	कोमल भारतीय लिपिक	82
22.	ये जीवन सरल नही होता	मीनू श्रीवास्तव	83
23.	कोई कविता बन जाती है एवं महानगर के पाँव	संध्या श्रीवास्तव (डॉ. सतीश कुमार श्रीवास्तव 'नैतिक')	84 एवं 86
24.	धरती माता	सुधीर कुमार वरिष्ठ लेखापरीक्षक/1440	88
25.	बचपन छीनता मोबाइल एवं गुजरते बसंत, बदलती दुनिया	सुवीर पाण्डेय लेखापरीक्षक//2366	89 एवं 90
26.	चार कविताएं	प्रमोद रंजन श्री नील श्री वास्तव सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के संबंधी	91
27.	हमारी पुरानी जिंदगी एवं स्कूल की असली कीमत	जितेन्द्र कुमार एम टी एस	95
28.	सीख जिन्दगी की एवं हौंसलें	सुमन केशरी सहा. पर्यवेक्षक	96 एवं 98
29.	बढ़ती उम्र	मीनू पाल, बहन सुश्री किरन लता	99
30.	मुक्तक	किरण लता सहायक निदेशक/राजभाषा	100
	खंड 3- कार्यालय की गतिविधियां		
1.	हिंदी पखवाड़ा		102
2.	सेवानिवृत्ति सह-सम्मान समारोह		104
3.	ऑडिट सप्ताह 2025 : तकनीक, नवाचार और सांस्कृतिक उत्सव का संगम		105
4.	गणतंत्र दिवस-2026		107
5.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस		108
6.	स्वतंत्रता दिवस 2026		109
7.	विभिन्न सेमिनार का आयोजन		110

- सितंबर 2025 से अगस्त 2026 तक सेवनिवृत हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची 111
- स्मृति शेष 113
- राजभाषा (प्रमुख अधिनियम एवं नियम) 114

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 1

प्रगति प्रतिवेदन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा प्रथम) का संक्षिप्त परिचय

मार्च 01,1984 से भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों को अलग- अलग लेखापरीक्षा एवं लेखा एवं हकदारी कार्यालयों में पुनर्गठित किया गया था। इस प्रकार, महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-1 और महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-2 के कार्यालय उसी तिथि से अस्तित्व में आए। महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-1 का कार्यालय पुराने परिसर में लेखा एवं हकदारी कार्यालयों के साथ स्थित था। जनवरी 1996 में लेखापरीक्षा कार्यालयों को "सत्यनिष्ठा भवन" में स्थानांतरित कर दिया गया। महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-I के कार्यालय को अगस्त 2002 में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)- I के कार्यालय में उच्चीकृत किया गया और सितंबर 2004 से इसका नाम बदलकर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा) नामित कर दिया गया। उत्तर प्रदेश राज्य के पुनर्गठन और उत्तराखंड राज्य के निर्माण के परिणामस्वरूप, 2004 में कैडर का पृथक्करण हुआ । 01.06.2006 को इन दोनों राज्यों के बीच लेखापरीक्षा और लेखा व्यवस्था को पुनर्गठित करने के लिए प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा) के प्रशासनिक और तकनीकी नियंत्रण के तहत वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय) का एक अलग कार्यालय जुलाई 2004 में मुख्यालय कार्यालय द्वारा बनाया गया था।

मुख्यालय कार्यालय द्वारा कार्यालय आदेश क्रमांक. 109. एस.एम.यू./ पी.पी./ पुनर्गठन/ 5-2011 दिनांक 27 मार्च 2012, द्वारा निर्देश दिया गया कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल ऑडिट), उत्तर प्रदेश, अब उत्तर प्रदेश सरकार के सामाजिक और सामान्य सेवा विभागों का प्रधान लेखापरीक्षक होगा और अब से इसे कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश कहा जाएगा। स्थानीय निकायों के लेखापरीक्षा और लेखा से संबंधित सभी तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता कार्य और कर्तव्य भी इस कार्यालय द्वारा निष्पादित किए जाएंगे। कार्यालय वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय लेखापरीक्षा एवं लेखा) को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश में विलय कर दिया गया और कार्यालय में उप महालेखाकार के पद को प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश के कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया।

कार्यालय महालेखाकार (वाणिज्यिक एवं प्राप्ति लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश सरकार के आर्थिक सेवा विभागों का प्रधान लेखापरीक्षक होगा और अब से इसे महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) का कार्यालय कहा जाएगा। इस विषय के सभी पिछले आदेशों का अधिक्रमण कर दिया गया।

मुख्यालय कार्यालय ने कार्यालय आदेश संख्या 108- एसएमयू/ पी पी/ पुनर्गठन/ 5-2011 दिनांक 27 मार्च 2012 के तहत उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार और झारखंड राज्यों में स्थित सभी केंद्र सरकार इकाइयों (स्वायत्त निकायों सहित) की सभी प्राप्तियां और व्यय के लेखापरीक्षा के लिए इलाहाबाद और पटना में शाखा कार्यालयों के साथ लखनऊ में प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का एक नया कार्यालय खोलने का निर्देश दिया।

मुख्यालय कार्यालय ने अधिसूचना संख्या 110/09- एस एम यू/ 2020 दिनांक 15 मई 2020 के माध्यम से निर्देश दिया कि एस एम यू की अधिसूचना संख्या 59/31- एस एम यू/ 2018 दिनांक 09/03/2020 में निहित नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के आदेशों को

ध्यान में रखते हुए, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद को अब से प्रधान महालेखाकार के कार्यालय के रूप में जाना जाएगा I

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एंव राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)उत्तरप्रदेश ,लखनऊ को अब से कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) के रूप में जाना जायेगा I

मुख्यालय कार्यालय ने कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-1) उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ऑडिट-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ के बीच निम्नानुसार क्लस्टर आवंटित किए हैं:

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-1) उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ऑडिट-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ
1. स्वास्थ्य एवं कल्याण	1. ऊर्जा और शक्ति
2. शिक्षा, कौशल विकास और रोज़गार	2. उद्योग और वाणिज्य
3. ग्रामीण विकास	3. परिवहन
4. कृषि, खाद्य एवं संबद्ध उद्योग	4. पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
5. जल संसाधन	5. सार्वजनिक कार्य
6. शहरी विकास	6. वित्त
7. कानून एवं व्यवस्था	7. सूचना प्रौद्योगिकी और संचार
8. सामान्य प्रशासनस्कृति एवं पर्यटन	8. संस्कृति एवं पर्यटन



लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

अप्रैल 2025 से जून 2026 के मध्य उत्तर प्रदेश राज्य विधानमंडल के समक्ष भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के निम्न प्रतिवेदनों को रखा गया

क्रम संख्या	भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदनों का नाम	प्रतिवेदन संख्या	वर्ष
1	शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन	1	2025
2	सरयू नहर परियोजना	3	2025
3	भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकारों का कल्याण	4	2025
4	निष्पादन और अनुपालन लेखापरीक्षा – सिविल	5	2025
5	उत्तर प्रदेश में प्रधानमंत्री आवास योजना – ग्रामीण का क्रियान्वयन	8	2025
6	आयुष	10	2025
7	गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा विकास एवं सम्पत्तियों का आवंटन	11	2025
8	लखनऊ मेट्रो रेल परियोजना के निर्माण एवं संचालन	12	2025



'भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकारों का कल्याण' पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (प्रतिवेदन संख्या 4 वर्ष 2025)

उत्तर प्रदेश के संदर्भ में 'भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकारों का कल्याण' की निष्पादन लेखापरीक्षा पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (प्रतिवेदन संख्या 4 वर्ष 2025) दिनांक 12 अगस्त 2025 को राज्य विधानमंडल के समक्ष रखा गया।

उत्तर प्रदेश में इससे श्रमिकों की कार्य दशाओं में हुए सुधार का आकलन करने के लिए वर्ष 2017-22 की अवधि को आच्छादित करते हुए लेखापरीक्षा में प्रतिष्ठानों और श्रमिकों के पंजीकरण से संबंधित प्रावधानों के क्रियान्वयन तथा उपकर के निर्धारण, संग्रहण एवं बोर्ड को अंतरण तथा इसके उपयोग की भी समीक्षा की गयी। प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष निम्नवत हैं:

लेखापरीक्षा में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अपेक्षित नियमों को बनाने में कमियाँ पायी गईं क्योंकि नियम 2009 में अधिनियम की कई आवश्यकताओं जैसे कि विशेषज्ञ समिति का गठन, 60 वर्ष की आयु के बाद श्रमिकों को प्रदान किए जाने वाले लाभ, श्रमिकों को चिकित्सा व्यय का भुगतान, बोर्ड के अधिकारियों/कर्मचारियों की निबंधन तथा सेवा शर्तों, बोर्ड द्वारा बजट, वार्षिक प्रतिवेदन एवं वार्षिक लेखा तैयार तथा प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक प्रपत्र एवं समय-सीमा इत्यादि के सम्बन्ध में प्राविधान नहीं था।

(प्रस्तर 2.1)

स्थापना पंजीकरण की प्रक्रिया प्रभावी नहीं थी। पंजीकरण प्रमाण पत्र विवरणों के परिवर्तनों पर नजर रखने या पंजीकरण के लिए नियोक्ता द्वारा प्रस्तुत विवरणों को सत्यापित करने के लिए कोई प्रणाली विद्यमान नहीं थी| नियोक्ताओं को पंजीकरण शर्तों के बारे में सूचित नहीं किया गया था। बोर्ड राज्य में निर्माण प्रयासों की लगातार निगरानी के माध्यम से संभावित नियोक्ताओं की पहचान करने के लिए कोई तंत्र स्थापित करने में विफल रहा। शासकीय विभाग एवं स्वायत्त निकाय अपने निर्माण कार्यों को पंजीकृत करने में विफल रहे| अवधि 2017-22 में स्थापना पंजीकरण के वार्षिक लक्ष्य प्राप्त नहीं किए गए थे। इसके अतिरिक्त, न केवल प्रतिष्ठानों के पंजीकरण में विलम्ब हुआ, बल्कि निर्धारित समय के बाद पंजीकरण प्रमाण पत्र भी निर्गत किए गए।उत्तर प्रदेश सरकार ने स्थापना पंजीकरण की प्राप्तियां बोर्ड को अंतरित नहीं की।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

(प्रस्तर 3.1.1 से 3.1.3, 3.1.5, 3.1.6 और 3.1.8)

इसी प्रकार, लाभार्थी पंजीकरण की प्रक्रिया प्रभावी नहीं थी। अवधि 2020-22 में राज्य में लाभार्थियों के पंजीकरण की स्थिति में सुधार हुआ था, यद्यपि कि सक्रिय लाभार्थियों की संख्या कम रही। उत्तर प्रदेश सरकार ने खनन अधिनियम, 1952 अथवा महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम से आच्छादित श्रमिकों के पंजीकरण को बढावा देकर अपात्र लाभार्थियों के पंजीकरण की अनुमति दी थी। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा श्रमिकों के पहचान पत्र के प्रारूप का निर्धारण अधिनियम की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं किया गया था।

(प्रस्तर 3.2.1, 3.2.3 और 3.2.5)

उपकर के निर्धारण, संग्रहित करने तथा बोर्ड को स्थानांतरित करने की प्रणाली प्रभावी नहीं थी। नियोक्ताओं द्वारा उपकर निर्धारण के लिए आवश्यक सूचना प्रस्तुत नहीं किया गया और उपकर निर्धारण अधिकारियों (श्रम विभाग के अतिरिक्त) ने उपकर निर्धारण का कार्य नहीं किया। यहां तक कि चयनित जनपदों में श्रम विभाग के अधिकारियों द्वारा अवधि 2017-22 में किए गए निर्धारण, पंजीकृत प्रतिष्ठानों

के सापेक्ष अत्यंत कम (शून्य से 24 प्रतिशत के बीच) थे। सरकारी विभागों/स्थानीय निकायों के निर्माण कार्यों की अनदेखी करते हुए केवल वैयक्तिक नियोक्ताओं के संबंध में ही उपकर निर्धारण किए गए थे। उपकर संग्रहण अधिकारियों ने या तो ठेकेदार के बिलों से उपकर की कटौती नहीं की अथवा अनुमेय मदों को बाहर रखा। विकास प्राधिकरणों/स्थानीय निकायों ने भवन मानचित्रों के अनुमोदन के समय या तो उपकर आरोपित नहीं किया अथवा अल्प उपकर आरोपित किया। चयनित जनपदों में निर्माण लागत की गणना के लिए समान दरों का उपयोग नहीं किया गया था। उपकर प्राप्तियों के लिए कोई लेखांकन प्रणाली निर्धारित नहीं की गई थी तथा अधिकांश लेन-देन सरकारी लेखे से बाहर ही रहे।

(प्रस्तर 4.1.1 से 4.1.3, 4.1.6, 4.2.1 से 4.2.4, 4.3.1, 4.3.2, 4.4.1 और 4.4.3)

श्रमिकों के सुरक्षा और स्वास्थ्य प्रावधानों का क्रियान्वयन सुनिश्चित नहीं किया जा सका। नियोक्ताओं ने सुरक्षा नीति नहीं बनाई थी| नियोक्ताओं द्वारा सुरक्षा समिति का गठन और सुरक्षा अधिकारी की नियुक्ति सुनिश्चित नहीं की गई थी। नियोक्ताओं ने दुर्घटनाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं की, जिसके परिणामस्वरूप अवधि 2017-22 में घटित सभी दुर्घटना प्रकरणों की जांच नहीं हो सकी| दुर्घटना प्रभावित श्रमिक, कर्मकार कर्मचारी क्षतिपूर्ति अधिनियम के अंतर्गत देय क्षतिपूर्ति से भी वंचित थे।

(प्रस्तर 5.1 से 5.6)

निरीक्षण की प्रणाली में भी कमी थी। कार्य स्थलों के चयन या निरीक्षणों की योजना के सम्बन्ध में कोई अभिलेख अनुरक्षित नहीं थे| निरीक्षण प्रारूप में, अधिनियम तथा नियम 2009 के विभिन्न महत्वपूर्ण प्रावधानों की जांच को सम्मिलित नहीं किया गया था। इसके अलावा, निरीक्षण टिप्पणियों पर अनुवर्ती कार्यवाही का अनुश्रवण भी नहीं किया गया था|

(प्रस्तर 6.3 से 6.7)



'आयुष' की निष्पादन लेखापरीक्षा पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (प्रतिवेदन संख्या 10 वर्ष 2025)

उत्तर प्रदेश के संदर्भ में 'आयुष' की निष्पादन लेखापरीक्षा पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (प्रतिवेदन संख्या 10 वर्ष 2025) दिनांक 19 फ़रवरी 2026 को राज्य विधानमंडल के समक्ष रखा गया।

आयुष भारत में प्रचलित स्वास्थ्य देखभाल की पारंपरिक पद्धतियों जैसे आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी का संक्षिप्त नाम है। स्वास्थ्य सेवा की आयुष पद्धतियाँ निवारक, सहायक और उपचारात्मक स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

अप्रैल 2018 से मार्च 2023 तक की अवधि को आच्छादित करते हुए आयुष पर निष्पादन लेखापरीक्षा यह आंकलन करने के लिए सम्पादित की गई थी कि क्या निधियों, मानव संसाधन, भवन अवसंरचना, फर्नीचर और उपकरण तथा औषधियां उपलब्ध थीं और उनका उचित उपभोग किया गया था, और क्या योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन किया गया था। प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष निम्नवत हैं:

आयुष स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के भवनों के निर्माण और उच्चीकरण के पूर्ण होने में विलम्ब; और इन भवनों के समय पर संचालन में विभाग की विफलता ने गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक अपर्याप्त पहुंच की समस्या को और बढ़ा दिया। 2015-16 से 2022-23 की अवधि में पचास शैय्या वाले कुल 25 एकीकृत चिकित्सालय स्वीकृत किए गए थे। 2015-16 से 2018-19 की अवधि में स्वीकृत 19 एकीकृत आयुष चिकित्सालयों में से, दिसंबर 2021 में केवल 11 एकीकृत आयुष चिकित्सालयों का उद्घाटन किया गया और कार्य पूर्ण होने में विलम्ब के कारण उन्हें मार्च 2023 तक संचालन योग्य बनाया गया। औषधालयों और चिकित्सालयों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव था। इसके अतिरिक्त, 2018-19 से 2022 23 की अवधि में स्वीकृत 1034 स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों में से क्रमशः 219 (21 प्रतिशत) और 528 (51 प्रतिशत) स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों में बिजली और इंटरनेट संयोजन उपलब्ध नहीं थे (जनवरी 2025)।

(प्रस्तर संख्या 3.3.2.2)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

जेम की अनदेखी करके फर्नीचर और उपकरणों का क्रय करने तथा आपूर्तिकर्ताओं को अनुचित लाभ दिए जाने और उनके क्रय तथा उपयोग पर अलाभकारी व्यय किये जाने के प्रकरण लेखापरीक्षा में पाए गये। विद्युत् और इंटरनेट न होने के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं में उपकरण अनुपयोगी पड़े थे। आबंट्न के सापेक्ष व्यय लगभग 100 प्रतिशत था जो निधि के अच्छे उपयोग को प्रदर्शित करता है। इसके बावजूद औषधियों के उत्पादन व क्रय मे विसंगतियां थीं।

(प्रस्तर संख्या 4.2.1)

राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधि निर्माणशाला को 388 आयुर्वेदिक और यूनानी औषधियों के उत्पादन के लिए अनुज्ञप्ति प्राप्त है। उत्तर प्रदेश सरकार ने कुल 130 आयुर्वेदिक और 85 यूनानी औषधियों की सूची को, जिन्हें आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधि निर्माणशाला में उत्पादित किया जाना था, स्वीकृति दी (सितंबर 1999 और अप्रैल 2018)। वर्ष 2018-19 से 2022-23 की अवधि में, आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधि निर्माणशाला ने उक्त सूची के सापेक्ष प्रति वर्ष औसतन 25 आयुर्वेदिक औषधि (19.23 प्रतिशत) और 18.4 यूनानी औषधि (21.65 प्रतिशत) का उत्पादन किया, जिनमें से औसतन 16 औषधियां राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित सूची में सम्मिलित नहीं थीं। आयुर्वेदिक और यूनानी औषधियों के उत्पादन हेतु निर्धारित लक्ष्य आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधि निर्माणशाला

द्वारा प्राप्त नहीं किए गए थे। 2018-19 से 2022-23 की अवधि के दौरान उत्पादित आयुर्वेदिक और यूनानी औषधियों की लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धि, संख्या के संदर्भ में 59.94 प्रतिशत थी जबकि मात्रा के सन्दर्भ में 51.35 प्रतिशत थी।

(प्रस्तर संख्या 5.1.1 एवं 5.1.2)

औषधि परीक्षण प्रयोगशाला ने 2018-19 से 2022-23 के दौरान प्रति सप्ताह लगभग एक नमूने का परीक्षण किया। नमूनों की जाँच के लिए न तो सरकार ने औषधि परीक्षण प्रयोगशाला के लिए और न ही औषधि परीक्षण प्रयोगशाला ने स्वयं के लिये कोई मानदंड निर्धारित किए। अधिकांश औषधि निरीक्षक औषधियों के नमूने जाँच के लिए नहीं भेजते थे। लेखापरीक्षा में पाया गया कि वर्ष 2018-19 से 2022-23 के दौरान केवल 21 जनपदों के औषधि निरीक्षकों ने ही औषधि परीक्षण प्रयोगशाला को परीक्षण के लिए नमूने भेजे। लेखापरीक्षा के उपक्रम पर, शासन ने सभी क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारियों/औषधि निरीक्षकों को औषधियों के नमूने एकत्र करने और आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधि निर्माण इकाइयों का निरीक्षण करने के निर्देश निर्गत किये (जनवरी 2025)।

(प्रस्तर संख्या 5.3.1)

चिकित्सालयों और औषधालयों के लिए औषधियों की आवश्यकता का आंकलन करने हेतु कोई उचित प्रक्रिया नहीं थी, और विभिन्न श्रेणियों (4/15/25 शय्याओंवाले) के चिकित्सालयों और औषधालयों को एक समान मात्रा और प्रकार की औषधियों की आपूर्ति की गयी थी। औषधियों के अनुचित क्रय के प्रकरण भी संज्ञान में आये। राज्य आयुष सोसायटी द्वारा अपने स्तर पर औषधियों की गुणवत्ता सुनिश्चित किए बिना ही आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान कर दिया गया। आपूर्तिकर्ताओं से औषधियों की ढुलाई गन्तव्य तक नहीं ली गई और औषधियों की कम आपूर्ति के प्रकरण भी संज्ञान में आये।

(प्रस्तर संख्या 6.1.5 एवं 6.1.6)

निदेशालयों और अधीनस्थ प्रशासनिक कार्यालयों में अधिकारियों और कर्मचारियों की पर्याप्त कमी थी, साथ ही चिकित्सा महाविद्यालयों, चिकित्सालयों, औषधालयों में मेडिकल, पैरामेडिकल और सहायक कर्मचारियों जैसे चिकित्सा अधिकारी (आयुर्वेद: 33 प्रतिशत, होम्योपैथी: चार प्रतिशत, यूनानी: 12 प्रतिशत), मुख्य फार्मासिस्ट (आयुर्वेद: 88 प्रतिशत, यूनानी: 80 प्रतिशत), फार्मासिस्ट (आयुर्वेद: 47 प्रतिशत, होम्योपैथी: 45 प्रतिशत, यूनानी: 57 प्रतिशत) एवं स्टाफ नर्स (आयुर्वेद: 40 प्रतिशत, होम्योपैथी: 100 प्रतिशत, यूनानी: 81 प्रतिशत) की कमी थी। 11 क्रियाशील पचास शैय्या वाले एकीकृत आयुष चिकित्सालय में निर्धारित मानदंड के विरुद्ध 538 (71 प्रतिशत) मानव संसाधनों की कमी थी। कानपुर नगर, लखनऊ और वाराणसी जिलों में तीन पचास शैय्या वाले एकीकृत आयुष चिकित्सालय की नमूना जांच से पता चला कि औसतन 53 प्रतिशत जनशक्ति की कमी थी। इन कमियों में तीन वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, सात चिकित्सा अधिकारी व 24 नर्सिंग स्टाफ सम्मिलित थे।

(प्रस्तर संख्या 7.1, 7.2, 7.3)

आयुष चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रतिदिन औसत परामर्श और प्रतिदिन औसत अंतःरोगी, भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद और केंद्रीय होम्योपैथी परिषद द्वारा निर्धारित मानदंडों की तुलना में पर्याप्त रूप से कम थे। लेखापरीक्षा में नमूना जाँच किये गये औषधालयों और चिकित्सालयों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव था। शल्य चिकित्सा सेवाओं में भी महत्वपूर्ण कमियाँ पाई गईं। नमूना जांच किए गये चिकित्सालयों में नैदानिक सेवाओं का प्रबंध वांछित के सापेक्ष पर्याप्त रूप से कम था, तथा निर्धारित उपकरणों की अनुपलब्धता और मानव संसाधनों की कमी से ग्रसित था जिसके कारण रोगी, साक्ष्य-आधारित उपचार सुविधायें प्राप्त करने से वंचित थे। नमूना जाँच किये गये चिकित्सालयों में अग्नि सुरक्षा व्यवस्थाओं का पालन न करके चिकित्सालय परिसर में सुरक्षा से समझौता किया गया था।

(प्रस्तर संख्या 9.2.2)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा विकास एवं सम्पत्तियों का आवंटन पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (प्रतिवेदन सं. 11 वर्ष 2025)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा विकास एवं सम्पत्तियों का आवंटन पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (प्रतिवेदन सं. 11 वर्ष 2025) दिनांक 20 फ़रवरी 2026 को राज्य विधानमंडल के समक्ष रखा गया।

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा विकास एवं सम्पत्तियों का आवंटन की निष्पादन लेखापरीक्षा वर्ष 2017-18 से 2021-22 की अवधि में गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा व्यवस्थित विकास एवं आवंटन के आकलन हेतु किया गया था। इसे मार्च 2024 एवं जुलाई 2024 में प्राप्त उत्तरों को सम्मिलित करते हुए अद्यतन किया गया है। प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष निम्नवत हैं:

गाज़ियाबाद का विकास राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के क्षेत्रीय योजना के अनुसार किया जाना था, अतः गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण के महायोजना को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना बोर्ड से अनुमोदित होना था। यद्यपि, गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण के महायोजना-2021 को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना बोर्ड से अनुमोदित नहीं कराया गया था। गाज़ियाबाद के संपूर्ण विकास क्षेत्र हेतु एकीकृत महायोजना तैयार करने की जगह, गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण ने दो महायोजना (गाज़ियाबाद के लिए महायोजना-2021 एवं मोदीनगर के लिए महायोजना-2021) तैयार किए, इन दोनों महायोजना के ज़ोनिंग विनियमों में महत्वपूर्ण विचलन था। इसके अतिरिक्त, इन योजनाओं को तैयार किये जाने में क्रमशः चार एवं दस वर्षों से अधिक का विलम्ब हुआ। आठ ज़ोन में से केवल एक ज़ोन का ज़ोनल विकास योजना तैयार किया गया था।

(प्रस्तर संख्या 2.3.1 से 2.3.6 एवं 2.4)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण, विकास क्षेत्र में प्रस्तावित भूमि उपयोग के विकास में गाज़ियाबाद के महायोजना-2021 का पालन नहीं कर सका। मसौदा महायोजना-2031 के डाटा के अनुसार गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण महायोजना-2021 में प्रस्तावित क्रिया-कलापों के विकास के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सका। खुले स्थान/पार्क/मनोरंजन क्षेत्र (79 प्रतिशत), व्यावसायिक क्षेत्र (66 प्रतिशत), सार्वजनिक और अर्द्ध-सार्वजनिक सुविधाएँ (39 प्रतिशत), आवासीय (21 प्रतिशत) एवं कार्यालय (तीन प्रतिशत) के विकास के लक्ष्य के सापेक्ष प्राप्ति में कमी रही। यद्यपि, औद्योगिक एवं परिवहन गतिविधियों के प्रकरणों में, गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण ने विकास के लक्ष्य से अधिक उपलब्धि प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, महायोजना-2021 में, वर्ष 2017-22 के दौरान लक्षित न्यूनतम 25,000 दुर्बल आय वर्ग की आवासीय इकाइयों के सापेक्ष, मात्र 9,960 दुर्बल आय वर्ग की आवासीय इकाइयाँ (40 प्रतिशत) ही निर्मित की गयीं।

(प्रस्तर संख्या 2.5.1 से 2.5.4)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा वर्ष 2017-18 से वर्ष 2021-22 के दौरान राजस्व लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका एवं वर्ष 2018-19 को छोड़कर यह कमी 40 प्रतिशत से 58 प्रतिशत के बीच रही। वर्ष 2018-19 को छोड़कर वर्ष 2017-22 के दौरान लक्षित व्यय अत्यधिक कम था एवं यह कमी 40 से 63 प्रतिशत के बीच थी।

(प्रस्तर संख्या 3.3)

विकास कार्यों के निष्पादन में गंभीर कमियाँ पायी गयीं। गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण ने महायोजना-2021 के आकलन के अनुसार आवश्यक आवासीय एवं औद्योगिक गतिविधियों हेतु भूमि बैंक को बढ़ाना सुनिश्चित नहीं किया। वर्ष 2017-22 के दौरान गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण ने 300 हेक्टेयर के लक्ष्य के सापेक्ष मात्र 18.32 हेक्टेयर भूमि ही अधिग्रहित किया।

(प्रस्तर संख्या 4.2.1, 4.3.1 से 4.3.7)

Dedicated to Truth in Public Interest

इंटीग्रेटेड/हाई-टेक टाउनशिप योजना के विकासकर्ताओं द्वारा निर्मित की जाने वाली अन्य आवासीय इकाइयों के सापेक्ष 20 प्रतिशत दुर्बल आय वर्ग एवं अल्प आय वर्ग की आवासीय इकाइयाँ निर्मित की जानी थी। हालाँकि, विकासकर्ताओं द्वारा मार्च 2022 तक 6,382 दुर्बल आय वर्ग/अल्प आय वर्ग की आवासीय इकाइयों के लक्ष्य के सापेक्ष दुर्बल आय वर्ग एवं अल्प आय वर्ग हेतु मात्र 2,133 आवासीय इकाइयाँ (33 प्रतिशत) निर्मित की गयीं। तथापि, गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा दोषी विकासकर्ताओं के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गयी। इसके अतिरिक्त, दुर्बल आय वर्ग/अल्प आय वर्ग इकाइयों के निर्माण की गुणवत्ता भी सुनिश्चित नहीं की गयी।

(प्रस्तर संख्या 4.3.8)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण के पास योजनावार विकसित एवं विक्रय के विभिन्न विधियों जैसे- लॉटरी, बोली-सह-नीलामी तथा पहले-आओ पहले-पाओ से विक्रय की गयी सम्पत्तियों का डाटा बैंक नहीं था। अतः लेखापरीक्षा में प्रत्येक योजनाओं में विक्रय हेतु उपलब्ध एवं वास्तव में विक्रय हुईं आवासीय इकाइयों के पूर्ण विवरण की जाँच नहीं की जा सकी। बोली-सह-नीलामी एवं पहले-आओ पहले-पाओ के आधार पर संपत्तियों के आवंटन में भी पारदर्शिता का अभाव था, क्योंकि पिछली नीलामी/विक्रय में विक्रय हेतु शेष सम्पत्तियों को आगामी नीलामी/विक्रय में सम्मिलित नहीं करने के कारणों का उल्लेख अभिलेखों में नहीं था।

(प्रस्तर संख्या 5.3 एवं 5.3.1)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण ने प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत राज्य सरकार द्वारा निर्धारित 45,000 इकाइयों के लक्ष्य के सापेक्ष मात्र 20,173 दुर्बल आय वर्ग इकाइयाँ निर्मित किये जाने की योजना बनायीं थी। इतने कम लक्ष्य के नियोजन के उपरान्त भी, मार्च 2024 तक मात्र 5,801 इकाइयाँ ही निर्माणाधीन थीं।

(प्रस्तर संख्या 5.5)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण, हिंडन नदी के बाढ़ क्षेत्र में अवैध निर्माण को रोकने में विफल रहा तथा नदी के किनारे घनी आबादी है।

(प्रस्तर संख्या 2.5.3 एवं 6.3.3)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण की प्रवर्तन गतिविधियाँ कमज़ोर थीं क्योंकि मात्र 19 से 65 प्रतिशत अनधिकृत निर्माण के चिन्हित प्रकरणों में अनियमित/अवैध निर्माण के विरुद्ध कार्रवाई की गई थी। गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण बोर्ड के निर्देश के विरुद्ध अशमनित क्षेत्र का ध्वस्तीकरण सुनिश्चित किये बिना ही शमनित मानचित्र निर्गत किया गया था।

(प्रस्तर संख्या 6.3.4)

गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण की गतिविधियों का अनुश्रवण कमज़ोर था, क्योंकि संपत्तियों के विकास एवं आवंटन की प्रगति, भूमि अधिग्रहण की स्थिति, भवन नियंत्रण, पाइपलाइन में चल रही परियोजनायें इत्यादि को प्रलेखित एवं प्रतिवेदित नहीं किया गया था।

(प्रस्तर संख्या 7.2.1)

निष्पादन एवं अनुपालन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन-सिविल पर मार्च 2022 को समाप्त अवधि के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सं. 5 वर्ष 2025)

उत्तर प्रदेश सरकार के संदर्भ मे मार्च 2022 को समाप्त अवधि के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का निष्पादन एवं अनुपालन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन-सिविल (प्रतिवेदन सं. 5 वर्ष 2025) दिनांक 12 अगस्त 2025 को राज्य विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

इस प्रतिवेदन में 12 विभागों से संबंधित, राज्य कृषि उत्पादन मंडी परिषद और मंडी समितियों की कार्यप्रणाली, खेल विभाग की गतिविधियों और उत्तर प्रदेश में दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना का कार्यान्वयन की निष्पादन लेखापरीक्षा तथा 12 अनुपालन लेखापरीक्षा प्रस्तरों के परिणाम शामिल हैं।

राज्य कृषि उत्पादन मंडी परिषद और मंडी समितियों की कार्यप्रणाली

इस निष्पादन लेखापरीक्षा में 2017-18 से 2021-22 की अवधि में राज्य कृषि उत्पादन मंडी परिषद और मंडी समितियों के कामकाज का आकलन किया गया। महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा निष्कर्षों का विवरण नीचे दिया गया है:

उत्तर प्रदेश कृषि उत्पादन मंडी अधिनयम, 1964 (अधिनियम) में राज्य सरकार द्वारा विभिन्न हितधारकों में से नामित सदस्यों के माध्यम से मंडी समितियों के कामकाज का प्रावधान है तथा मंडी समिति में उत्पादकों के प्रतिनिधियों में से मनोनीत सदस्यों द्वारा सभापति/उपसभापति का चुनाव किया जाता है।तथापि, परिषद अधिनियम के प्रावधानों को लागू नहीं कर सका, जिसके परिणामस्वरूप राज्य सरकार के अधिकारियों द्वारा मंडी समितियों का संचालन जारी रहा।

(पैराग्राफ 2.1.6.1)

2017-18 से 2021-22 के दौरान कुल प्राप्तियों (₹ 7,654.78 करोड़) में से, बोर्ड ने ₹ 4,173.17 करोड़ का व्यय किया और 251 बाजार समितियों ने ₹ 3,124.19 करोड़ का व्यय किया। 2019-20 के बाद परिषद और मंडी समितियों की प्राप्तियों में गिरावट की प्रवृति रही जिसके परिणामस्वरूप 2020-22 के मध्य उनका व्यय प्राप्तियों से अधिक हो गया। इसके अतिरिक्त, दुकानों के आवंटन पर ₹81.96 करोड़ का प्रीमियम, ₹11.78 करोड़ का किराया और ₹1.33 करोड़ का उपयोगकर्ता शुल्क मार्च 2022 तक राज्य में मंडी समितियों द्वारा आवंटित दुकानों/गोदामों पर बकाया था। पांच वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद भी, सीमेंट और मैक्सफाल्ट की आपूर्ति के लिये विभिन्न संस्थाओ को दिये गये ₹5.61 करोड़ रुपये के अग्रिम भुगतान को मार्च 2022 तक समायोजित किया जाना शेष था।

(प्रस्तर 2.1.7.1 से 2.1.7.8)

राज्य में 12 प्रतिशत मंडी समितियों में प्रमुख मंडी स्थल निर्मित नहीं थे। बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थानीय किसानों को स्थानीय स्तर पर उत्पाद बेचने की सुविधा प्रदान करने के लिये निर्मित 133 ग्रामीण अवसंरचना केन्द्रों (रिन) में से अगस्त 2023 तक केवल 20 प्रतिशत ही क्रियाशील थे। इसके अतिरिक्त, किसानों को अपनी कृषि उत्पाद बेचने के लिये स्थानीय बाजार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 2011-12 से 2014-15 के मध्य निर्मित 1,643 कृषि विपणन केन्द्रों (एएमएच) में से जनवरी 2024 तक 29 प्रतिशत एएमएच अक्रियाशील

रहे। इसके अतिरिक्त, नमूना जांच की गई 21 मंडी समितियों के मंडी स्थलों में 309 दुकानें दिसंबर 2023 तक रिक्त थीं, जिनमें से 223 दुकानें संबंधित मंडी समितियों को हंस्तान्तरित किये जाने के बाद से कभी आवंटित नहीं की गई।

(प्रस्तर 2.1.10.1 से 2.1.10.7)

परिषद ने समुचित संभाव्यता का अध्ययन किए बिना परियोजनाएं प्रारम्भ कीं जिसके परिणामस्वरूप आधारभूत संरचना निष्क्रिय रही, जैसे कि नोएडा में पुष्प मंडी पर ₹39.60 करोड़ रुपये व्यय किए गए, जो इसके पूर्ण होने के 15 वर्ष बाद भी क्रियाशील नहीं हुई तथा कन्नौज के ठठिया मंडी स्थल में आलू प्रसंस्करण इकाई को ₹11.71 करोड़ रुपये व्यय करने के बाद बीच में ही बंद कर दिया गया (मार्च 2017)।

(प्रस्तर 2.1.11.1 से 2.1.11.3)

खेल विभाग की गतिविधियाँ

खेल विभाग की गतिविधियों पर निष्पादन लेखापरीक्षा वर्ष 2016-22 की अवधि को आच्छादित करते हुये सम्पादित की गयी। महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा निष्कर्ष का विवरण निम्नवत वर्णित हैं:

खेल विभाग ने वर्ष 2016-22 के मध्य खेल अवस्थापनाओं के संवर्धन हेतु 56 कार्यों को क्रियान्वित किया। शासनादेश (सितंबर 2013) का उल्लंघन करते हुए, इन कार्यों को नामांकन के आधार पर कार्यदायी संस्थाओं को प्रदान किया। कार्यदायी संस्थाओं के साथ समझौता ज्ञापन निष्पादित नहीं किए गए, जिसके कारण खेल विभाग के पास निर्माण में विलम्ब के कारण परिनिर्धारित क्षतिपूर्ति लगाने का अधिकार नहीं था। इसके अतिरिक्त परियोजनाओं को व्यवहार्यता प्रतिवेदन के बिना स्वीकृति दी गयी। नमूना जाँच किये गये जनपदों में अत्यधिक निवेश के पश्चात् निर्मित कई खेल अवस्थापनायें अप्रयुक्त पड़ी थीं, जिनमें से कई को मरम्मत और रखरखाव की आवश्यकता थी। खेल विभाग ने खेल अवस्थापनाओं की मरम्मत और रखरखाव के बारे में कोई नीति नहीं बनायी।बजटीय संसाधन तर्कसंगत रूप से आवंटित नहीं किए गए, जिससे बड़ी बचत हुयी जबकि सुविधाएं धन के अभाव के कारण प्रभावित हुयीं।

(प्रस्तर 2.2.7 और 2.2.8.1 से 2.2.8.5)

राज्य में तीन स्पोर्ट्स कॉलेज हैं जो पूरी तरह से खेल विभाग द्वारा वित्तपोषित हैं और उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अंतर्गत कक्षा छह से कक्षा 12 (मानविकी स्ट्रीम) तक शिक्षा प्रदान करते हैं। लेखापरीक्षा में पाया गया कि वर्ष 2016-22 के मध्य इन कॉलेजों द्वारा स्वीकृत क्षमता से 26 से 46 प्रतिशत के कम उपयोग किया गया। इन कॉलेजों में शैक्षणिक विषयों के पढ़ाने हेतु शिक्षक स्वीकृत क्षमता के अनुसार उपलब्ध नहीं थे।

(प्रस्तर 2.2.9 और 2.2.9.1 से 2.2.9.4)

खेल विभाग विभागीय प्रशिक्षकों और अंशकालिक प्रशिक्षकों की सेवाओं का उपयोग करके खेल छात्रावासों, स्पोर्ट्स कॉलेज और प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से उभरते खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। यद्यपि विभाग प्रशिक्षकों की कमी को प्रभावी ढंग से दूर नहीं कर सका। वर्ष 2016-22 के मध्य स्थायी और अंशकालिक प्रशिक्षकों में रिक्तियां क्रमशः 33 से 38 प्रतिशत और 13 से 60 प्रतिशत थीं। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा प्रशिक्षित किए जा रहे खिलाड़ियों के बारे में संकलित डेटाबेस का रखरखाव नहीं किया जा रहा था, जिससे संसाधनों का आवश्यकता-आधारित आवंटन नहीं हो पा रहा था।

(प्रस्तर 2.2.10.1 और 2.2.12.1)

खेल विभाग ने खिलाड़ियों की पोषण स्तर का मूल्यांकन करने हेतु कोई तंत्र विकसित नहीं किया। शासन ने (अक्टूबर 2020) कैलोरी की खेल विशेष आवश्यकताओं पर विचार किए बिना आहार सूची को लागू किया। इसके अतिरिक्त, खेल विभाग ने प्रशिक्षकों और खिलाड़ियों के बीच डोपिंग के संबंध में जागरूकता हेतु कोई कदम नहीं उठाया।

(प्रस्तर 2.2.10.3 और 2.2.10.4)

राष्ट्रीय खेल नीति 2001 के अनुसार खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने हेतु प्रयास किए जाएंगे। यद्यपि प्रशिक्षण शिविर में महिला खिलाड़ियों की भागीदारी कम थी, साथ ही महिला प्रशिक्षकों की भी कमी थी।

(प्रस्तर 2.2.11.2)

खेल विभाग और खेल संघों के बीच समन्वय की कमी थी।

(प्रस्तर 2.2.11.3)

उत्तर प्रदेश में दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना का कार्यान्वयन

क्या दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (डीडीयू-जीकेवाई) को प्रभावी ढंग से एवं दिशानिर्देशों के अनुरूप लागू किया गया था, इसका आकलन करने के लिए उत्तर प्रदेश में डीडीयू-जीकेवाई के कार्यान्वयन पर एक निष्पादन लेखापरीक्षा, अप्रैल 2016 से मार्च 2022 तक की अवधि को अच्छादित करते हुए आयोजित की गई। महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा निष्कर्षों का विवरण निम्नवत है:

प्रभावी आयोजना के लिए कौशल अंतर आंकलन एवं श्रमिक बाजार का अध्ययन, राज्य परिप्रेक्ष्य कार्यान्वयन योजना को तैयार करना तथा युवा स्तर डेटा बेस के सृजन जैसी गतिविधियाँ नहीं की गयीं थीं। लेखापरीक्षा में आच्छादित छह वर्षों की अवधि में प्रशिक्षण एवं नियोजन के लक्ष्यों की प्राप्ति में 15 प्रतिशत से 76 प्रतिशत तक की कमी थी।

(प्रस्तर 2.3.6.1, 2.3.8.1 और 2.3.9.1)

लेखापरीक्षा में ग्रामीण युवाओं के प्रशिक्षण के लिए परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों से प्रस्ताव के लिए अनुरोध (आरएफपी) आमंत्रित करने की अधिसूचनाओं में विलम्ब एवं परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) के निष्पादन में विलम्ब पाया गया। इसके अत्तिरिक्त, संबंधित परियोजनाओं में शून्य नियोजन के लिए दिशानिर्देशों के अनुसार परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों के विरुद्ध समय पर कार्यवाही न करके उनको अनुचित लाभ पहुंचाया गया था। संदिग्ध/संदेहास्पद नियोजन एवं नियोजन के अनुसमर्थन में संदिग्ध बैंक खाता विवरणों का उपयोग, योजना के अंतर्गत परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा किए गए नियोजन के दावों पर चिंता का कारण थे|

(प्रस्तर 2.3.9.2 से 2.3.9.8, 2.3.11.3 और 2.3.11.4)

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन (यूपीएसडीएम) को राज्य में योजना के कार्यान्वयन का दायित्व सौंपा गया था। यूपीएसडीएम द्वारा उपलब्ध कराये गए आंकड़ों के अनुसार, नमूना जांच की गयी 28 परियोजनाओं में से 19 परियोजनाओं के द्वियमासिक निरीक्षण में यूपीएसडीएम द्वारा 57 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक तथा तकनीकी सहायता एजेंसी द्वारा निरीक्षण में 22 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक की कमी पाई गयी।

(प्रस्तर 2.3.12.1)

लेखापरीक्षा प्रस्तर

कृषि शिक्षा और अनुसंधान विभाग

कार्यक्षेत्र की व्यापकता के निर्धारण में शिथिलता, विभागीय स्तर पर धनराशि निर्गत करने में विलम्ब तथा निर्माण कार्य प्रारंभ होने से पहले कार्यदायी संस्था द्वारा तकनीकी स्वीकृति प्राप्त करने में विफलता के परिणामस्वरूप कृषि अभियान्त्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधूरे निर्माण पर ₹ 54.80 करोड़ का निष्फल व्यय हुआ, परिणामस्वरुप परियोजना का वांछित उद्देश्य प्राप्त नहीं हो सका।

(प्रस्तर 3.1)

आवास एवं शहरी नियोजन विभाग

मांग सर्वेक्षण के बिना स्व-वित्तपोषित योजना के अन्तर्गत 680 फ्लैटों के निर्माण करने के आवास एवं विकास परिषद के अविवेकपूर्ण निर्णय के कारण, 488 फ्लैटों का निर्माण स्टिल्ट स्तर पर अधूरा छोड़ देने के परिणामस्वरूप परित्यक्त अपूर्ण संरचना पर ₹ 42.02 करोड़ का किया गया व्यय अलाभकारी हो गया।

(प्रस्तर 3.2)

चिकित्सा शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग

गृह कर के बकाया पर ब्याज के कारण बाबा राघव दास चिकित्सा महाविद्यालय, गोरखपुर द्वारा ₹ 81.30 लाख रुपये का परिहार्य भुगतान किया गया था।

(प्रस्तर 3.3)

चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

राज्य सरकार दिसंबर 2016 में भवन निर्माण के बावजूद डॉ. राम मनोहर लोहिया पुरुष अस्पताल, फर्रुखाबाद में प्लास्टिक सर्जरी और बर्न यूनिट के संचालन हेतु मानव संसाधन उपलब्ध नहीं करा सकी, जिसके परिणामस्वरूप भवन के निर्माण और उपकरणों/साज-सज्जा की खरीद पर ₹ 1.96 करोड़ रुपये का अलाभकारी व्यय हुआ।

(प्रस्तर 3.4)

कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाएं विभाग

विभागीय शिथिलता एवं कार्यदायी संस्था की निष्क्रियता के कारण, केंद्रीय कारागार, बरेली में स्थापित मोबाइल फोन जैमरों को पावर बैकउप प्रदान करने हेतु स्थापित सौर ऊर्जा आधारित बैकअप प्रणाली के पांच वर्षों के बाद भी अक्रियाशील रहने के कारण प्रणाली को बैकअप प्रदान करने का उद्देश्य विफल रहा। अतः बैकअप प्रणाली की स्थापना पर किया गया ₹ 1.95 करोड़ का व्यय अलाभकारी हो गया।

(प्रस्तर 3.5)

प्राविधिक शिक्षा विभाग

शासकीय पॉलिटेक्निक में सात महिला छात्रावासों को उनके हस्तांतरण के दो से चार वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो जाने के उपरांत भी क्रियाशील नहीं किया जा सका। इसके अतिरिक्त, इनकी स्वीकृति के सात साल से अधिक समय व्यतीत हो जाने के उपरांत भी, तीन पूर्ण हो चुके छात्रावास अभी भी हस्तांतरित नहीं किये जा सके और एक छात्रावास का निर्माण अभी भी अपूर्ण है, जिसके कारण इनके निर्माण पर किया गया ₹ 21.22 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा।

(प्रस्तर 3.6)

हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग के लिए भवन निर्माण कार्य पर किए गए ₹ 8.37 करोड़ का व्यय पर्याप्त निधि निर्गत करने में विलंब के कारण अलाभकारी रहा, जिसके परिणामस्वरूप दिसंबर 2021 से कार्य रोक दिया गया।

(प्रस्तर 3.7)

नगर विकास विभाग

नगर पंचायत, उस्का बाजार, सिद्धार्थनगर ने नगर पंचायत की पूर्ण रूप से स्वामित्व न रखने वाली भूमि पर व्यावसायिक दुकानों का निर्माण प्रारम्भ किया, जिसके कारण जिला पंचायत, सिद्धार्थनगर के साथ विवाद उत्पन्न हुआ और सात वर्ष से अधिक समय व्यतीत होने के बाद भी निर्माण पूरा नहीं किया जा सका, जिसके परिणामस्वरूप अपूर्ण व्यावसायिक दुकानों पर ₹1.36 करोड़ का अलाभकारी व्यय हुआ।

(प्रस्तर 3.8)

वित्तीय नियमों और कान्हा पशु आश्रय योजना के दिशानिर्देशों का उल्लंघन करते हुए, नगर पालिका परिषद, सिसवा बाजार, महाराजगंज और नगर पंचायत, उस्का बाजार, सिद्धार्थनगर ने निर्विवाद भूमि की उपलब्धता सुनिश्चित किये बिना पशु आश्रय गृहों का निर्माण प्रारम्भ कर दिया, जिसके कारण ₹ 96.63 लाख व्यय होने के बाद निर्माण कार्य रोक दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप छह वर्ष से अधिक समय तक इन निर्माण कार्यों पर किया गया व्यय अलाभकारी रहा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

(प्रस्तर 3.9)

मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय में छह वर्ष से अधिक समय से परित्यक्त पड़े हुए भव्य पंडाल के अधूरे निर्माण पर किया गया ₹ 4.91 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा।

(प्रस्तर 3.10)

नगर निगम लखनऊ वर्ष 2008 में प्रारम्भ हुए शूटिंग रेंज के निर्माण कार्य को पूरा करने में विफल रहा, जिसके परिणामस्वरूप अपूर्ण शूटिंग रेंज पर ₹ 18.61 करोड़ का अलाभकारी व्यय हुआ।

(प्रस्तर 3.11)

व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग और अल्पसंख्यक कल्याण एवं वक्फ विभाग

बलरामपुर जिले में कटरा शंकर नगर, तुलसीपुर और श्री दत्त गंज में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) का निर्माण कार्य भूमि प्रदान करने में देरी और निर्माण के लिए आवश्यक अनुमानित निधि की मंजूरी सुनिश्चित किए बिना काम शुरू करने के कारण इसकी स्वीकृति के ग्यारह वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद भी पूरा नहीं किया जा सका। इस प्रकार, अपूर्ण आईटीआई भवनों पर किए गए ₹ 10.76 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा।

(प्रस्तर 3.12)



लोकहितार्थ सत्यानिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी की वार्षिक प्रगति

राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न (क, ख, एवं ग) क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के लिए हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्यालय निरंतर प्रयासरत है। हम राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी पत्राचार, हिन्दी टिप्पणी एवं हिन्दी में किए जाने वाले अन्य कार्यों हेतु प्रदत्त लक्ष्यों की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। वर्ष 2025-26 के दौरान कार्यालय द्वारा किए गए पत्राचार में हिन्दी की भागीदारी करीब 97.93 प्रतिशत रही तथा कार्यालय में हिन्दी टिप्पणी का योगदान लगभग 98.32 प्रतिशत रहा।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का भी नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है। प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठकों में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए तथा उनका अनुभाग स्तर से अनुपालन भी सुनिश्चित किया गया।

इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार कार्यालय प्रमुख द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप हिन्दी अनुभाग द्वारा कार्यालय के विभिन्न अनुभागों का निरीक्षण किया गया एवं हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सुझाव भी प्रेषित किए गए।

राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा पत्र लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएँ/ क्विज प्रतियोगिताएं आदि आयोजित की जाती हैं। हिन्दी पखवाड़े को कार्यालय में उत्सव का स्वरूप प्रदान करते हुये कार्यालय के कार्मिकों की सहभागिता ऊर्जा प्रदान करने वाली होती है। पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किया जाता है।

उपरो क्त के अतिरिक्त, कार्यालय में हिन्दी की प्रगति सुनिश्चित करने हेतु मुख्यालय स्तर से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुरूप कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है। 'क' क्षेत्र से संबन्धित होने के कारण हिन्दी की प्रगति में इस कार्यालय का उत्तरदायित्व और भी वृहद है तथा इसके निर्वहन हेतु हम सभी निरंतर प्रयासरत भी हैं।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 2

कार्मिकों की अभिव्यक्ति

श्रद्धांजलि

"एक था कर्मयोगी"



पंकज श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कुछ लोग दुनिया में सिर्फ जीने के लिए नहीं आते, बल्कि अपने कर्मों से दूसरों के जीवन को रोशन करने आते हैं। दीपक श्रीवास्तव जी एक ऐसी ही शख्सियत थे, जिनका पूरा जीवन कर्मठता, निश्छल मित्रता और सेवाभाव की एक जीवंत मिसाल था।

वर्ष 2026 की जुलाई 17 की मनहूस रात्रि 9 बजे जब मैं खाना खा रहा था कि अचानक मेरे एक विभागीय मित्र ओर पड़ोसी का फोन आया कि दीपक सर को गंभीर हालत में हॉस्पिटल ले जाया गया है और उनकी स्थिति बहुत ही क्रिटिकल है, सहसा तो बहुत ही अविश्वसनीय लगा फिर विभिन्न सूत्रों से जब पता किया तो जो खबर मिली उससे न सिर्फ गहरा मानसिक आघात लगा बल्कि दिमाग शून्य सा हो गया दिल में अजीब सा खालीपन महसूस होने लगा। एक कर्मयोगी अपने कर्तव्यों की इतिश्री करके हम सबसे कहीं दूर कहीं बहुत दूर जा चुका था और शेष रह गयी थीं स्मृतियों में चलचित्र की तरह अलटती पलटती उसकी विभिन्न आकृतियां।

जब वे हमारे बीच थे, तो उन्होंने हर रिश्ते को पूरी शिद्दत से निभाया एक ऐसे सहकर्मी के रूप में जिन्होंने काम को ही अपनी पूजा माना, और एक ऐसे मित्र के रूप में जो हर सुख-दुख में ढाल बनकर खड़े रहे। उनकी सबसे बड़ी खूबी उनका विशाल हृदय और सबको साथ लेकर चलने की कला थी। उन्होंने न केवल अपने पड़ोस को, बल्कि अपने कार्यालय से जुड़े सैकड़ों परिवारों को स्नेह और अपनत्व के एक अटूट सूत्र में बांधकर रखा था। वे केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक ऐसा बरगद थे जिसकी छांव में हर कोई खुद को सुरक्षित और एक परिवार का हिस्सा महसूस करता था। आज वे शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके जोड़े हुए न्याय विहार के सैकड़ों परिवार, उनकी बेबाक मुस्कान और उनकी यादें आज भी हमारे दिलों में सांस ले रहे हैं।



स्व. दीपक कुमार श्रीवास्तव

"कार्यालय की चौखट पर कदम रखते ही उनकी ऊर्जा देखने लायक होती थी। उनके लिए काम सिर्फ एक नौकरी नहीं, बल्कि एक साधना थी। जब भी कोई काम मुश्किल नजर आता, वे अपनी चिरपरिचित मुस्कान के साथ कहते 'चलो मिलकर करते हैं, रास्ता निकल आएगा।' वे सिर्फ टारगेट पूरे नहीं करते थे, बल्कि काम के तनाव भरे माहौल को भी खुशनुमा बना देते थे। उनकी सबसे जादुई खूबी थी लोगों को जोड़ना।

वे किसी एक घर के नहीं, बल्कि पूरे समाज के मुखिया जैसे थे। कार्यालय के सहकर्मी हों या पड़ोस के लोग, उन्होंने सैकड़ों परिवारों को सुख-दुख के एक ऐसे धागे में पिरो दिया था कि हर कोई खुद को एक बड़े संयुक्त परिवार का हिस्सा मानता था। किसी के घर में शादी हो या कोई विपत्ति, दीपक सर सबसे आगे खड़े मिलते थे। एक पड़ोसी और मित्र के रूप में उनका होना ऐसा था, जैसे तपती धूप में बरगद की छांव। उनकी खिड़की से आती रोशनी और उनके घर का खुला दरवाजा हमेशा यह अहसास कराता था कि कोई अपना पास ही खड़ा है। वे हर त्योहार की रौनक थे और हर शांत शाम की महफिल। उन्होंने कभी सीमाओं को दीवार नहीं बनने दिया, बल्कि दिलों के रास्ते हमेशा खुले रखे।

वक्त का पहिया घूम गया और वे असमय हमसे दूर चले गए। लेकिन एक कर्मयोगी कभी मरता नहीं है। आज भी जब कार्यालय में कोई चुनौती आती है या पड़ोस में कोई उत्सव होता है, तो उनकी कमी शिद्दत से महसूस होती है। वे हमारे आंसुओं में नहीं, बल्कि हमारे चेहरों की उस मुस्कान में जिंदा हैं जो उन्होंने हमें दी थी। "एक सच्चे मित्र, समर्पित विभागीय सहयोगी और आत्मीय पड़ोसी दीपक कुमार श्रीवास्तव वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी के यह संस्मरण उनके उसी अनुकरणीय जीवन को एक विनम्र श्रद्धांजलि है। आइए, उनकी यादों के इन पन्नों को पलटें और उस कर्मयोगी को अपने शब्दों में फिर से जीवंत करें।"

सोशल मीडिया के माध्यम से उनके प्रति समर्पित कुछ पुष्प हैं जो यहाँ शेयर किये जा रहे हैं-

उनका असमय चले जाना एक बहुत बड़ी क्षति है, और यह विश्वास करना कठिन है कि वह अब हमारे साथ नहीं होंगे। उनकी कमी में ऑफिस अब पहले जैसा कभी महसूस नहीं होगा।

-डा. लोकेश चौधरी

मै तो दीपक सर से 1985 से जुड़ा था जब यह मेरे भाई से ट्यूशन पढ़ने आते थे। क्लास 11 में थे तब। तब से चेहरे पर हमेशा मुस्कान और शांति ही दिखती थी और आज खुद शांत हो गए। एक हरफनमौला शख्स हम सब को छोड़ कर चला गया। क्या क्या बातें लिखूं मेरे ऊपर तो हमेशा उनका स्नेह रहा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

-महेश प्रसाद श्रीवास्तव

दीपक सर का असामयिक निधन अत्यंत दुःखद एवं हृदय विदारक है। उनका निधन हमारे कार्यालय के लिए अपूरणीय क्षति है।

-विनोद वर्मा

दीपक जी के जाने से ऑफ़िस का हर व्यक्ति व्यथित है और और उसके लिए यह व्यक्तिगत क्षति जैसी है। ऑफ़िस में लगभग हर व्यक्ति उनके सहयोग का लाभार्थी रहा है। फिर भी सबसे बड़ी क्षति तो ऑफ़िस के लिए है जहाँ उनके न रहने से एक शून्य सा हो जाएगा।

-उपेन्द्र तिवारी

दीपक सर का अचानक चले जाना अचंभित कर गया। ऐसा व्यक्ति जो हमेशा अपनी हंसी मजाक वाले स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे। हर कठिन परिस्थिति को हल्का बनाने में कोई जवाब नहीं था। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा दुख के इस पहाड़ को सहने की क्षमता परिवार को प्रदान करें।

-अजय भट्ट

हम सभी के प्रिय, कर्तव्य निष्ठ, सरल, हसमुख एवं मिलनसार व्यक्तित्व श्री दीपक सर का आज आकस्मिक निधन हो जाना न केवल उनके परिवार बल्कि ए० जी० परिवार के सभी लोगों के लिए अत्यंत ही पीड़ादायक है क्योंकि लगभग हम सभी लोगों को उनके साथ कार्य करने, उनसे सीखने अथवा उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार का सान्निध्य प्राप्त हुआ है।

दीपक सर एक ऐसे अधिकारी थे जिन्होंने अपने कर्तव्यनिष्ठ आचरण, कार्य के प्रति समर्पण और उत्कृष्ट कार्यशैली से सदैव अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। वे हर दायित्व को पूरी निष्ठा, लगन और जिम्मेदारी के साथ निभाते थे। उनका कार्य केवल एक औपचारिक दायित्व नहीं था, बल्कि सेवा, प्रतिबद्धता और उत्कृष्टता का जीवंत उदाहरण था। उनका व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली था, उतना ही सहज और आत्मीय भी था। उनका सदैव मुस्कुराता हुआ चेहरा, विनम्र और हसमुख व्यवहार सभी को भाता था। वे अपने मित्रों और सहयोगियों के सुख-दुःख में समान रूप से सहभागी रहते थे। उनकी मिलनसारिता, सकारात्मक सोच और मानवीय संवेदनाएँ उन्हें एक उत्कृष्ट अधिकारी के साथ-साथ एक श्रेष्ठ इंसान भी बनाती थीं।

समाज के प्रति उनकी सकारात्मक सोच, सहयोग की भावना और मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सदैव प्रेरणास्रोत रहेगी। उनका अचानक इस प्रकार से चले जाना एक ऐसी अपूरणीय क्षति है जिसकी भरपाई संभव नहीं है। वे भले ही आज हमारे बीच शारीरिक रूप से उपस्थित न हों, किंतु उनकी कर्मनिष्ठा और उनकी मधुर स्मृतियाँ सदैव हमारे हृदयों में जीवित रहेंगी।

श्रेष्ठ व्यक्तित्व कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते वे प्रेरणादायी स्मृतियों के माध्यम से सदैव अमर रहते हैं।

-अजय कृष्ण मिश्र

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दीपक जी का जाना हम सभी और इस कार्यालय की अपूर्ण क्षति है

-पी के सिंह

नियति के अनुसार दीपक सर इस संसार से असमय चले गये हैं, परन्तु अपने व्यवहार एवं कार्यशैली के कारण हम सबके हृदय एवं स्मृतियों में सदैव जीवित रहेंगे

-संदीप श्रीवास्तव

दीपक सर एजी कार्यालय के हर व्यक्ति के आदर्श संरक्षक के रूप मे आगे बढ़ कर सहयोग करते थे, उनके समान अब कोई नहीं रहा अच्छे और सीधे लोगों की ईश्वर के यहां भी कमी है शायद, इसीलिए उनको भी अपने पास बुला लिया,

-एस बी कनौजिया

यह अविश्वसनीय है। कल एक स्वल्पाहार में हम कई लोग अपरान्ह चार बजे तक बैठे रहे जहां दीपक सर ने अपने ह्यूमर से माहौल को हमेशा की तरह हल्का बनाए रखा। यह कतई नहीं लग रहा था कि उन्हें किसी भी तरह की कोई दिक्कत है। परिवार और कार्यालय के लिए अपूरणीय क्षति।

-अनुज चतुर्वेदी

दीपक सर के जाने का दुख बहुत बड़ा है और इस पर यकीन करना वाकई मुश्किल है। वे हम सभी के लिए एक बड़ी प्रेरणा थे। उनकी कमी को कभी पूरा नहीं किया जा सकता।

-समीर शुक्ला

आदरणीय सर का निधन मेरे लिए केवल एक वरिष्ठ अधिकारी का नहीं, बल्कि एक ऐसे अभिभावक का बिछड़ना है जिन्होंने सदैव सौम्यता, सरलता और आत्मीयता के साथ मेरा मार्गदर्शन किया। उनका स्नेह, संरक्षण और प्रेरणा जीवनभर स्मरणीय रहेंगे।

-उदय प्रताप

कुछ व्यक्तित्व केवल अपने पद से नहीं, बल्कि अपने विचारों, कार्यशैली और मार्गदर्शन से एक स्थायी छाप छोड़ जाते हैं। हमारे लिए दीपक सर ऐसे ही व्यक्तित्व रहे। अब यह एहसास कि वे कार्यालय में नहीं दिखेंगे, मन को उदास कर देता है। कुछ लोगों की उपस्थिति ही कार्यस्थल को जीवंत बना देती है, और दीपक सर उन्हीं में से एक हैं। उनकी कमी केवल एक अधिकारी की नहीं, बल्कि एक ऐसे मार्गदर्शक की महसूस होगी, जिसने अपने ज्ञान, सादगी और सहज व्यवहार से अनेक सहकर्मियों को प्रेरित किया। हम सब उनके साथ बिताए गए इन पलों को हमेशा स्नेह और गर्व के साथ याद रखेंगे। उनके द्वारा दी गई सीख, उनका विश्वास और उनका मार्गदर्शन हमारे पेशेवर जीवन में सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

-राम कुमार मिश्रा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा



मेरी रोमांचक यात्रा: "लद्दाख फतह"



प्रेम कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हर यात्री के मन में कुछ सपने ऐसे होते हैं जो केवल देखे नहीं जाते, बल्कि जीए जाते हैं। मेरे लिए लद्दाख तक की बाइक से यात्रा ऐसा ही एक सपना था। वर्ष 2024 में 5 मई का वह दिन था, जब हम एलटीसी के तहत परिवार के साथ लदाख घूमने गये एवं 14 मई को यात्रा पूर्ण कर अपने घर प्रयागराज लौट आये। इस यात्रा में लदाख में पल-पल बदलते खूबसूरत नजारों के साथ ही वहां अपनी-अपनी बाइकों से उन नजारों का आनन्द उठा रहे बाइकर्स ने मुझे सबसे ज्यादा रोमांचित किया। पूरे 9 दिनों की यात्रा में ही मैंने यह तय कर लिया था कि एक न एक दिन मैं भी इन बाइकर्स की तरह अपनी बाइक से लदाख की इस रोमांचक यात्रा का अनुभव करूंगा। बस यहीं से मेरे मन में इस रोमांचक यात्रा के बीज/स्वप्न ने जन्म लिया और प्रयागराज आने के बाद से ही मैं उस सपने को वर्ष 2025 में पूर्ण करने की तैयारी में लग गया।

दो माह के विश्लेष्ण के बाद मैंने अपनी बाइक रॉयल एनफील्ड Meteor 350 ली और उसमें यात्रा के उद्देश्य से आवश्यक मॉडिफिकेशन भी करवाया। इसी बीच मैंने कार्यालय में अपने साथ चलने के लिए तलाश आरम्भ की लेकिन कोई नही मिला। इसी बीच हमारे साथी श्री सुमित चक्रवर्ती, सेवानिवृत पर्यवेक्षक से चर्चा के दौरान यह पता चला कि वे भी ऐसी ही रोमांचक यात्रा पर जाना चाहते हैं, लेकिन कोई साथ नही मिलने के कारण नही जा पा रहे थे। बस फिर क्या था, अब इस सपने को पूरा करने के लिए हम एक से दो हो चुके थे और हम दोगुनी तेजी से तैयारी में जुट गये।

फिर धीरे धीरे समय बीतने लगा और वर्ष 2026 आ गया, नव वर्ष में सुमित चक्रवर्ती से वार्ता के बाद यह तय हुआ कि दिनांक 31 मई 26 को उनकी सेवानिवृत के बाद 6 जून को अपनी इस रोमांचक यात्रा का आरम्भ किया जायेगा। अंततः 6 जून 2026 को वह दिन आ ही गया जब प्रयागराज की पावन धरती से मैंने अपनी रॉयल एनफील्ड Meteor 350 एवं सुमित ने पल्सर 150 पर लद्दाख फतह करने के संकल्प का आरम्भ किया।

मेरे अजीज दोस्त का मेरे घर पहुंचते ही 5 जून रात 12 बजे के बाद 6 जून की रात 1:00 बजे जब हमने घर से अपनी रॉयल एनफील्ड मीटियर 350 को स्टार्ट किया, तो मेरा लक्ष्य केवल रास्ते नापना नहीं था, बल्कि अपनी सीमाओं को पार करना भी था। हमारी यह यात्रा 19 जून को शाम 4 बजे अपने घर, प्रयागराज लौटकर पूर्ण हुई। लगभग दो सप्ताह तक चले इस रोमांचक अभियान में हमने उत्तर भारत के मैदानों से लेकर हिमालय की दुर्गम पर्वतमालाओं तक लगभग 4300 किलोमीटर की दूरी तय की और जीवन भर याद रहने वाले अनुभव को संजोया।



घर से निकलते ही हो रही रिमझिम बारिश से बचने के लिए प्रयागराज में पेट्रोल पर रुक गये

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

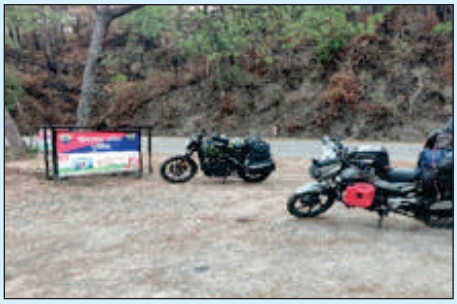
कहा जाता है कि यदि सफर मुश्किल हो, तो रास्ते और भी खूबसूरत हो जाते हैं। कुछ ऐसा ही जुनून हमारे सिर पर भी सवार था जब प्रयागराज की पावन धरती से मैंने अपनी रॉयल एनफील्ड Meteor 350 एवं मित्र ने पल्सर 150 पर लद्दाख फतह करने का संकल्प आरम्भ किया। कुछ यात्राएँ केवल दूरी तय नहीं करतीं, वे मनुष्य के भीतर छिपे साहस, धैर्य और जिजीविषा को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचा देती हैं। मेरी रोमांचक यात्रा "लद्दाख फ़तह" ऐसी ही एक अविस्मरणीय और रोमांचक यात्रा की यादें है। जिसने मुझे जीवन भर के लिए अनमोल अनुभव और अविस्मरणीय स्मृतियाँ प्रदान कीं। अपनी यात्रा के लगभग 4300 किलोमीटर लंबे इस सफर में हमने मैदानों से लेकर हिमालय की दुर्गम चोटियों तक प्रकृति के अलग-अलग रूपों को बहुत करीब से देखा। इस रोमांचक सफर ने मुझे प्रकृति, साहस और आत्मविश्वास के नए आयामों से भी परिचित कराया।

सफर के पहले दिन हम 6 जून की सुबह 1 बजे, जब पूरा शहर नींद में था, हम ईश्वर की आराधना करने के बाद अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रयागराज से निकल पड़े। सूर्योदय के साथ हम कानपुर पहुँचे और वहाँ होटल में 10 बजे तक सोने/ आराम करके करीब 12 बजे कानपुर में भोजन करने के बाद के बाद कन्नौज, एटा, अलीगढ़ होते हुए लगभग 575 km राइडिंग करते हुए रात 10.30 बजे बुलंदशहर होटल में पहुंच गये। इतनी लम्बी राइडिंग करने के बाद हम इतना थक चुके थे कि बाइक चलाते हुए होटल ढूढ़ते समय, जब दूर कोई हॉस्पिटल का बोर्ड भी दिखाई देता था तो हमें वह होटल ही समझ आता था, पास जाने पर समझ आता था कि वह हॉस्पिटल है। रात भोजन करने के बाद 11 बजे अगले दिन की यात्रा की वार्ता करते हुए कब गहरी नींद में चले गए पता ही नही चला, पूरी रात विश्राम के बाद भोर में अगले चरण की शुरुआत हुई।

सफर के दूसरे दिन 7 जून की सुबह 6 बजे बुलंदशहर से गाजियाबाद, दिल्ली, सोनीपत, कुरुक्षेत्र, चंडीगढ़ से होते हुए हम हिमाचल प्रदेश की ओर बढ़ने लगे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, वैसे-वैसे प्रकृति अपना स्वरूप बदलती गई। मैदानी इलाकों की चहल-पहल धीरे-धीरे पहाड़ों की शांत और रहस्यमयी दुनिया में बदलने लगी। पहाड़ों की ठंडी हवा और चारों ओर फैली हरियाली मानो आने वाले रोमांच का स्वागत कर रही थी।



सुबह 6 बजे बुलंदशहर होटल से निकलने की तैयारी में



शाम को जब हिमाचल प्रदेश की वादियों में प्रवेश किया

सुबह 6 बजे बुलंदशहर से निकलने के बाद हम दिल्ली-मनाली के चमचमाते हाईवे पर बाइक दौड़ाते और मंडी, कुल्लू के खूबसूरत नजारों का लुफ्त लेते हुए लगभग 592 km. राइडिंग करने के बाद रात 11.30 बजे पहाड़ों की रानी, मनाली पहुंचे। मनाली की सर्द हवाओं और ढलान वाले रास्तों ने रात ही हमे इस बात का इशारा कर दिया कि असली परीक्षा कल से शुरू होने वाली है। रात होटल में पहुंच कर भोजन करने के बाद पूरी रात विश्राम किये।

सफर के तीसरे दिन 8 जून: मनाली तक का सफर अपेक्षाकृत सहज था, लेकिन मनाली से आगे शुरू होती है वह दुनिया, जिसे बाइक से पहाड़ों की यात्रा करने वालों का स्वर्ग कहा जाता है। सुबह होटल में नाश्ता करने के बाद 11 बजे अपनी बाइकों को भी नहला-धुला कर हम अपनी यात्रा के सबसे रोमांचक और चुनौतीपूर्ण चरण ईश्वर का ध्यान करने के बाद आरम्भ करते है।



मनाली होटल में बाइक धुलने के बाद निकलने की तैयारी में



मानली से आगे बढ़ते ही अटल टनल के प्रवेश द्वार पर

मनाली-लेह मार्ग पर सबसे पहले हमने अटल टनल (10,040 फीट) पार किया। लगभग 9.02 km. लम्बी इस सुरंग में प्रवेश करते ही ऐसा महसूस हुआ, जैसे हम हिमालय की विशाल पर्वत के हृदय से होकर गुजर रहे हों। सुरंग की चमचमाती रौशनी, व्यवस्थित ट्रैफिक, राइड के दौरान सुरंग की दीवार से टकराकर सुनाई दे रही इंजन की गूंज एक अगल ही रोमांच का एहसास करा रही थी। अटल टनल को पार करते ही हिमालय का विराट स्वरूप और बदलता मौसम हर पल हमारे साहस की परीक्षा ले रहे थे। मनाली से लेह मार्ग पर सबसे पहला प्रमुख दर्रा (PASS) था बारालाचा ला (16,040 फीट)। यहाँ पहुँचते-पहुँचते हमें शाम हो गई।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहिताय सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

बर्फ से आच्छादित पर्वतों के बीच से गुजरती सड़कों पर चलते हुए हमें ऐसा लग रहा था, मानो वे हमें लद्दाख की ओर आमंत्रित कर रही थीं। लगभग 170 km. राइडिंग करने के बाद रात लगभग 9.30 बजे हम सरचू (14,070 फिट) कॉटेज में पहुंच गये। लद्दाख की धरती पर प्रवेश करते ही मन में एक अद्भुत उल्लास का संचार हुआ, लेकिन पहली बार हमे यहाँ हवा में ऑक्सीजन की मात्रा कम महसूस होने लगी और वहाँ हम दोनों को पहली बार सांस लेने में हल्की कठिनाई का अनुभव हुआ। सरचू में तापमान जीरो डिग्री और ठंड अत्यधिक होने के कारण भोजन के पश्चात हम तुरंत कॉटेज में कम्बलों के भीतर विश्राम करने चले गये।

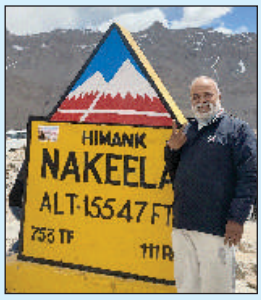
सफर के चौथे दिन 9 जून: सरचू में पहुंचने के बाद जब रात से ही हमें साँस की दिक्कत होने लगी, सुमित तो थोड़ी देर प्राणायाम करने के बाद ठीक हो गया जबकि मुझे ऐसा लगा जैसे हम पूरी रात सोये ही नही। फिर सुबह के 5 बज गये है और भोर हो गई है। हम कॉटेज से बाहर निकले तो पता चला कि अत्यधिक ठंड के कारण किसी भी नल में पानी नही आ रहा है। गर्म पानी लेकर किसी तरह से सुबह के नित्यकर्म निपटा कर, नाश्ता करने के बाद हम कॉटेज से निकलने को तैयार हो गए। रात में AMS (Accute Mountain Sickness) के कारण हमने सोचा कि कहीं आगे दिक्कत न हो, इसलिए कॉटेज में ही ठहरे एक अन्य बाइकर्स (जो मनाली से ही डबल सवारी में चल रहे थे) से बात करके उसे अपनी बाइक देकर मैं उसके साथ पीछे बैठ कर लेह की तरफ चल दिया। उन सभी के पास 350/ 450 सी सी की बाइक्स थीं इसलिए हम उनके साथ तेजी से आगे निकल गये। सुमित जी अपनी बाइक से लगभग 10.30 बजे सरचू से निकले।

सफर के आरम्भ में ही हमें हिमालय की वादियों में स्थित प्रसिद्ध गाटा लूप्स से होकर निकलना था। समुद्र तल से लगभग 15,300 फीट की ऊँचाई पर स्थित 21 तीखे घुमावदार मोड़ों की श्रृंखला के ये लूप्स हर बाइक यात्री के लिए रोमांच और चुनौती दोनों का प्रतीक हैं। इन घुमावदार मोड़ों पर बाइक चलाना किसी परीक्षा से कम नहीं था। लेकिन ऊपर पहुँचकर इन लूप्स का जो दृश्य दिखाई देता है, वह सारी थकान भुला देता है।



हिमालय की वादियों में स्थित प्रसिद्ध "गाटा लूप्स"





इसके बाद आया नकी ला (15,547 फीट) और फिर लाचुलुंग ला (16,616 फीट) दर्रा। आगे बढ़ते हुए हमने विशाल पठार मोरे प्लेन्स को पार किया। इस खूबसूरत रास्ते में हमें पहला स्नो फॉल, बारिश और तेज हवाओं का भी साथ मिला, जिसका इंतजार हम यात्रा के आरम्भ से ही कर रहे थे।इसके बाद इस मार्ग का सबसे ऊँचा दर्रा तंगलंग ला (17,582 फीट) आया।

यहाँ रुककर फोटोग्राफी करने के लिए उतरे तो आभास हुआ कि यहाँ पर ऑक्सीजन का स्तर इतना कम था कि थोड़ी देर खड़े रहने पर ही सिर भारी लगने लगता था। साँसें गहरी लेनी पड़ती थीं। यही वह क्षण था जब हमें उच्च हिमालयी क्षेत्रों का वास्तविक अनुभव हुआ। शाम को विशाल पर्वतों से घिरी लेह नगरी ने हमारा स्वागत किया, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक गरिमा के कारण किसी स्वर्ग से कम प्रतीत नहीं हो रही थी। यहाँ की



लेह में प्रवेश करते ही महाराजा सिंगे नामग्याल चौक का दृश्य

स्वच्छ हवा, शांत वातावरण और सरल जीवनशैली ने हमें गहराई से प्रभावित किया। लगभग 252 km. राइडिंग करने के बाद अंततः रात 8 बजे हम लेह (11,562 फीट) होटल में पहुँच गए। रात डिनर के बाद हमने पूरी रात विश्राम किया।

सुमित जी ने लेह होटल में पहुंच कर मुझे बताया कि जिन रास्तों में मेरे साथ रहने के कारण उनका मनोबल ऊँचा रहता था। सरचू से मेरे जल्दी निकल जाने के कारण अकेले हो जाने से उन्हें हर पल एक अनहोनी का डर लग रहा था। ऐसे मे उन्होंने अकेले ही ईश्वर का नाम जपते हुए इन कठिन रास्तों/पास को पार किया। मोरे प्लेंस में उन्हें तेज धूल की आंधी का सामना करना पड़ा। एक स्थान पर तो धूल का बवंडर इतना तेज और घना था कि उन्हें कुछ भी दिखना बंद हो गया। ऐसे मे उन्होंने बाइक सड़क के किनारे लगाकर, सारी लाईटें जलाकर, लगातार हार्न बजाने लगे, जिससे आगे से आने वाले वाहन आवाज़ सुनकर कम से कम अपनी रफ्तार और दिशा पर नियंत्रण कर लें।

अंततः वे शाम 8.30 बजे धीरे धीरे कठिनाइयों को पार करते हुए लेह पहुच गये। जहाँ मुझे अपना इंतजार करते देखते ही वे अंदर से भावविभोर हो उठे और उनका खोया हुआ आत्मविश्वास पुनः लौट आया।

सफर के पांचवें दिन 10 जून: लेह में होटल से परमिट बनवाने में थोडा विलम्ब हो जाने के कारण हम होटल में कुछ समय बिताने के बाद हमने खूबसूरत घाटियों में से एक, नुब्रा वैली/ हुन्डर (लदाख का कोल्ड डिजर्ट) का रुख किया। इस मार्ग पर दुनिया के सबसे प्रसिद्ध उच्च पर्वतीय दर्रों में से एक खारदुंग ला (लगभग 17,982 फीट) जैसे ऊँचे दर्रे को पार किया जो अपने आप में एक यादगार अनुभव था, जो हमारे अभियान की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक था।





इतनी ऊँचाई पर कम तापमान, तीव्र हवाएँ और ऑक्सीजन भी कम था। कुछ मिनट खड़े रहने पर ही सांसें उखड़ने लगती थीं। लेकिन चारों ओर फैली हिमालय की बर्फीली चोटियाँ उस कठिनाई को भुला देती थीं। फोटोग्राफी के बाद लेह से हुन्डर तक लगभग 170 km. का सफर तय करके हम रात 9 बजे कॉटेज में पहुच गये। यहाँ पर अन्य जगहों के अपेक्षाकृत ठंड बहुत कम थी। भोजन करने के बाद रात 10 बजे हम आराम करने चले गये।

सफर के छठवें दिन 11 जून को सुबह जल्दी उठकर 8 बजे नाश्ते के बाद हम हुन्डर में उस वैली की की खूबसूरती का आनन्द लेने निकल गये जहाँ पहुंचकर वहां की सुनहरी रेत, दो-कूबड़ वाले ऊँट और चारों ओर फैले भव्य पर्वतों ने हमारे मन में एक अमिट छाप छोड़ी। वहां रुककर हमने नजारों और फोटोग्राफी का आनन्द लिया और अपनी अगली मंजिल पैंगोंक लेक के लिए निकल पड़े। हमने श्योक घाटी के अद्भुत मार्ग से पैंगोंग झील की ओर राइडिंग की। श्योक नदी के किनारे-किनारे चलता यह रास्ता लद्दाख के सबसे सुंदर रास्तों में गिना जाता है। इस रास्ते का सफर किसी भी बाइकर्स के लिए एक अल्टीमेट एडवेंचर होता है। यह रास्ता कई जगह सीधा नदी के बीच से होकर गुजरता है, जहाँ पर बड़े-बड़े पत्थरों, कंकड़ और रेत पर बाइक को बैलेंस करना बहुत मुश्किल होता था। शाम को पैंगोंग लेक के करीब पहुँचते ही हमें सूखे पहाड़ों के बीच से अचानक गहरे नीले पानी की एक झलक दिखाई दी, जो हमारी थकान को एक पल में गायब कर देती है। क्योकि हम पैंगोंक लेक पहुंच चुके थे।





लगभग 14,270 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह झील प्रकृति की अनुपम कृति प्रतीत हो रही थी। पैंगोंक झील के पास पहुंचकर फ़िल्मी अंदाज में, बाइक को रोककर हेलमेट उतारना, ठंडी हवा को चेहरे पर महसूस करना और उस खूबसूरत नीले झील को देखना, यही वो पल होते हैं, जिसके लिए एक बाइकर हजारों km. का सफर तय करके लद्दाख आता है। करीब 200 km. का सफर करके हम शाम 8 बजे हम पैंगोंग झील के किनारे स्थित कॉटेज में पहुँचे। ठंड अधिक होने के कारण हम रात 9 बजे डिनर करने के बाद आराम करने चले गये।



सफर के सातवें दिन 12 जून: जब हम पैंगोंक लेक में सुबह सनराइज देखने के लिए उठे तो अत्यधिक बारिश और बादल से हमारा सामना हुआ, जिसके बाद हमने जाने का विचार बदल कर लेह जाने का निर्णय लिया। इसके बाद सुबह 9 बजे नाश्ते के बाद हमने बाइक पर लगेज रखने के बाद सबसे पहले स्नोफॉल और बारिश के बीच ही पैंगोंक लेक के किनारे-किनारे बाइक से उन खूबसूरत नजारों का आनन्द लेने के लिए स्पैन्मिक, मान से होते हुए मेरेक गाँव तक लगभग 30 km. तक गये और वहीं से वापसी करते हुए फिर से उन नजारों का आनन्द लेते हुए पैंगोंक लेक के आरम्भ तक आ गये। झील के किनारे बिताए गए क्षण पूरी यात्रा की सबसे अनमोल स्मृतियों में शामिल हैं।







उसके बाद लेह के रास्ते में हमने चांग ला (17,688 फीट) दर्रे को पार किया। सुबह की बारिश से इस दर्रे पर पहुंचने से पहले ही पूरे रास्तों में दोनों तरफ बर्फ सफेदी बिछी दिखाई दे रही थी यह नजारा इतना भव्य था कि हमें अपनी छोटी सी बाइक पर सफेद पहाड़ों के सामने अपने बहुत छोटे होने का अहसास हो रहा था। यहाँ पहुंचने के बाद ठंड, तेज़ हवाओं और कम ऑक्सीजन के कारण चलना भी चुनौतीपूर्ण महसूस हो रहा था। फिर लगभग 190 km. की राइडिंग करने के बाद हम रात 8 बजे हम लेह के होटल पहुँच गये।









सफर के आठवें दिन 13 जून को सुबह आराम से उठने के बाद नाश्ता करने के बाद स्थानीय यात्रा के लिए हम लोग होटल से सुबह 9 बजे निकल पड़ें। अज के दिन हमारी बाइक पर कोई सामान नही था, और कहीं भी पहुंचने की जल्दी नही थी। इसलिए नजारों का आनन्द लेते हुए हम आराम से बाइक राइडिंग करते हुए सबसे पहले हॉल ऑफ़ फेम, लेह सिटी व्यू, गुरुद्वारा पत्थर साहिब, मैग्नेटिक हिल, संगम व्यू पॉइंट से होते हुए रेंचो स्कूल देखते हुए हम शाम 7 बजे लेह होटल में पहुंच गए, उसके बाद रात 8 बजे डिनर करने के बाद पूरी रात आराम किये।

सफर के आठवें दिन 13 जून को सुबह आराम से उठने के बाद नाश्ता करने के बाद स्थानीय यात्रा के लिए हम लोग होटल से सुबह 9 बजे निकल पड़ें। अज के दिन हमारी बाइक पर कोई सामान नही था, और कहीं भी पहुंचने की जल्दी नही थी। इसलिए नजारों का आनन्द लेते हुए हम आराम से बाइक राइडिंग करते हुए सबसे पहले हॉल ऑफ़ फेम, लेह सिटी व्यू, गुरुद्वारा पत्थर साहिब, मैग्नेटिक हिल, संगम व्यू पॉइंट से होते हुए रेंचो स्कूल देखते हुए हम शाम 7 बजे लेह होटल में पहुंच गए, उसके बाद रात 8 बजे डिनर करने के बाद पूरी रात आराम किये।







सफर के दसवें दिन 15 जून को हमें श्रीनगर तक का लगभग 201 km. राइडिंग करके श्रीनगर पहुंचना था। सुबह हम कारगिल से रवाना हुए और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों, घुमावदार सड़कों तथा सिंधु और द्रास घाटी के मनमोहक दृश्यों का आनंद लेते हुए आगे बढे। सबसे पहले हम द्रास क्षेत्र से होकर गुज़रे, जहाँ की मिट्टी में देशभक्ति की खुशबू रची-बसी है। द्रास में हम कारगिल वॉर मेमोरियल देखने के लिए रुके। जिसे देखकर हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो गया। यह स्मारक 1999 के कारगिल युद्ध में देश की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त करने वाले भारतीय सैनिकों की स्मृति में बनाया गया है।





कारगिल युद्ध ऑपरेशन विजय में 545 भारतीय सैनिक शहीद हुए सैनिकों की वीरता और बलिदान की स्मृति में द्रास स्थित कारगिल वार मेमोरियल का निर्माण किया गया है। इसे भारतीय सेना द्वारा स्थापित और संरक्षित किया गया है। गुलाबी पत्थर से बने इस स्मारक पर शहीद सैनिकों के नाम अंकित हैं। यहाँ अमर जवान ज्योति, युद्ध में प्रयुक्त हथियारों और कारगिल युद्ध से संबंधित जानकारी का भी प्रदर्शन किया गया है। दूर दिखाई देने वाली टाइगर हिल और आसपास की पहाड़ियाँ युद्ध के ऐतिहासिक महत्व की याद दिलाती हैं। कारगिल वार मेमोरियल देशभक्ति, साहस और बलिदान का प्रतीक है। यहाँ आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के मन में भारतीय सैनिकों के प्रति सम्मान और गर्व की भावना उत्पन्न होती है।

इसके बाद हमारी यात्रा जोजिला दर्रे (11,575 फीट) तक पहुंची, जो जोजिला लद्दाख और कश्मीर को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण पर्वतीय दर्रा है। यहाँ की संकरी, घुमावदार सड़कें और ऊँचे पहाड़ बाइक यात्रा को रोमांचक बना देते हैं। जोजिला के निकट स्थित जीरो पॉइंट पर चारों ओर बर्फ से ढकी चोटियाँ और ठंडी हवाएँ यात्रियों को एक अलग ही अनुभव देती हैं। यहाँ कुछ समय रुककर हमने प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लिया और यादगार तस्वीरें खींचीं।





आगे बढ़ते हुए हम सोनमर्ग पहुँचे, जिसे "सोने का मैदान" भी कहा जाता है। हरे-भरे घास के मैदान, बर्फ से ढके पर्वत, बहती नदियाँ और देवदार के घने वृक्ष इसकी सुंदरता को और भी आकर्षक बनाते हैं। यह स्थान पर्यटकों के लिए अत्यंत लोकप्रिय है। सोनमर्ग से आगे का मार्ग अपेक्षाकृत आसान था। रास्ते में बहती सिंध नदी, सुंदर घाटियाँ और कश्मीर की मनमोहक वादियाँ यात्रा को और भी आनंददायक बना रहीं थी। शाम 8 बजे हम श्रीनगर स्थित बोटहाउस में पहुँच गए, 9 बजे डिनर के बाद विश्राम

अंततः वह दिन 16 जून भी आ ही गया जब हमें श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर की मनोहारी वादियाँ से विदा लेकर लगभग 1450 km. का सफर तय करके प्रयागराज की और प्रस्थान करना था। बोट हाउस में सुबह लगभग 9 बजे हमने अपनी अपनी बाइक को अपने सभी लगेज के साथ लोडेड किये और इस रोमांचक सफर में होटलों में हमारे बने नये साथियों से विदा लेने के बाद हमारी वापसी यात्रा का सबसे लंबा चरण आरम्भ हुआ। आज की राइडिंग में हिमालय की ठंडी हवाओं की जगह मैदानों की गर्मी और लंबी सड़कों ने स्थान ले लिया था, लेकिन हमारा मन अभी भी लद्दाख की वादियों में ही विचरण कर रहा था।

वापसी के पहले दिन हम श्रीनगर से लगभग 307 km. की राइडिंग के बाद शाम 8 बजे शहर से पहले ही एक होटल में पठानकोट, पंजाब पहुंच गये, रात 9 बजे भोजन किया और आपस में अपनी यादों को शेयर करने के बाद विश्राम किया। अगली सुबह 17 जून को हम सुबह 8 बजे नाश्ते के बाद अपनी अगली मंजिल की और निकल पड़े। रास्तों में हमें जहाँ एक ओर मैदान की गर्मी परेशान वहीं दूसरी ओर तेज बारिश ने राहत भी दी। लगभग 362 km. का सफर तय करके शाम 8 बजे करनाल, हरियाणा होटल में पहुंच गये। खाने का आर्डर देकर हमने कमरे में ही भोजन किया और डिनर के बाद विश्राम किया।



फिर अगले दिन 18 जून को सुबह 7 बजे ही निकल गये, क्योंकि आज हमें कुल 800 km का सफर तय करना था, जो कि असम्भव था लेकिन हम उसे तय करने के उद्देश्य से निकल पड़े और100 km. के सफर के बाद अपने उत्तर प्रदेश के मेरठ में प्रवेश कर गये। रास्ते में रुक-रुक कर पानी, चाय और स्नैक्स लेते हुए लगातार राइडिंग का आनन्द लेते रहे। हम मेरठ, बुलंदशहर, अलीगढ़ होते हुए शाम को एटा पहुंचे। अत्यधिक गर्मी में राइडिंग करने के कारण थकान बहुत हो गई थी और आगे चलने की हिम्मत भी नही हो रही थी। एटा से आगे हमने एक होटल में चाय नाश्ता करने के बाद लगभग 40 मिनट विश्राम किया और फिर 6.30 बजे शाम को एटा तक पहुच कर विश्राम करने का मन बनाकर फिर निकल पड़े। हम रथ करीब 8.30 बजे इतर की नगरी कन्नौज के होटल में पहुंचे। रात 9 बजे खाने का आर्डर देकर हमने भोजन किया और अपनी लगभग 475 km. की राइडिंग की थकान मिटाने के लिए आराम किया।

19 जून की सुबह होटल में नाश्ते के बाद सुबह 7 बजे इत्र की नगरी कन्नौज की खुशबू को समेटते हुए, लदाख सफर के आखिरी दिन हमने अपनी बाइक का रुख प्रयागराज की तरफ किया। लगभग 290 km. की राइडिंग के सफर के बाद शाम 4 बजे जब हमारी बाइक घर के सामने रुकी, तब मन में एक अद्भुत संतोष का भाव था एवं हमारी बाइक के ओडोमीटर पर हजारों किलोमीटर का लंबा, अद्भुत और रोमांचक सफर दर्ज हो चुका था। तब हमारे मन में केवल एक यात्रा पूरी करने की खुशी नहीं थी, बल्कि यह संतोष भी था कि 57 और 61 वर्ष की आयु में हमने हिमालय की उन ऊँचाइयों को छू लिया था, जिन्हें लोग अक्सर युवावस्था के साहसिक सपनों से जोड़ते हैं। सामान्यतः लोग इस उम्र में लंबी और दुर्गम मोटरसाइकिल यात्राओं से बचने की सलाह देते हैं, जो हमरे साथ भी हुआ, लेकिन हमारे लिए उम्र कभी बाधा नहीं बनी। लगभग 14 दिनों की इस यात्रा में हमने न केवल हजारों किलोमीटर की दूरी ही तय नहीं की, बल्कि जीवन के अनेक नए अनुभव भी अर्जित किए और स्वयं के नए रूप को भी जाना। "लद्दाख फ़तह" मेरे लिए केवल बाइक यात्रा नहीं थी, बल्कि अपने सपनों को जीने का एक अनुपम अवसर थी। इस सफर में हमने अनेक विश्वप्रसिद्ध पर्वतीय दर्रों को पार किया, ऑक्सीजन की कमी और कठिन मौसम का सामना किया तथा हिमालय की अद्भुत सुंदरता को निकट से महसूस किया। यह यात्रा केवल एक बाइक अभियान नहीं, बल्कि साहस, मित्रता और आत्मविश्वास का उत्सव थी, इन अनुभवों ने इस यात्रा को जीवन की अमूल्य धरोहर बना दिया। जिसकी स्मृतियाँ जीवन भर मेरे साथ रहेंगी।

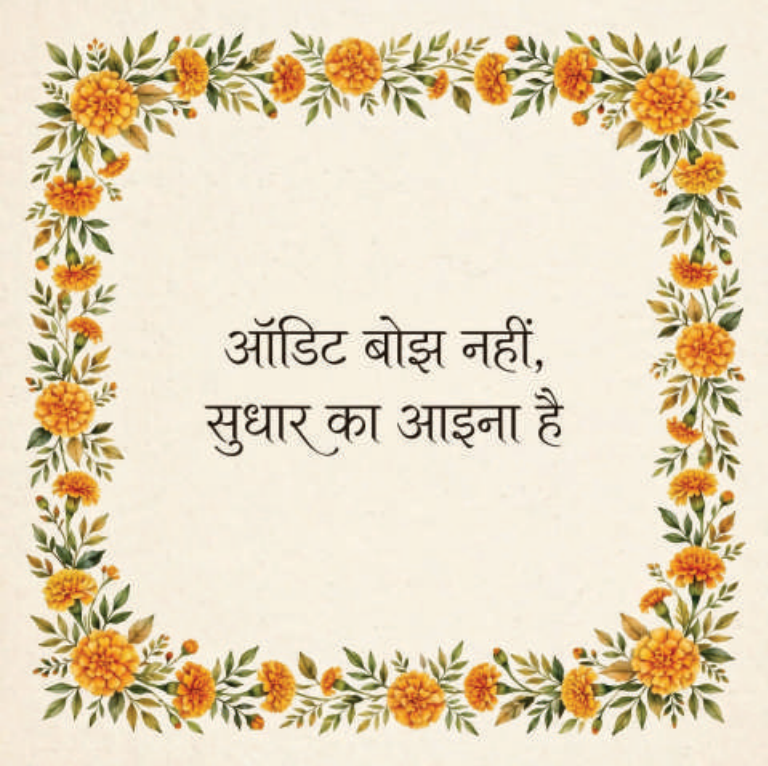
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest





सफर लम्बा है तो थकान भी जरुर होगी, कहीं धुप है तो कहीं छांव भी होगी।

यकीन बनाये रखना अपने हौसलों पर, कल की सुबह आज से बेहतर ही होगी।



कार्बन पेपर से क्लाउड तक...



मनोज कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

समय के साथ बदलता कार्यपरिवेश:

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। पिछले तीन दशकों में सरकारी कार्यालयों ने कार्बन पेपर, टाइपराइटर और मोटी फाइलों से क्लाउड, डिजिटल प्लेटफॉर्म, डेटा एनालिटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तक का उल्लेखनीय परिवर्तन देखा है। इस परिवर्तन का प्रत्यक्ष साक्षी बनने का सौभाग्य मुझे भी मिला।

अगस्त 1995 में संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली में शासकीय सेवा प्रारम्भ करने के दौरान तकनीक का स्वरूप आज से बिल्कुल भिन्न था। अभ्यर्थियों के कॉल लेटर और जॉइनिंग लेटर साइक्लोस्टाइल प्रपत्रों पर तैयार किए जाते थे। एक साथ कई प्रतियाँ निकालने के लिए छह-छह कार्बन पेपर लगाकर सावधानीपूर्वक टाइपिंग करनी पड़ती थी। इसके बाद पत्र डाक के माध्यम से भेजे जाते थे।

जुलाई 1996 में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश, प्रयागराज से जुड़ने पर यहाँ भी कार्यप्रणाली लगभग ऐसी ही थी। ऑडिट मेमो, पत्राचार तथा अन्य अभिलेख कार्बन पेपर की सहायता से अनेक प्रतियों में तैयार किए जाते थे। फाइलें, रजिस्टर और कागज़ ही कार्यालयी व्यवस्था की आधारशिला थे।

समय के साथ कंप्यूटर आए। Windows, MS Word और Excel ने कार्य करने का तरीका बदलना शुरू किया। फ्लॉपी से क्लाउड तक की यात्रा हमारी आँखों के सामने हुई। कभी कार्बन पेपर सीधा रखना एक कौशल था, आज सही प्रॉम्प्ट लिखना भी एक नई दक्षता बन चुका है।

कंप्यूटर के शुरुआती दिनों की एक बात आज भी मुस्कुराने पर मजबूर कर देती है। तब कई लोगों के मन में सबसे बड़ा डर यही होता था कि कहीं कोई गलत बटन दब गया तो लिखा हुआ मिट न जाए या कंप्यूटर ही खराब न हो जाए। आज वही पीढ़ी पूरे आत्मविश्वास के साथ लैपटॉप और डेस्कटॉप पर OIOS, e-Office, CAG-Connect, eHRMS तथा CAGHRMS जैसी डिजिटल प्रणालियों पर कार्य कर रही है। हम पूरी तरह पेपरलेस भले न हुए हों, लेकिन हमारा विभाग निरंतर उस दिशा में आगे बढ़ रहा है और नई तकनीकों को सकारात्मक रूप से अपना रहा है।

लेखापरीक्षा का स्वरूप भी बदल चुका है। आज Excel, Tableau, SQL, Python तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसी आधुनिक तकनीकें कार्य को अधिक प्रभावी बना रही हैं। डेटा विश्लेषण, जोखिम आधारित लेखापरीक्षा और डिजिटल कार्यप्रणाली भविष्य की दिशा निर्धारित कर रहे हैं। तकनीक अब सुविधा भर नहीं, बल्कि कार्यकुशलता की अनिवार्य आवश्यकता बनती जा रही है।

ऑडिट सप्ताह–2025 की एक कार्यशाला में मैंने कहा था कि सबसे बड़ी चुनौती तकनीक नहीं, बल्कि स्वयं को बदलने की मानसिकता है। उसी संदर्भ में माननीय नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा 2023 बैच के अधिकारियों के दीक्षांत समारोह में उद्धृत हॉलीवुड अभिनेता Denzel Washington का एक प्रेरक विचार साझा किया गया था—

"Without commitment, you'll never start. But more importantly, without consistency, you'll never finish."

"प्रतिबद्धता के बिना आप शुरुआत नहीं कर पाएँगे और निरंतरता के बिना अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच पाएँगे।"

यह संदेश आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। नई तकनीक सीखने का कोई शॉर्टकट नहीं है; निरंतर सीखना ही आगे बढ़ने का सबसे विश्वसनीय मार्ग है।

इसके साथ ही जिम्मेदारियाँ भी बढ़ी हैं। सूचना प्रौद्योगिकी तथा डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन (DPDP) अधिनियम ने डेटा सुरक्षा और गोपनीयता को प्रत्येक कर्मचारी की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बना दिया है।

नई पीढ़ी तकनीक के साथ सहज है और वरिष्ठ पीढ़ी अपने अनुभव से इस परिवर्तन को दिशा दे रही है। दोनों का यह समन्वय ही किसी भी संस्था की सबसे बड़ी शक्ति है।

जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो महसूस होता है कि हमने केवल तकनीक को बदलते नहीं देखा, बल्कि स्वयं को भी उसके साथ बदलना सीखा। कार्बन पेपर से क्लाउड तक की यह यात्रा यही सिखाती है कि समय किसी का इंतज़ार नहीं करता, लेकिन सीखना कभी नहीं रुकना चाहिए। माध्यम बदल गए हैं, पर हमारा उद्देश्य आज भी वही है—पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और राष्ट्रहित।

समय बदलता रहेगा, तकनीक भी बदलती रहेगी; पर सीखने की जिज्ञासा जीवित रही, तो हर बदलाव एक नया अवसर बन जाएगा।

v



महाभारत की गहन और प्रतीकात्मक व्याख्या- स्वयं को जानने की यात्रा



अशोक कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कुरूक्षेत्र केवल हरियाणा की भूमि नहीं, वह प्रत्येक मनुष्य का अंतर्मन है | महाभारत केवल इतिहास नहीं, यह हर क्षण हमारे भीतर घटित होने वाला सत्य है |

शास्त्रों का मानना है कि महाभारत के अठारह दिन के युद्ध में उस समय की पुरुष जनसंख्या के अस्सी प्रतिशत का सफाया हो गया था | युद्ध के अंत में संजय उस स्थान को देखने गए, जहाँ संसार का महानतम युद्ध हुआ था | वे इधर-उधर देखकर सोचने लगे कि क्या यह वही भूमि है, जहाँ वास्तव में युद्ध हुआ था | यदि ऐसा है तो यहाँ की जमीन रक्त से सराबोर होनी चाहिए ? फिर वे यह सोचने लगे कि क्या इसी भूमि पर महान पांडव और कृष्ण खड़े थे ?

संजय इन्हीं विचारों में डूबे थे कि अचानक एक वृद्ध व्यक्ति वहां प्रकट हुआ | उस वृद्ध व्यक्ति ने धीमे और शांत स्वर में कहा- आप उस बारे में वास्तविक सच्चाई कभी नहीं जान पायेंगे | संजय उस भगवा वस्त्रधारी वृद्ध को देखते रह गए | उसके चेहरे पर तेज था और वाणी में ओज |

"मुझे पता है कि आप कुरूक्षेत्र युद्ध के बारे में पता लगाने के लिए यहाँ आये हैं, लेकिन आप उस युद्ध के बारे में तब तक नहीं जान सकते, जब तक आप यह नहीं जान लेते हैं कि असली युद्ध क्या है?" बूढ़े आदमी ने रहस्यमय ढंग से कहा | तब संजय ने उस रहस्यमय व्यक्ति से पूछा-"तुम महाभारत का क्या अर्थ जानते हो ?"

तब रहस्यमय व्यक्ति ने बताना शुरू किया-"महाभारत एक गाथा मात्र नहीं है, एक वास्तविकता भी है; निश्चित रूप से एक दर्शन भी है |" संजय की उत्सुकता की भूख को शांत करने के लिए बूढ़े व्यक्ति ने बताना शुरू किया-

पांडव कुछ और नहीं, बल्कि आपकी पांच इन्द्रियां हैं; दृष्टि, गंध, स्वाद, स्पर्श और श्रवण | कौरव ऐसे सौ तरह के विकार हैं, जो आपकी इन्द्रयों पर प्रतिदिन हमला करते हैं | लेकिन आप उनसे लड़ सकते हैं और जीत भी सकते हैं |

संजय के यह पूछने पर कि हम उनसे कैसे जीत सकते हैं, वृद्ध व्यक्ति ने कहा-" जब कृष्ण आपके रथ की सवारी करते हैं |"

इतना कहकर वह वृद्ध व्यक्ति मुस्कराया | उसकी मुस्कराहट से संजय को नई दृष्टि मिल गई और उन्हें जिस नवीन रत्न की प्राप्ति हुई, वे उस पर विचार करने लगे |

"कृष्ण आपकी आतंरिक आवाज, आपकी आत्मा, आपका मार्गदर्शक प्रकाश हैं और जब आप अपने जीवन को उनके हाथों में सौंप देते हैं तो आपको फिर चिंता करने की आवश्यकता नहीं रह जाती |" वृद्ध आदमी ने कहा |

संजय तब तक लगभग चैतन्य अवस्था में पहुँच चुके थे | लेकिन शीघ्र ही उनके मन में यह जानने की उत्सुकता पैदा हुई कि फिर कौरवों के लिए द्रोणाचार्य और भीष्म क्यों लड़ रहे हैं ?

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सत्यनिष्ठा में समर्पित
Dedicated to Truth in Public Interest

भीष्म हमारे अहंकार का प्रतीक है, अश्वथामा हमारी वासनाएं और इच्छाएं हैं, जो कि जल्दी नहीं मरतीं | दुर्योधन हमारी सांसारिक वासनाओं, इच्छाओं का प्रतीक है | द्रोणाचार्य हमारे संस्कार हैं | जयद्रथ हमारे शरीर के प्रति राग का प्रतीक है कि 'मैं ये देह हूँ' का भाव | द्रुपद वैराग्य का प्रतीक है | अर्जुन मेरी आत्मा है, मैं ही अर्जुन हूँ और स्वनियंत्रित भी हूँ | कृष्ण हमारे परमात्मा हैं | पांच पांडव पांच नीचे वाले चक्र भी हैं, मूलाधार से विशुद्ध चक्र तक | द्रोपदी कुण्डलिनी शक्ति है, वह जागृत शक्ति है, जिसके पांच पति पांच चक्र हैं | ॐ शब्द ही कृष्ण का पांचजन्य शंखनाद है, जो मुझ और आप की आत्मा को ढाढस बंधाता है कि चिंता मत कर मैं तेरे साथ हूँ |

श्री कृष्ण का साथ पाते ही 72000 नाड़ियों में भगवान की चैतन्य शक्ति भर जाती है, और हमें पता चल जाता है कि मैं चैतन्यता, आत्मा, जागृति हूं, मैं अन्न से बना शरीर नहीं हूँ | इसलिए उठो, जागो और अपने आपको, अपनी आत्मा को, अपने स्वयं के सच को जानो | भगवान को पाओ, यही भगवद प्राप्ति या आत्म साक्षात्कार है, यही मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है |

यह शरीर ही धर्म क्षेत्र, कुरूक्षेत्र है | धृतराष्ट्र अज्ञान से अँधा हुआ मन है | अर्जुन आप हैं, संजय आपके आध्यात्मिक गुरु हैं |

वृद्ध आदमी ने दुःखी भाव के साथ सिर हिलाया और कहा, "जैसे जैसे आप बड़े होते हैं, अपने बड़ों के प्रति आपकी धारणा बदल जाती है। जिन बुजुर्गों के बारे में आपने सोचा था कि आपके बढ़ते वर्षों में वे संपूर्ण थे, अब आपको लगता है वे सभी परिपूर्ण नहीं हैं। उनमें दोष हैं। और एक दिन आपको यह तय करना होगा कि उनका व्यवहार आपके लिए अच्छा या बुरा है। तब आपको यह भी अहसास हो सकता है कि आपको अपनी भलाई के लिए उनका विरोध करना या लड़ना भी पड़ सकता है। यह बड़ा होने का सबसे कठिन हिस्सा है और यही वजह है कि गीता महत्वपूर्ण है।"

संजय धरती पर बैठ गये, इसलिए नहीं कि वे थक गए थे, बल्कि इसलिए कि वे जो समझ लेकर आये थे, वो एक एक कर धराशायी हो रही थी। लेकिन फिर भी उनहोंने लगभग फुसफुसाते हुए एक और प्रश्न पूछा, तब कर्ण के बारे में आपका क्या कहना है? "आह!" वृद्ध ने कहा। आपने अंत के लिए सबसे अच्छा प्रश्न बचाकर रखा हुआ है।

"कर्ण आपकी इंद्रियों का भाई है। वह इच्छा है। वह सांसारिक सुख के प्रति आपके राग का प्रतीक है। वह आप का ही एक हिस्सा है, लेकिन वह अपने प्रति अन्याय महसूस करता है और आपके विरोधी विकारों के साथ खड़ा दिखता है। और हर समय विकारों के विचारों के साथ खड़े रहने के कोई न कोई कारण और बहाना बनाता रहता है।"

"क्या आपकी इच्छा; आपको विकारों के वशीभूत होकर उनमें बह जाने या अपनाने के लिए प्रेरित नहीं करती रहती है?" वृद्ध ने संजय से पूछा।

संजय के अन्दर स्वीकार का भाव था | वे विचार श्रृंखला को क्रमबद्ध करके आत्ममंथन करने लगे | उन्होंने जब सिर उठाया, तब तक वह वृद्ध धूल के गुबारों के मध्य कहीं विलीन हो चुका था | लेकिन जाने से पहले उसने जीवन को नई दिशा दी, नया दर्शन दिया, जिसे आत्मसात करने के सिवा संजय के पास कोई विकल्प नहीं बचा था |

(यह मेरी मौलिक कृति है तथा अन्यत्र प्रकाशित नहीं हुयी है)

एक कारगिल ये भी



अम्बरीश श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

छात्र जीवन से नौकरी में स्विचओवर के अपने निहितार्थ हैं, पूरी स्वतंत्रता से बंधनयुक्त और अनुशासन के चाबुक से बंधी जिंदगी में प्रविष्टि एक बड़ा मिला-जुला सा एहसास देती है, असुरक्षा के दायरे से निकल पाने की अनुभूति निश्चिततः सुकून भरी होती है और इस चिर-प्रतीक्षित समाचार से माँ-पिता के चेहरे पर आने वाली ख़ुशी का कोई परिमाण नहीं हो सकता, ये भी सत्य है | इसमें श्रीवृद्धि होती है अपनी सामाजिक पहचान में नए आयाम जुड़ने की, जब किसी से आपका तार्रुफ करातेसमय आपके नाम के साथ सायास या अनायास ही प्रत्यय के रूप में 'जी' जोड़ दिया जाता है तो वाकई जी जुड़ा जाता है|

अब उन्मुक्त और कमोबेश स्वछन्द छात्र जीवन से सीधे और तुरंत ही औपचारिक शासकीय सेवा के दायित्वों से दो-चार होने की अपनी चुनौतियां हैं जिसके मजे भी हैं और मुश्किलें भी, मजे तब, जब आप केवल अपने विशेषाधिकार के बारे में सोचते हैं और मुश्किलों का स्थायित्व तो शाश्वत सच है ही, जैसे किसी नियमबद्ध दिनचर्या को फॉलो करना, कोई काम मिल जाये तो उसे किसी भयंकर संकट के बर-अक्स रख देना और उससे भी बुरा जब आपको आपकी जिम्मेदारियां असमय-ससमय याद दिलाई जाये परन्तु हम लोगों ने इस कठिनाई का वेहद व्यावहारिक और सरल मार्ग निकाल लिया था, अपनी सुविधा से ऑफिस आते-जाते, जो कुछ काम हमारे हवाले होता उसे फुर्ती से निपटा कर अपनी मूल दुनिया में पुनर्प्रविष्ट हो जाते और बंधन एवं बंधनमुक्तता में संतुलन और सामंजस्य बिठाते हुए उसका सम्पूर्ण आनंद उठाते, सच कहें तो कहावत 'दिन सोने के और रातें चांदी की' को धुआंधार जी रहे थे|

इसी मिश्रित अनुभूति में, जिसमे मस्ती का तत्व ही वायुमंडल में उपस्थित नाइट्रोजन के समानुपात में था, जीवन अपनी उत्सवधर्मिता के शीर्ष पर था, आम तौर पर ऑफिस के वरिष्ठ पूरा प्यार, समर्थन और गाइडेंस दिया करते थे, साथी-गण उल्लास के क्षणों को

कई-कई गुना बढ़ा देते थे और ऑफिस से घर आने के बाद तो जैसे हर्ष का पंछी लम्बी और ऊँची उड़ान पर निकल जाया करता था|

लेकिन जीवन इतना एकपक्षीय हो और अगर उसके मुख्य तत्त्व आनंद एवं उल्लास ही हो, ऐसी सततता भी नैसर्गिक नियमों की समर्थक नहीं हो सकती | मई या जून, 1999 का समय रहा होगा जब हम अपने पड़ोसी शत्रु देश के कायराना और भितरघाती कुकृत्य का दुष्परिणाम भुगतते हुए सरहद पर अपने जवानों के परिहार्य बलिदान के दुःख, क्षोभ और गुस्से से लबरेज थे, कुछ ऐसा घटा जिसने इन भावनाओं में समंदर में में शर्म जैसा अवयव भी घोल दिया|

तो हुआ कुछ यूँ कि हम हस्बे-मामूल ऑफिस आने के अपने अनियमित रूटीन में लापरवाही का चौकस तड़का लगाकर जब दाखिल-दफ्तर होने की स्वर्णिम घड़ी को प्राप्त करने वाले थे, काफी लोग लंच-अवकाश की तरफ तकरीबन अग्रसर हो चुके थे जिसका गालिबन हमने कोई खास नोटिस नहीं लिया और अपने अनुभाग की जानिब बढ़ चले, अनुभाग में आते ही पता चला कि आज तो अटेंडेंस रजिस्टर सुबह से हमारी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी महोदया, जो बेहद सम्मानित, मृदुभाषी और कर्मठ महिला थीं, ने अपने कक्ष में रखवा लिया था | अब मंजिल के इतना क़रीब पहुँच कर उससे अपने आपको महरूम कर लेना किसी भारी पाप से कम तो नहीं

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लगा हमें और हम मतलब, मैं और मेरे एक मित्र, मैडम के कमरे में प्रविष्ट हुए तो मैडम भी हमारी तरफ प्रश्नवाचक मुद्रा में मुखातिब हुई-जी कहिये, क्या सेवा की जाये आप लोगों की? कुछ चाहिए क्या?

जी मैम, वो ज़रा अटेंडेंस रजिस्टर में साइन करना था"

"हाँ-हां, क्यों नहीं बेटा, वो सामने टेबल पर रजिस्टर है, आप लोग साइन कर लीजिये, बस एक बात कहनी थी आप लोगों से?"

"जी मैम, ज़रूर"

"ये जो सीमा पर हमारे जवान हमारे लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं, क्या हम ये डिजर्व करते हैं?"

और तत्क्षण ही, चुल्लू भर पानी में कैसे कोई डूब के मर सकता है, बिलकुल समझ में आ गया |



ईर्ष्या



कमला शंकर मिश्रा
सहा. पर्यवेक्षक

ईर्ष्या की बड़ी बेटी की नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है वह बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। अच्छे लोगों की निन्दा वह इसलिए करता है ताकि निन्दक व्यक्ति दूसरे लोगों एवं मित्रों की आँखों में उसकी जगह अच्छा बन जाए जिससे निन्दक व्यक्ति को अच्छे लोगों के स्थान पर बैठा दिया जाए।

मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न आगे होगा। दूसरों को गिराने की कोशिशों से अपने आप को बढ़ाने की कोशिश नहीं की जा सकती। एक बात और यह है कि संसार में कोई भी व्यक्ति निन्दा से नहीं गिरता, उसके पतन का कारण उसके भीतर के अवगुण होते हैं। कोई भी व्यक्ति दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी जब वह अपने चरित्र को स्वच्छ बनायें तथा अपने गुणों का विकास करें।

ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत से लोगों को जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति है और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते है कि कहाँ सुनने वाला मिल जाए और अपने दिल की भड़ास निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही वे बड़ी ही होशियारी से एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते है, मानों निन्दा को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं है। मगर जरा सोचिए, अगर वे अपना बहुमूल्य समय व शक्ति निन्दा के वजाए अपने गुणों को सामाजिक कार्यों में लगाते, तो आज वो अपने जीवन में काफी उन्नति प्राप्त कर लेते।

चिन्ता को लोग चिता कहते है, और जिसे किसी प्रचण्ड चिन्ता ने पकड़ लिया हो, उस बेचारे की जिन्दगीं ही खराब हो जाती है। किन्तु, ईर्ष्या शायद चिन्ता से भी बदतर चीज है, क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है। चिन्ताग्रसित व्यक्ति समाज की दया का पात्र है, किन्तु ईर्ष्या से जला-भुना व्यक्ति जहर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है, जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, उसे सामने वाले का सुख अच्छा नहीं लगता। पंक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते है मानों वो देखने के योग्य ही ना हो।

v

सेवानिवृत्ति — एक सफ़र जो कभी ख़त्म नहीं होता



आशुतोष कुमार
(आशुलिपिक ग्रेड-II)

-एक सेवा-यात्रा, कुछ यादें और अनगिनत रिश्तों की कहानी

"कुछ विदाइयाँ केवल व्यक्तियों की नहीं होतीं,
वे उन वर्षों की होती हैं जिनमें रिश्ते, अनुभव और यादें जन्म लेती हैं।"

एक विदाई, जो केवल विदाई नहीं थी...

.....दीवार पर लगी घड़ी की सुइयाँ धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं। .....शाम का समय था। कार्यालय का वही परिचित वातावरण था—वही फाइलों की महक, वही गलियारों में गूँजते कदमों की आवाज़, वही मेज़ों पर रखे दस्तावेज़ और वही रोज़मर्रा की भागदौड़।

लेकिन आज कुछ अलग था।

आज किसी एक कर्मचारी का आख़िरी कार्यदिवस था, लेकिन वास्तव में यह एक पूरे युग के सम्मान का दिन था।

सभागार सजा हुआ था। मंच पर रखे पुष्पगुच्छ, स्मृति-चिह्न और सम्मान स्वरूप दी जाने वाली शॉल केवल औपचारिक वस्तुएँ नहीं थीं, बल्कि वर्षों की मेहनत, ईमानदारी और समर्पण का प्रतीक थीं।

जब उनका नाम मंच पर पुकारा गया, तो तालियों की गूँज पूरे सभागार में फैल गई। चेहरे पर वही सहज मुस्कान थी, जिसे सहकर्मी वर्षों से जानते थे। लेकिन आज उस मुस्कान के पीछे छिपी भावनाओं को भी महसूस किया जा सकता था।

"क्योंकि कुछ पल ऐसे होते हैं, जहाँ शब्द अपनी सीमा खो देते हैं और आँखें बहुत कुछ कह जाती हैं।"

एक कुर्सी, जिसने एक पूरी कहानी देखी...

उस क्षण मेरी नज़र अनायास ही उस कुर्सी पर चली गई, जिस पर वे वर्षों से बैठते आए थे।

वह कुर्सी आज केवल एक कुर्सी नहीं थी।

"वह वर्षों की मेहनत, जिम्मेदारियों, संघर्षों और उपलब्धियों की मौन गवाह थी।"

उसने न जाने कितनी सुबहें देखी थीं, जब समय से पहले आकर कार्य शुरू किया गया होगा। उसने कितनी शामें देखी होंगी, जब कार्यालय खाली हो चुका होगा लेकिन कोई फाइल अभी भी अपने अंतिम निर्णय की प्रतीक्षा कर रही होगी।

उसने देखा होगा—

कभी किसी कठिन विषय पर गंभीर चर्चा,

कभी किसी कनिष्ठ कर्मचारी को समझाते हुए धैर्य,

कभी किसी सफलता पर चेहरे की संतुष्टि,

और कभी किसी चुनौती के सामने शांत रहकर समाधान खोजने का प्रयास।

कुछ वस्तुएँ निर्जीव होकर भी जीवन की सबसे बड़ी कहानियों की साक्षी बन जाती हैं।

जब कार्यालय, केवल कार्यालय नहीं रहता...

किसी भी व्यक्ति की सेवा-यात्रा केवल नियुक्ति पत्र से शुरू नहीं होती और सेवानिवृत्ति आदेश पर समाप्त नहीं होती।

उसके बीच छिपे होते हैं हजारों छोटे-बड़े पल।

जब वर्षों पहले उन्होंने पहली बार इस कार्यालय की चौखट पर कदम रखा होगा, तब शायद यह स्थान उनके लिए केवल एक कार्यस्थल रहा होगा। आँखों में सपने रहे होंगे, मन में उत्साह रहा होगा और अपने कर्तव्यों को बेहतर तरीके से निभाने की इच्छा रही होगी।

लेकिन समय के साथ यही कार्यालय उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया।

"जहाँ पहले केवल फाइलें थीं, वहाँ धीरे-धीरे रिश्ते बन गए।

जहाँ पहले केवल जिम्मेदारियाँ थीं, वहाँ धीरे-धीरे अपनापन जुड़ गया।"

यहीं सुबह की शुरुआत हुई।

यहीं अनुभव मिला।

यहीं सफलताओं की खुशियाँ बाँटी गईं।

यहीं कठिन समय में साथ खड़े होने वाले लोग मिले।

कार्यालय की असली पहचान उसकी इमारत से नहीं होती, बल्कि वहाँ काम करने वाले लोगों के व्यवहार से होती है।

फाइलों के पीछे छिपा एक पूरा जीवन...

सरकारी सेवा को अक्सर नियमों, प्रक्रियाओं और फाइलों तक सीमित समझ लिया जाता है, लेकिन वास्तविकता इससे कहीं अधिक गहरी होती है।

"हर फाइल के पीछे एक जिम्मेदारी होती है,

हर निर्णय के पीछे एक अनुभव होता है,

और हर हस्ताक्षर के पीछे एक विश्वास छिपा होता है।"

विशेषकर ऑडिट जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र में केवल दस्तावेज़ देखना पर्याप्त नहीं होता। वहाँ तथ्यों को समझना होता है, निष्पक्षता बनाए रखनी होती है और संस्था के प्रति अपने दायित्व को पूरी ईमानदारी से निभाना होता है।

इन वर्षों में न जाने कितनी रिपोर्टें तैयार हुईं, कितनी बैठकों में भाग लिया गया, कितनी चुनौतियों का सामना किया गया और कितने नए साथियों को अनुभव का लाभ मिला।

लेकिन किसी वरिष्ठ कर्मचारी की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल उसका कार्य नहीं होता।

"उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि होती है—उसके बाद आने वाले लोगों के लिए छोड़ी गई अच्छी परंपरा।"

सम्मान पद से नहीं, व्यक्तित्व से मिलता है...

समय के साथ पद बदलते हैं, जिम्मेदारियाँ बदलती हैं और कार्यालय में नए लोग आते-जाते रहते हैं। लेकिन कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनकी पहचान उनके पद से कहीं अधिक बड़ी हो जाती है।

"लोग किसी व्यक्ति को इसलिए याद नहीं रखते कि वह किस कुर्सी पर बैठा था, बल्कि इसलिए याद रखते हैं कि उस कुर्सी पर बैठकर उसने कैसा व्यवहार किया था।"

किसी के लिए वह एक अच्छे अधिकारी रहे होंगे, किसी के लिए मार्गदर्शक, किसी के लिए सहयोगी और किसी के लिए एक ऐसे वरिष्ठ, जिनसे काम के साथ-साथ जीवन की बहुत-सी बातें सीखने को मिलीं।

विदाई समारोह में जब सहकर्मी अपने अनुभव साझा कर रहे थे, तो ऐसा लग रहा था जैसे वर्षों की स्मृतियाँ एक-एक करके सामने आ रही हों।

किसी ने उनके अनुशासन को याद किया,

किसी ने उनकी सरलता को,

किसी ने कठिन समय में मिले उनके सहयोग को,

और किसी ने उनके उस व्यवहार को, जिसने उन्हें सबसे अलग बनाया।

"मनुष्य की वास्तविक कमाई बैंक खाते में नहीं, बल्कि उन लोगों के दिलों में होती है जो उसके जाने के बाद भी उसे सम्मान के साथ याद करते हैं।"

वह अंतिम क्षण... जब शब्द कम पड़ गए

सम्मान स्वरूप उन्हें शॉल ओढ़ाई गई, स्मृति-चिह्न भेंट किया गया और पुष्पगुच्छ देकर उनके योगदान को नमन किया गया।

कैमरे मुस्कुराते चेहरों को कैद कर रहे थे, लेकिन कुछ भाव ऐसे भी थे जिन्हें कोई कैमरा कभी कैद नहीं कर सकता।

वे भाव थे—अपनापन, कृतज्ञता और वर्षों के साथ की वह अनमोल भावना।

कई आँखें नम थीं।

यह आँसू दुख के नहीं थे, बल्कि उन यादों के थे जो वर्षों के साथ धीरे-धीरे जीवन का हिस्सा बन गई थीं।

किसी स्थान को छोड़ना कठिन नहीं होता, कठिन होता है उन लोगों से दूर होना जिनके साथ जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष बिताए हों।

सेवानिवृत्ति — अंत नहीं, एक नई शुरुआत

अक्सर कहा जाता है कि सेवानिवृत्ति नौकरी का अंत है। लेकिन वास्तव में यह केवल सेवा की एक औपचारिक समाप्ति है।

"कर्म, अनुभव और अच्छे संस्कार कभी सेवानिवृत्त नहीं होते।"

एक व्यक्ति कार्यालय से दूर हो सकता है, लेकिन उसके विचार, उसकी सीख और उसके द्वारा स्थापित मूल्य हमेशा जीवित रहते हैं।

सेवानिवृत्ति वह समय है जब व्यक्ति पीछे मुड़कर अपने जीवन को संतोष से देख सकता है। वह महसूस कर सकता है कि उसने केवल वर्षों तक नौकरी नहीं की, बल्कि एक संस्था के निर्माण में अपना छोटा-सा योगदान दिया।

अब समय परिवार के लिए है, अपने अधूरे सपनों के लिए है और उन इच्छाओं के लिए है जिन्हें जिम्मेदारियों के बीच कहीं पीछे छोड़ दिया गया था।

जीवन का सबसे सुंदर पड़ाव वह होता है, जब इंसान पीछे मुड़कर देखे और उसके पास पछतावे से अधिक संतोष की कहानियाँ हों।

एक विचार... वर्ष 2058 का

आज जब मैं अपने वरिष्ठजनों को सम्मानपूर्वक विदा होते देखता हूँ, तो मन अनायास ही भविष्य की ओर चला जाता है।

एक दिन समय का यही चक्र मेरे जीवन में भी आएगा।

शायद "वर्ष 2058" में मैं भी किसी कार्यालय की उसी कुर्सी से उठकर अंतिम बार पीछे मुड़कर देखूँगा। शायद तब मेरे सामने भी वही प्रश्न होगा—

क्या मैंने केवल अपनी नौकरी पूरी की, या अपने कर्मों से कोई पहचान भी बनाई?

उस दिन मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि कोई पद, कोई पुरस्कार या कोई प्रशंसा नहीं होगी।

मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि यह होगी कि लोग मुझे यह कहकर याद करें—

"यह व्यक्ति अपने दायित्वों के प्रति ईमानदार था, अपने व्यवहार से सबका सम्मान करता था और अपने पीछे अच्छी यादें छोड़ गया।"

मन में एक छोटी-सी आशा भी है कि आज जिन वरिष्ठजनों को हम सम्मान के साथ विदा कर रहे हैं, यदि समय और परिस्थितियों ने साथ दिया, तो वे मेरी सेवानिवृत्ति के अवसर पर भी अपना स्नेह और आशीर्वाद देने अवश्य आएँगे।

क्योंकि कुछ रिश्ते समय के मोहताज नहीं होते।

अंतिम शब्द...

सेवानिवृत्ति वास्तव में किसी यात्रा का अंत नहीं है।

यह उस वृक्ष की तरह है जिसने वर्षों तक छाया दी, फल दिए और अब भी अपनी जड़ों से आने वाली पीढ़ियों को मजबूती देने की क्षमता रखता है।

"इमारतें वही रहती हैं, मेज़ें वही रहती हैं, फाइलें भी चलती रहती हैं; बदलते हैं तो केवल नाम।"

लेकिन कुछ नाम ऐसे होते हैं जो केवल कार्यालय के रजिस्टर में दर्ज नहीं होते, बल्कि लोगों के हृदय में अपनी जगह बना लेते हैं।

कुर्सियाँ खाली हो जाती हैं।

पद बदल जाते हैं।

नामपट्ट बदल जाते हैं।

लेकिन उन्हें गरिमा देने वाले लोग कभी भुलाए नहीं जाते।

वे केवल इतिहास का हिस्सा नहीं बनते, वे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन जाते हैं।

और यही है—

सेवानिवृत्ति — एक सफ़र जो कभी ख़त्म नहीं होता।



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: साधन या संकट



दक्ष चतुर्वेदी
पुत्र श्री अनुज कुमार चतुर्वेदी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) कंप्यूटर प्रणाली की उस क्षमता को कहते हैं जिससे मानव बुद्धि द्वारा किये जाने वाले कार्य यथा समस्याओं का हल निकालना, विचार एवं बुद्धि-विवेक का प्रयोग करना, विश्लेषण एवं निर्णय लेने के कार्य संभव होते हैंI यह अनुसंधान का विषय केवल आज से नहीं है, बल्कि इस विषय पर कार्य वर्ष 1956 में आरम्भ हुआ थाI इसके अध्ययन का आरम्भ एक प्रसिद्ध अमेरिकी आइवी लीग विश्वविद्यालय, "डार्टमाउथ महाविद्यालय" ने किया थाI

वर्तमान समय में हम एआई से घिरे हुए हैं। यह एक ऐसी शक्ति बनता जा रहा है जो हमारे भविष्य को प्रभावित करेगा। एआई पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर एक बादल जैसा मंडरा रहा है। हालाँकि, एक तरफ जहाँ कुछ विशेषज्ञ इसे अर्थव्यवस्था पर मंडराते संकट के रूप में देख रहे हैं, वहीं दूसरा पक्ष इसके सकारात्मक आर्थिक विकास की संभावनाओं की ओर इशारा करता है। एआई अब केवल कंप्यूटर विज्ञान का विषय नहीं रहा, बल्कि वैश्विक अर्थशास्त्र का भी विषय बन चुका है। जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को बदला था, एआई उससे कहीं अधिक गति से वित्तीय और श्रम वातावरण को बदल रहा है।

अर्थशास्त्र और एआई का मेल बेहद ही रोमांचक और गहरा विषय है। कई लोगों का मानना है कि एआई तेज़ी से प्रवेश स्तर पर उपलब्ध रोज़गार समाप्त कर देगा। उनका सोचना गलत नहीं है क्योंकि यह एक चिंताजनक विषय है। इसका दूसरा पहलू यह है कि यदि हम एआई को अपने कार्यों में एक औज़ार की तरह प्रयोग करें, तो हमारी कार्यकुशलता कई गुना बढ़ जाएगी। हालाँकि यह एआई के शुरुआती दिनों में कहना ठीक है, असलियत यह है कि एआई कंपनियाँ तीव्र गति से श्रम को एआई से प्रतिस्थापित करने की ओर बढ़ रही हैं। कोडिंग, कंटेंट क्रिएशन, वित्त और विपणन जैसे रोज़गार जिन्हें हम अंग्रेजी में "वाइट कॉलर जॉब्स" कहते हैं, एआई के बढ़ते प्रयोग से घटते जा रहे हैं। इसका एक मुख्य कारण व्यवसायों की मुनाफ़े के संदर्भ में बढ़ती लालच है।

समस्या यह है कि एआई कंपनियाँ केवल अपने फायदे के लिए आर्थिक वातावरण में एक अनिश्चितता फैलाने का प्रयास कर रही हैं। यह प्रभाव केवल कंप्यूटर संबंधित रोज़गारों तक सीमित नहीं है। उत्पादन के क्षेत्र में भी एआई को मनुष्य द्वारा किए गए श्रम से नई तकनीकें सिखाई जा रही हैं, जिससे वह दिन दूर नहीं जब उत्पादन जैसे श्रम-घनिष्ठ क्षेत्र के कार्य, रोबोट व एआई द्वारा किए जाने लगेंगे। यह एक ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है जिससे आर्थिक मंदी जैसे हालात आ जाएंगे। हालाँकि विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि यह अनिश्चितता व्यवसायों के मूल्यों को बढ़ाने हेतु पैदा की जा रही है।

एआई के बढ़ते प्रयोग से विश्व भर में डेटा सेंटर बनाए जा रहे हैं, जो तेज़ी से भूजल स्तर को कम कर रहे हैं। इसके फायदे कम और दुष्प्रभाव ज़्यादा हैं। डेटा सेंटर्स बेहद सीमित रोज़गार पैदा करते हैं, और इनके सर्वर को ठंढा रखने के लिए जल के अत्यधिक उपयोग से फसलों की सिंचाई प्रभावित हो सकती है। यह चिंताजनक है क्योंकि इसके दुष्प्रभावों के बारे में हम पूरी तरह भिज्ञ नहीं हैं। घटते भूजल के कारण वनस्पति, जीव-जंतु एवं पर्यावरणीय क्षरण का ख़तरा बढ़ने से पृथ्वी के तापमान में सतत वृद्धि हो रही है।

एआई को पूरी तरह दोष देना भी ठीक नहीं होगा। एआई का अगर हम अच्छे से प्रयोग करें, तो यह हमारे दैनिक कार्यों को और आसान बना देता है। आज के दौर में कोई भी काम एआई के बिना अधूरा लगता है। एआई का बढ़ता उपयोग विज्ञान, गणित और

चिकित्सा के क्षेत्रों में खरा उतरता साबित हो रहा है। इससे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रमुख विकास और आविष्कार सरल हो रहे हैं। गंभीर बीमारियों में भी एआई का उपयोग सार्थक पाया गया है। कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों को अब जल्द पकड़ने में एआई का कुशलता से प्रयोग हो रहा है। इस क्षेत्र में उन्नति के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था को लम्बे समय में प्रगति देखने को मिलेगी।

अब सवाल उठता है कि हम एआई को कैसे नियंत्रित करें जिससे यह केवल एक औज़ार की तरह प्रयोग हो, न कि मानव श्रम की तरह। इसके लिए हमें कानूनी रूप से नियमों और विनियमों को स्थापित करना होगा एवं एआई से होने वाली वित्तीय कठिनाइयों पर गहन शोध करना होगा। एआई के उपयोग से पर्यावरण में होने वाले बदलावों पर अध्ययन करना होगा और ठोस कानून बनाने होंगे, जिससे इन नियमों का पालन न करने वाले व्यक्तियों एवं व्यवसायों को उत्तरदायी ठहराया जा सके।

एआई एक ऐसी दोधारी तलवार है जिसका भविष्य हमारी समझ और नीतियों पर निर्भर करता है। एक तरफ जहाँ यह तकनीकी और चिकित्सीय क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति ला रहा है, वहीं दूसरी तरफ रोजगार संकट और पर्यावरणीय क्षति जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी पेश कर रहा है। इसलिए, आवश्यकता इस बात की है कि हम अति-निर्भरता और अंधी दौड़ से बचें। तकनीक और मानवता के बीच एक सही संतुलन बनाकर ही हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि एआई इंसानों का विकल्प न बनकर, उनके विकास का एक सशक्त माध्यम बने।



सकारात्मक सोच की शक्ति



कीर्ति मेहरा
आशुलिपिक

सकारात्मक सोच का आशय, चीज़ों के सकारात्मक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करने के अभ्यास से है। यह मनोविज्ञान के अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। नब्बे के दशक में यह विचार व्यापक रूप से लोकप्रिय हुआ और तेज़ी से लोगों के जीवन में अपनी जगह बना ली।

ग्रीक दार्शनिकों ने **"यूडेमोनिया"** की बात कही। यूडेमोनिया, खुशी की एक विशिष्ट अवधारणा है, जो सुख, प्रसन्नता और व्यक्तिपरक कल्याण जैसे पहलुओं को महत्त्वपूर्ण मानती है। मध्य युग में, सिख धर्म गुरुओं ने भी प्रसन्नता और संतोष के साथ जीवन जीने का उपदेश दिया। इसे **चढ़दीं कलां** कहा जाता है जिसका अर्थ है- **हमेशा आशा बनाए रखना।**

सकारात्मक सोच एक ऐसी शक्ति है जो हमें मानसिक और भौतिक उन्नति की दिशा में ले जाती है। यह हमें दृष्टि का विस्तार करने और समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने में मदद करती है। सकारात्मक सोच का अर्थ होता है उस तरह की सोच जो समस्याओं को हल करने की दिशा में ले जाती है। यह सोच हमें नए मौके पहचानने और उनका सही इस्तेमाल करने में मदद करती है।

सकारात्मक सोच, एक ऐसा भावनात्मक और मानसिक दृष्टिकोण है जो अच्छे पक्ष पर ध्यान केंद्रित करके लाभ पहुँचाने वाले परिणामों की अपेक्षा करता है। यह क्षमता किसी भी परिस्थिति में बुरे के बजाय अच्छे की अपेक्षा करने और सफलता की संभावना पर विश्वास बनाए रखने से जुड़ी है।

सकारात्मक सोच का अर्थ है जीवन की चुनौतियों का सामना रचनात्मक दृष्टिकोण से करना। इसका मतलब जीवन की कठिनाइयों को नजरअंदाज करना या कम आंकना नहीं है, बल्कि उन्हें सकारात्मक तरीके से संभालने के तरीके खोजना है।

सकारात्मक सोच का मतलब यह नहीं है कि कठिन परिस्थितियों से बचा जाए। बल्कि, सकारात्मक सोच का अर्थ है संभावित बाधाओं का भरपूर लाभ उठाना, दूसरों में अच्छाई देखने की कोशिश करना और खुद को और अपनी क्षमताओं को सकारात्मक दृष्टि से देखना।

यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि सकारात्मक सोच कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो तुरंत प्रसन्नता ला सके या असफलता और सफलता के डर को पूरी तरह मिटा सके। वास्तव में सकारात्मक विचार, कठिन समय में संभलने में मदद करती है न कि सपनों को प्राप्त करने में।

सकारात्मक सोच को मज़बूत करने के लिये, अच्छी चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करना, सकारात्मक पलों का आनंद लेना, कृतज्ञता व्यक्त करना, दूसरों को धन्यवाद देना, सकारात्मक घटनाओं को याद रखना, सफलताओं का उत्सव मनाना, जीवन और काम में हास्य शामिल करना, सकारात्मक आत्म-वार्ता का अभ्यास करना और वर्तमान में जीने जैसी आदतें अपनाई जा सकती हैं।

जो लोग सकारात्मक विचार की शक्ति का प्रयोग नहीं करते, वे ग्लास को आधा भरा हुआ नहीं बल्कि आधा खाली देखते हैं। उनके पास जो कुछ है उसके प्रति आभारी होने के बजाय, वे इस बात पर ध्यान लगाते हैं कि उनके पास क्या नहीं है। उनका विचार इस बात ओर अधिक होता है कि क्या गलत हो रहा है, बजाय इसके कि क्या सही हो रहा है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सत्यनिष्ठा लोकहितार्थ
Dedicated to Truth in Public Interest

सकारात्मक विचार की शक्ति के विपरीत, नकारात्मक विचार आगे बढ़ने और खुश रहने में रुकावट डालते हैं। निराशावादी दृष्टिकोण और अधिक नकारात्मकता को आकर्षित करता है। शिकायत करना, संदेह करना, भरोसा न करना और दोषारोपण करने जैसी बातें निराशाजनक चीज़ों के आने की संभावना को बढ़ाती हैं। सकारात्मक सोच में भविष्य की बजाय अतीत के अनुभवों और गलतियों से सीखने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसमें छोटी-छोटी बातों पर फोकस करने की बजाय बड़ी तस्वीर को समझना महत्त्वपूर्ण होता

महात्मा गांधी ने भी कहा था कि- 'हमारा विश्वास, ही विचार का रूप धारण करता है'। यही विचार शब्द रूप में सामने आते हैं और शब्द व्यवहार में परिवर्तित होते हैं। यही व्यवहार आदत में और आदत, मूल्यों में बदल जाती है। ये मूल्य हमारे जीवन की दिशा को निर्धारित करते हैं। इसी तरह सकारात्मक सोच ही सकारात्मक भावनाएँ, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं सकारात्मक परिणाम को उत्पन्न करती है|

सकारात्मक सोच की शक्ति विकसित करना वास्तव में अपने जीवन और अपने आस-पास की दुनिया के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखना है। जब कोई प्रतिकूल घटना घटित होती है, तो याद रखना होगा कि प्रतिक्रिया ही वास्तव में परिणाम को निर्धारित करती है। ऐसी घटनाएँ होने पर हमेशा सकारात्मक प्रतिक्रिया या आशावादी बात कहने का प्रयास किया जाना वांछित होता है। दुनियाभर की गलतियाँ निकालने से पहले अच्छाई की तलाश करनी चाहिये। आशावादी लोग अपनी समस्याओं से निपटने के लिये जो तरीके अपनाते हैं, वही उन्हें औसत लोगों से अलग कर देता है।

सकारात्मक मनोवैज्ञानिक **मार्टिन सेलिगमैन** सहित कुछ शोधकर्ता , सकारात्मक सोच को व्याख्यात्मक शैली के संदर्भ में परिभाषित करते हैं। व्याख्यात्मक शैली वह तरीका है जिससे यह समझते हैं कि घटनाएँ क्यों घटीं-

- **आशावादी व्याख्यात्मक शैली :** आशावादी व्याख्यात्मक शैली वाले लोग अच्छी घटनाओं का श्रेय स्वयं को देते हैं और आमतौर पर बुरे परिणामों के लिए बाहरी शक्तियों को दोषी ठहराते हैं। वे नकारात्मक घटनाओं को भी अस्थायी और असामान्य मानते हैं।

- **निराशावादी व्याख्यात्मक शैली :** निराशावादी व्याख्यात्मक शैली वाले लोग अक्सर बुरी घटनाओं के लिए खुद को दोषी मानते हैं, लेकिन सफल परिणामों के लिए खुद को पर्याप्त श्रेय नहीं देते। वे प्रतिकूल घटनाओं को अपेक्षित और स्थायी मानते हैं।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सकारात्मक मनोविज्ञान बनाम सकारात्मक सोच

हालांकि "सकारात्मक सोच" और "सकारात्मक मनोविज्ञान" शब्दों का प्रयोग कभी-कभी एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि वे एक ही चीज नहीं हैं।

- **सकारात्मक सोच का** अर्थ है चीजों को सकारात्मक नजरिए से देखना और सकारात्मक, आशावादी रवैया बनाए रखना।

- **सकारात्मक मनोविज्ञान**, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो आशावाद के प्रभावों , इसके कारणों और इसका सर्वोत्तम उपयोग कब किया जा सकता है, का अध्ययन करती है।

सकारात्मक सोच के स्वास्थ्य लाभ

हाल के वर्षों में, "सकारात्मक सोच की शक्ति" **"द सीक्रेट"** जैसी स्व-सहायता पुस्तकों के माध्यम से लोकप्रिय हुई है। ये पुस्तकें अक्सर सकारात्मक सोच या **आकर्षण के नियम** को सर्व-रोगनाशक के रूप में चित्रित करती हैं, कभी-कभी उनके प्रभावों को अतिरंजित और सरलीकृत तरीके से प्रस्तुत करती हैं।

हालांकि, अनुभवजन्य शोध में सकारात्मक सोच और आशावादी दृष्टिकोण से जुड़े कई वास्तविक स्वास्थ्य लाभ पाए गए हैं। सकारात्मक सोच से जुड़े कुछ स्वास्थ्य लाभों में निम्नलिखित शामिल हैं:-

मानसिक और शारीरिक लाभ

- **तनाव मुक्ति:** चिंता और डर को कम करके मन को शांत रखती है।
- **बेहतर स्वास्थ्य:** रक्तचाप और हृदय से जुड़ी समस्याओं के जोखिम को घटाती है।
- **ऊर्जा में वृद्धि:** शरीर को अधिक सक्रिय और ऊर्जावान बनाए रखती है। [1]

सफलता और जीवन पर प्रभाव

- **समाधान की खोज:** कठिन समय में हार मानने के बजाय नए रास्ते दिखाती है।
- **आत्मविश्वास:** हर परिस्थिति का डटकर मुकाबला करने की शक्ति देती है।
- **सकारात्मक रिश्ते:** आसपास के माहौल को खुशहाल और प्रेरणादायक बनाती है|

जर्नल ऑफ एजिंग रिसर्च में 2018 में 1,558 बुजुर्गों पर किए गए प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण रखने से 35 वर्षों की अवधि में मृत्यु दर में कमी आती है। जिन लोगों का नजरिया अधिक सकारात्मक था, उनमें नियमित शारीरिक व्यायाम करने, धूम्रपान से बचने, स्वस्थ आहार खाने और बेहतर नींद लेने की संभावना भी अधिक थी।

सकारात्मक सोच की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि यह संतुष्टि की भावना को बढ़ाती है और अवसाद एवं तनाव को कम करती है। यह विचार करने के तरीके को बदलकर स्पष्टता, रचनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमता को बेहतर बनाती है। पुराने शोधों से पता चला है कि जिन लोगों में सकारात्मक सोच का स्तर उच्च होता है, वे तनावपूर्ण जीवन की घटनाओं से जीवन के अर्थ की अधिक गहरी समझ के साथ बाहर निकलने की अधिक संभावना रखते हैं। अतः एक खुशहाल एवं संतुष्ट जीवन जीने के लिए हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए कि हम प्रतिदिन एक सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें|

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थे सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अपमान — आत्मसम्मान की अग्नि-परीक्षा



कोमल भारतीय
लिपिक

अपमान एक ऐसा अदृश्य आघात है, जो शरीर को नहीं, बल्कि मन के गहरे कोनों को घायल कर देता है। कठोर शब्दों के तीर कभी-कभी तलवार से भी अधिक पीड़ा देते हैं, क्योंकि इनके घाव दिखाई नहीं देते, परंतु हृदय में लंबे समय तक अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

मनुष्य के जीवन में अपमान का क्षण अत्यंत कठिन होता है, किंतु यही क्षण उसके धैर्य, आत्मविश्वास और चरित्र की वास्तविक परीक्षा लेते हैं। जो व्यक्ति अपमान की अग्नि में जलकर भी अपने संस्कारों और संयम को नहीं खोता, वही जीवन के पथ पर सच्चा विजेता बनकर उभरता है।

कहा गया है — "अपमान वह पत्थर है, जिसे कमजोर व्यक्ति बोझ समझकर ढोता है, जबकि दृढ़ व्यक्ति उसी पत्थर से सफलता की सीढ़ियाँ बना लेता है।" इतिहास साक्षी है कि अनेक महान व्यक्तियों ने तिरस्कार और कठिनाइयों को अपनी प्रेरणा बनाया और अपने कर्मों से संसार में अमिट पहचान बनाई।

अपमान करने वाला व्यक्ति क्षण भर के लिए किसी को छोटा दिखा सकता है, परंतु वह किसी के आत्मबल को पराजित नहीं कर सकता। वास्तविक महानता दूसरों को गिराने में नहीं, बल्कि उन्हें सम्मान देने और आगे बढ़ाने में है।

हमें अपमान को क्रोध और प्रतिशोध की अग्नि में नहीं बदलना चाहिए, बल्कि उसे आत्मसुधार और सफलता की ऊर्जा बनाना चाहिए। क्योंकि समय सबसे बड़ा न्यायाधीश है और कर्म सबसे प्रभावशाली उत्तर।

अंततः, मनुष्य का वास्तविक सम्मान दूसरों की प्रशंसा से नहीं, बल्कि उसके अपने चरित्र, विचारों और कर्मों की श्रेष्ठता से निर्धारित होता है। अपमान जीवन की एक कठिन परीक्षा है, जो हमें भीतर से मजबूत बनाकर आत्मसम्मान के शिखर तक पहुँचने का मार्ग दिखाती है।



पर्यावरण संरक्षण में लेखापरीक्षा की भूमिका : उत्तर प्रदेश के संदर्भ में



कुमार तेजस्वी आजाद मधुर
लेखापरीक्षक

"प्रकृति हमारी आवश्यकता पूरी कर सकती है, लालच नहीं।" महात्मा गांधी का यह विचार आज के पर्यावरणीय संकट के दौर में अत्यंत प्रासंगिक है। जलवायु परिवर्तन, वायु एवं जल प्रदूषण, वनों का क्षरण, भूजल का अत्यधिक दोहन तथा बढ़ता ठोस एवं प्लास्टिक अपशिष्ट मानव समाज के सामने गंभीर चुनौतियाँ हैं। ऐसे समय में पर्यावरण संरक्षण केवल पर्यावरण एवं वन विभाग का दायित्व न होकर शासन की प्रत्येक संस्था की सामूहिक जिम्मेदारी बन गया है। इस संदर्भ में **लेखापरीक्षा (Audit)** की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

लेखापरीक्षा का उद्देश्य केवल यह देखना नहीं है कि सरकारी धन नियमों के अनुसार खर्च हुआ या नहीं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग **मितव्ययिता, दक्षता, प्रभावशीलता और अपेक्षित परिणामों** के साथ हुआ है। पर्यावरणीय लेखापरीक्षा इसी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए यह प्रश्न उठाती है कि किसी योजना पर किए गए व्यय से पर्यावरण को वास्तविक और दीर्घकालिक लाभ कितना मिला।

उत्तर प्रदेश में पर्यावरणीय लेखापरीक्षा का योगदान

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य में पर्यावरणीय चुनौतियाँ व्यापक हैं। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) द्वारा राज्य में समय-समय पर वनीकरण, सामाजिक वानिकी, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन आदि क्षेत्रों की Performance Audit की गई है। इन लेखापरीक्षाओं ने न केवल योजनाओं के क्रियान्वयन में कमियों को उजागर किया, बल्कि सुधार के लिए महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए हैं।

Afforestation and Social Forestry Programme पर Performance Audit में वर्ष 2016-17 से 2021-22 की अवधि की समीक्षा की गई। इसमें वृक्षारोपण की योजना, CAMPA के अंतर्गत गतिविधियाँ तथा monitoring एवं evaluation व्यवस्था का परीक्षण किया गया। इससे यह महत्वपूर्ण दृष्टिकोण सामने आता है कि पर्यावरण संरक्षण में केवल लगाए गए पौधों की संख्या पर्याप्त नहीं है; **उनकी जीवितता, प्रजातियों का उपयुक्त चयन, नियमित अनुश्रवण तथा वास्तविक हरित क्षेत्र में वृद्धि** भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

इसी प्रकार **शहरी क्षेत्रों में Solid Waste Management** पर Performance Audit पर्यावरण संरक्षण में लेखापरीक्षा की प्रत्यक्ष भूमिका का महत्वपूर्ण उदाहरण है। 45 परीक्षण किए गए Urban Local Bodies में केवल **तीन में Solid Waste Management Plan** उपलब्ध पाया गया। 38 परीक्षण किए गए निकायों में Material Recovery Facility (MRF) केन्द्र निर्धारित अवधि के बाद भी कार्यशील नहीं थे। लगभग **89 प्रतिशत परीक्षण किए गए निकायों में waste weighbridge की सुविधा नहीं थी।**

वर्ष 2020-21 में राज्य में अनुमानित 1,030 टन प्रतिदिन प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पन्न हो रहा था, जबकि उपलब्ध processing capacity लगभग 722.50 टन प्रतिदिन थी। इसी प्रकार 72 Urban Local Bodies में लगभग 84.58 लाख मीट्रिक टन legacy waste पाया गया। ये तथ्य इस बात को रेखांकित करते हैं कि केवल योजना बनाना पर्याप्त नहीं है; उसके प्रभावी क्रियान्वयन और परिणामों का स्वतंत्र मूल्यांकन भी आवश्यक है।

इस प्रकार लेखापरीक्षा की भूमिका एक "Watchdog" से आगे बढ़कर एक "Guide for Better Governance" की भी है। Audit द्वारा उजागर कमियाँ संबंधित विभागों को अपनी कार्यप्रणाली सुधारने, संसाधनों का बेहतर उपयोग करने तथा पर्यावरणीय लक्ष्यों को परिणामोन्मुख बनाने का अवसर प्रदान करती हैं।

भविष्य में Audit की भूमिका

पर्यावरणीय चुनौतियों की बढ़ती गंभीरता को देखते हुए लेखापरीक्षा को भविष्य में कुछ नए आयामों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। Green Audit और Climate-Responsive Audit को अधिक व्यापक बनाया जा सकता है। सरकारी योजनाओं में निर्धारित Green Budget के उपयोग तथा उससे प्राप्त पर्यावरणीय परिणामों का परीक्षण किया जाना चाहिए।

वृक्षारोपण के मामले में Audit को केवल लगाए गए पौधों की संख्या के बजाय उनकी जीवितता और विकसित हुए हरित क्षेत्र को परिणाम-सूचक के रूप में देखना चाहिए। जल संरक्षण के क्षेत्र में तालाबों, झीलों, नदियों और भूजल पुनर्भरण योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सकता है। इसी प्रकार वायु प्रदूषण, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, औद्योगिक अपशिष्ट, प्लास्टिक अपशिष्ट तथा ठोस कचरे के वैज्ञानिक निस्तारण को नियमित Performance Audit के दायरे में लाया जा सकता है।

आधुनिक तकनीक इस कार्य को और प्रभावी बना सकती है। GIS, Satellite Imagery, Drone Technology तथा Data Analytics का उपयोग करके वृक्षारोपण, वन क्षेत्र, जल निकायों, खनन क्षेत्रों और अपशिष्ट निस्तारण स्थलों की वास्तविक स्थिति का अधिक प्रभावी परीक्षण किया जा सकता है। साथ ही, पूर्व में उठाए गए Audit observations पर Follow-up Audit को मजबूत करना भी आवश्यक है, ताकि Audit की सिफारिशें केवल रिपोर्ट का हिस्सा न रहकर वास्तविक सुधार में परिवर्तित हों।

निष्कर्ष

पर्यावरण संरक्षण में लेखापरीक्षा की भूमिका आज पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। **"कितना धन खर्च हुआ"** के साथ अब यह प्रश्न भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि **"उस व्यय से पर्यावरण को कितना वास्तविक लाभ मिला।"**

उत्तर प्रदेश में वनीकरण, सामाजिक वानिकी और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में की गई Performance Audits ने यह सिद्ध किया है कि लेखापरीक्षा पर्यावरणीय शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और परिणामोन्मुख बनाने का प्रभावी माध्यम है।

भविष्य में यदि Audit अपनी पारंपरिक भूमिका के साथ आधुनिक तकनीक, पर्यावरणीय संकेतकों और जलवायु परिवर्तन के जोखिमों को भी अपने परीक्षण का हिस्सा बनाए, तो लेखापरीक्षा **सुशासन की प्रहरी होने के साथ-साथ सतत विकास और भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण की संरक्षक** की भूमिका भी निभा सकती है।

"आज का उत्तरदायी Audit, कल के सुरक्षित पर्यावरण की आधारशिला है।"

शतरंज की बिसात



दीपमाला शर्मा
लेखापरीक्षक

शतरंज मेरे लिए केवल एक खेल नहीं, बल्कि सोचने और निर्णय लेने की कला है। जब मैंने पहली बार शतरंज की बिसात पर मोहरों को सजाया था, तब मुझे नहीं पता था कि यह खेल मेरे जीवन का इतना महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाएगा। धीरे-धीरे मैंने इसके नियम सीखे और खेलते-खेलते रणनीति बनाना, धैर्य रखना और सही समय पर सही निर्णय लेना सीखा। **"सफलता उन्हीं को मिलती है, जो कोशिश करना कभी नहीं छोड़ते।"**

मुझे आज भी अपने शुरुआती मुकाबले याद हैं। कभी मैं आसानी से जीत जाती थी, तो कभी अपनी छोटी-सी गलती के कारण हार जाती थी। हर हार ने मुझे कुछ नया सिखाया और हर जीत ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया। प्रतियोगिताओं में खेलते समय प्रतिद्वंद्वी की चाल को समझना और अपनी अगली चाल के बारे में सोचना मेरे लिए सबसे रोमांचक अनुभव रहा है।

शतरंज खेलते समय बिसात पर मेरी पूरी एकाग्रता रहती है। उस समय मुझे आसपास की किसी बात का ध्यान नहीं रहता। राजा, रानी, हाथी, घोड़े और प्यादों की चालों को समझते हुए मैं अपने प्रतिद्वंद्वी की रणनीति का अनुमान लगाने की कोशिश करती हूँ। कई बार एक छोटी-सी चाल पूरे खेल का रुख बदल देती है। **"हर चाल एक नया अवसर है, बस उसे पहचानने के लिए धैर्य और हिम्मत चाहिए।"**

प्रतियोगिताओं में भाग लेना मेरे लिए हमेशा यादगार अनुभव रहा है। जीतने की खुशी तो होती ही है, लेकिन हार के बाद अपनी गलतियों को समझना मुझे और भी अधिक सीख देता है। अपने प्रतिद्वंद्वी से कुछ नया सीखना और अगली बाजी में उसे बेहतर तरीके से इस्तेमाल करना मेरे खेल को लगातार मजबूत बनाता रहा है।

शतरंज ने मेरे अंदर धैर्य, एकाग्रता और आत्मविश्वास जैसे गुण विकसित किए हैं। इस खेल ने मुझे समझाया है कि किसी भी कठिन परिस्थिति में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। सही अवसर की प्रतीक्षा करके सोच-समझकर उठाया गया कदम ही सफलता की ओर ले जाता है।

Dedicated to Truth in Public Interest

आज जब मैं शतरंज की बिसात के सामने बैठती हूँ, तो मुझे केवल एक खेल नहीं दिखाई देता, बल्कि संभावनाओं की पूरी दुनिया दिखाई देती है। मेरी हर बाजी मेरे लिए एक नया अनुभव और एक नई सीख लेकर आती है। मैं हमेशा खुद से कहती हूँ— **"हार केवल एक पड़ाव है, मंज़िल नहीं; सच्ची जीत वही है जो हमें हर हार के बाद फिर से उठना सिखाए।"**

इसलिए शतरंज मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है और मुझे विश्वास है कि आगे भी यह मेरा प्रिय साथी बना रहेगा।

हिंदी भाषा का भविष्य: इतिहास, सत्ता, रोजगार और डिजिटल युग तक का सफर

भूमिका



किरण लता
सहायक निदेशक /राजभाषा

किसी भी भाषा का भविष्य इस बात से तय नहीं होता कि उसे कितने लोग पूजते हैं, बल्कि इस बात से तय होता है कि उसे कितने लोग कमाते-खाते, सोचते-समझते और सपना देखते हुए इस्तेमाल करते हैं। हिंदी इस कसौटी पर दुनिया की सबसे मजबूत भाषाओं में से एक है। इसका भविष्य केवल सुरक्षित नहीं है, बल्कि यह विस्तार के सबसे बड़े दौर में प्रवेश कर चुकी है। लेकिन यह भविष्य प्रेमचंद वाली शुद्ध खड़ी बोली का नहीं, बल्कि मोबाइल, बाजार और AI वाली नई हिंदी का है।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: जनता की भाषा कैसे बनी

हिंदी एक दिन में नहीं बनी, वह एक हजार साल के संघर्ष और स्वीकृति का परिणाम है।

क) जन्म: हिंदी का जन्म संस्कृत से अपभ्रंश के जरिए हुआ। 7वीं से 10वीं शताब्दी में शौरसेनी अपभ्रंश से ब्रज, अवधी, कन्नौजी और खड़ी बोली जैसी बोलियाँ निकलीं। अमीर खुसरो (1253-1325) पहले रचनाकार थे जिन्होंने खड़ी बोली में लिखा - "जे हाल मिस्कीं मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाय बतियां..."

ख) भक्ति आंदोलन - पहला स्वर्ण युग: जब संस्कृत मंदिरों और विद्वानों तक कैद थी, तब कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीरा ने हिंदी को घर-घर की भाषा बनाया। तुलसीदास का 'रामचरितमानस' अवधी में था, पर उसने पूरे उत्तर भारत को एक सांस्कृतिक धागे में पिरो दिया। मुगल बाजारों में हिंदी और फारसी मिलकर 'हिंदवी' बनी, जो व्यापार की संपर्क भाषा बन गई।

ग) स्वतंत्रता आंदोलन - राष्ट्र की भाषा: 19वीं सदी में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने खड़ी बोली को गद्य की भाषा बनाया। महात्मा गांधी ने साफ कहा था - "अगर स्वराज अंग्रेजी में आया तो वह जनता का स्वराज नहीं होगा।" 1918 के हिंदी साहित्य सम्मेलन में उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आह्वान किया। इसी आंदोलन की ताकत से 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया।

इतिहास का एक ही सार है - हिंदी हमेशा शासकों की थोपी हुई भाषा नहीं, बल्कि जनता द्वारा चुनी हुई संपर्क भाषा रही है।

2. सरकारी कार्यालयों में हिंदी: आंकड़ों में दम वास्तविकता में कम

संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है और अनुच्छेद 343(2) के तहत अंग्रेजी सह-राजभाषा बनी रहेगी। इसके लिए राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और गृह मंत्रालय में स्वतंत्र राजभाषा विभाग बना है।

व्यवस्था क्या है:

देश को तीन क्षेत्रों में बांटा गया है। 'क' क्षेत्र - उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली जैसे हिंदी भाषी राज्य, जहाँ केंद्र सरकार को 100% पत्राचार हिंदी में करना अनिवार्य है। 'ख' क्षेत्र - महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, और 'ग' क्षेत्र - दक्षिण और पूर्वोत्तर भारत।

हकीकत क्या है:

1. हर मंत्रालय में हिंदी अनुभाग है, हर साल 14-28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनता है, निबंध प्रतियोगिता और पुरस्कार बंटते हैं। पर पखवाड़ा खत्म होते ही फाइलें फिर अंग्रेजी में चलने लगती हैं।

2. सुप्रीम कोर्ट और सभी हाईकोर्ट में आज भी फैसला और बहस 100% अंग्रेजी में होती है। एक आम किसान अपनी जमीन का फैसला अपनी भाषा में नहीं पढ़ सकता।

3. अफसरों में आज भी धारणा है कि हिंदी में नोट लिखने से उसकी योग्यता पर सवाल उठेगा।

भविष्य का रास्ता क्या है:

भविष्य डंडे से नहीं, तकनीक से आएगा। सरकार अब दो AI टूल ला रही है - 'कंठस्थ' और 'लीला हिंदी प्रवाह'। इसमें अफसर अंग्रेजी में टाइप करेगा और सॉफ्टवेयर एक क्लिक में उसका सटीक हिंदी अनुवाद फाइल पर लगा देगा। जब अनुवाद का बोझ खत्म होगा और e-Office में हिंदी टाइपिंग आसान होगी, तभी सरकारी दफ्तरों में हिंदी सच में काम की भाषा बनेगी। NEP 2020 के तहत अब इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई भी हिंदी में शुरू हुई है, जो सबसे बड़ा बदलाव है।

3. रोजगार की हिंदी: अब मजबूरी नहीं, सबसे बड़ा करियर

एक समय था जब कहा जाता था - "अंग्रेजी नहीं तो नौकरी नहीं।" अब बाजार कह रहा है - "हिंदी नहीं तो भारत में बिजनेस नहीं।"

क) सरकारी नौकरियाँ:

SSC, बैंक PO, रेलवे, UPSC में हिंदी अधिकारी, राजभाषा अधिकारी, अनुवादक, प्राध्यापक के हजारों पद हर साल निकलते हैं। केंद्रीय सचिवालय में हिंदी अनुवादक का शुरुआती वेतन 50-60 हजार रुपये है। हिंदी पढ़कर आप TGT, PGT, प्रोफेसर बन सकते हैं।

ख) प्राइवेट और डिजिटल अर्थव्यवस्था - असली सोना यहीं है:

1. कंटेंट इकोनॉमी: भारत के टॉप 100 YouTubers में 70 से ज्यादा हिंदी के हैं। Tech, Education, Finance, Comedy में एक सफल हिंदी क्रिएटर महीने का 2 से 10 लाख तक कमाता है। Instagram पर हिंदी कहानी सुनाने वाले पेजों के मिलियन्स फॉलोवर हैं।

2. डबिंग और वॉइस इंडस्ट्री: Netflix, Amazon Prime, Disney+ Hotstar अपनी हर अंतरराष्ट्रीय फिल्म और सीरीज

को हिंदी में डब कर रहे हैं। एक अच्छे वॉइस-ओवर आर्टिस्ट को प्रति एपिसोड 15 से 40 हजार रुपये मिलते हैं।

3. **AI और टेक्नोलॉजी में नौकरी:** Meta, Google, Microsoft जैसी कंपनियाँ 'Hindi Language Expert', 'Data Annotator', 'Voice Trainer' के पद पर भर्ती कर रही हैं। आपका काम होता है AI को बेहतर हिंदी सिखाना। यह 21वीं सदी की नई नौकरी है।

ग) मीडिया और प्रकाशन:

दैनिक जागरण, अमर उजाला, भास्कर आज भी दुनिया के सबसे ज्यादा बिकने वाले अखबार हैं। टीवी में आज तक, ABP, इंडिया टीवी का बाजार अंग्रेजी चैनलों से 10 गुना बड़ा है।

4. भविष्य के इंजन: डिजिटल, जनसंख्या और Hinglish

हिंदी के भविष्य को तीन इंजन खींच रहे हैं।

1. जनसांख्यिकी: भारत की औसत उम्र 29 साल है। इस युवा आबादी का 60% हिस्सा हिंदी बेल्ट से आता है। यह युवा अंग्रेजी से नफरत नहीं करता, पर सोचता और सपना हिंदी में ही देखता है।

2. डिजिटल क्रांति: KPMG की रिपोर्ट कहती है कि अंग्रेजी इंटरनेट यूजर्स की वृद्धि 2-3% रह गई है, जबकि हिंदी यूजर्स 20% की दर से बढ़ रहे हैं। 50 करोड़ भारतीय इंटरनेट पर हिंदी में सर्च करते हैं। पहले हिंदी टाइप करना कठिन था, अब Google Voice Typing और WhatsApp ने इसे खत्म कर दिया।

3. Hinglish - भविष्य की असली हिंदी: भविष्य की हिंदी शुद्ध नहीं होगी। वह होगी - "मैंने document submit कर दिया है, please approve कर दीजिए", "मेरा net slow है, location भेज दो"। यही जीवित हिंदी है। अंग्रेजी ने भी लैटिन और फ्रेंच से शब्द लेकर खुद को बड़ा किया। हिंदी को भी यही करना होगा। शुद्धता के अहंकार से भाषा मरती है, व्यवहार से जीती है।

निष्कर्ष: हिंदी बचेगी नहीं, दौड़ेगी

हिंदी का इतिहास बताता है कि वह राजाओं के भरोसे नहीं, संतों और जनता के भरोसे बढ़ी है। उसका वर्तमान बताता है कि वह सरकारी फाइलों में भले कमजोर दिखे, पर बाजार, मोबाइल और सिनेमा में वह निर्विवाद राजा है।

उसका भविष्य इस बात पर निर्भर नहीं है कि हम उसे कितना बचाते हैं, बल्कि इस पर कि हम उसे कितना चलाते हैं।

जो भाषा सड़क पर चलती है, बाजार में बिकती है, मोबाइल में टाइप होती है और AI से बात करती है, वही जिंदा रहती है। भविष्य की हिंदी देवनागरी में भी लिखी जाएगी और रोमन में भी - kya haal hai भी हिंदी ही होगी। वह ज्ञान की, रोजगार की और तकनीक की भाषा होगी।

इसीलिए हिंदी खत्म नहीं होगी, वह अपने सबसे बड़े दौर की ओर दौड़ रही है।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सामाजिक समरसता : भारतीय समाज की आधारशिला



रीनू गुप्ता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता इसकी 'विविधता में एकता' है। इस विविधता को एक सूत्र में पिरोने वाली शक्ति 'सामाजिक समरसता' है। सामाजिक समरसता केवल एक अमूर्त विचार या दर्शन नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति की वह मजबूत आधारशिला है जिसने हजारों वर्षों से विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और विचारों को एकात्मकता, सौहार्द, सहिष्णुता एवं समन्वय के माध्यम से अक्षुण्ण बनाए रखा है , साथ ही यह भारत की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है-

"बिना सामाजिक न्याय और समरसता के किसी भी राष्ट्र का

वास्तविक एवं स्थायी विकास संभव नहीं है।"

भारतीय चिंतन परंपरा में सामाजिक समरसता की गूँज प्राचीन काल से ही सुनाई देती है। संस्कृत का कालजयी उद्घोष "वसुधैव कुटुम्बकम्" (संपूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है) इसी भावना को निरूपित करता है। समरसता केवल सह-अस्तित्व की मांग नहीं करती, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए न्याय, समानता और गरिमा की आधार है। इसी विचारधारा पर चलते हुए भारतीय समाज ने वैदिक काल से लेकर वर्तमान् समय तक अपनी समरसता को और मजबूत ही किया है। बदलते सामाजिक परिदृश्यों के साथ-साथ समरसता का आधार भी परिवर्तित हुआ है।

भारत में सामाजिक समरसता का स्वरूप समय के साथ निखरता और बदलता रहा है। जैसे वैदिक काल में समरसता का मूल आधार अध्यात्म और धर्म था, जहाँ समाज को कर्म के आधार पर वर्गीकृत कर एक समन्वित समाज की स्थापना की जिसमें स्त्रियों को भी विशेष महत्व प्राप्त था। इस काल में महिलाओं को उच्च बौद्धिक और सामाजिक स्थान प्राप्त था, लोपामुद्रा, गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियों से वैदिक काल में उनके श्रेष्ठ स्थिति का पता चलता है।

वहीं मध्यकालीन भारत में जब सामाजिक संरचना में जटिलताएँ और जातिगत कुरीतियाँ बढ़ने लगीं, तब भक्ति और सूफी स्तम्भों ने समाज में समरसता को पिरोने का कार्य किया। संत कबीर, गुरु नानक, संत रविदास और सूफी संतों ने अपनी रचनाओं और दोहों के माध्यम से समाज में व्याप्त जातिगत कुरीतियों एवं बाह्याडंबरों पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने समाज को यह संदेश दिया कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं।

औपनिवेशिक दौर में जब भारतीय समाज बाहरी और आंतरिक चुनौतियों से जूझ रहा था, तब अनेक समाज सुधारकों ने समरसता को पुनर्स्थापित करने का बीड़ा उठाया। राजा राममोहन राय, ज्योतिराव फुले, स्वामी विवेकानंद और डॉ. भीमराव आंबेडकर जैसे विचारकों ने सामाजिक कुरीतियों, अस्पृश्यता और महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई। डॉ. आंबेडकर ने स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता और समानता तब तक अधूरी हैं जब तक समाज में बंधुत्व यानी समरसता न हो।

21वीं सदी में तकनीक के तीव्र विकास ने सामाजिक समरसता के आयामों को पूरी तरह बदल दिया है। आज का युग डिजिटल क्रांति, उन्नत तकनीक और आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का युग है। जहाँ एक तरफ तकनीक ने संचार को सुगम बनाया है, वहीं दूसरी तरफ इसने 'डिजिटल डिवाइड' (आर्थिक व तकनीकी असमानता) जैसी नई चुनौतियों को भी जन्म दिया है।

आज भेदभाव का आधार केवल सामाजिक न रहकर आर्थिक स्थिति और संसाधनों व तकनीक की उपलब्धता बन चुका है। सोशल मीडिया के दौर में भ्रामक सूचनाएँ और घृणास्पद भाषण समाज में असहिष्णुता फैलाकर समरसता को नुकसान पहुँचा रहे हैं। ऐसे में सूचना की सत्यता को परखना और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक हो गया है ताकि सामाजिक सौहार्द बना रहे।

सामाजिक समरसता का प्रभाव केवल राष्ट्र की सीमाओं तक सीमित नहीं है। भारत की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की सोच ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश को एक नया मुकाम दिया है। भारत की बढ़ती आर्थिक प्रगति और वैश्विक मंचों पर मजबूत होती स्थिति के पीछे उसकी सांस्कृतिक विविधता और समरसता का बड़ा योगदान है। विश्व योग दिवस का पूरे विश्व में मनाया जाना इस बात का प्रमाण है कि भारत की जीवन शैली और दर्शन आज पूरी दुनिया को एकजुट कर रहे हैं। भारत ने हमेशा विदेशी परंपराओं और संस्कृतियों को आत्मसात कर 'जीओ और जीने दो' का वैश्विक संदेश दिया है।

निष्कर्षतः, सामाजिक समरसता भारतीय समाज की आत्मा और आधारशिला है, जिसने प्रारम्भ से ही इसकी अखण्डता और तेज को बनाए रखा है तथा अभी भी आगे का उज्जवल मार्ग प्रशस्त कर रहा है। सामाजिक समरसता आज केवल इतिहास का एक पन्ना नहीं, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण 'सोशल वैल्यू' (सामाजिक मूल्य) बन चुका है जो भारत को स्थानीय से लेकर वैश्विक मंच पर जगमगा रहा है। 'विकसित भारत @2047' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम सामाजिक और आर्थिक असमानताओं की खाई को पाटें। सामाजिक समरसता ही भारतीय समाज का मूल तत्त्व है, जो हमारे प्राचीन ऋषियों के इस उदात्त चिंतन में साक्षात दिखाई देता है-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥"

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

ऑफिस " यादों का कारवां " – और 'आख़िरी' शब्द का वो डर



आशुतोष कुमार
(आशुलिपिक ग्रेड-II)

यह ऑफिस सिर्फ काम की जगह नहीं, बल्कि एक परिवार की तरह है। रोज़ की छोटी-छोटी बातें, साथ की चाय, लंच और सुख-दुख बाँटना इस जगह को घर जैसा बना देता है। मुझे यहाँ काम करते हुए लगभग 3 वर्ष हो गए हैं। जब सोचता हूँ कि रिटायरमेंट वर्ष 2058 तक अभी लंबा सफ़र बाकी है, तो मन में एक अजीब कशमकश होती है। इस दौरान न जाने कितने लोग आएँगे-जाएँगे, कितने बदलाव होंगे, लेकिन इस यात्रा के शुरुआती दौर में बने ये दोस्त हमेशा सबसे ख़ास रहेंगे।

दिलों का मेल और जवानी के हसीन साल...

इस ऑफिस में देश के अलग-अलग कोनों और संस्कृतियों से आए लोग देखते ही देखते दिलों में बस जाते हैं। इसी छत के नीचे हमारी जवानी के सबसे अनमोल और ऊर्जावान साल दोस्तों के साथ बीतते हैं। काम का दबाव, हल्की-फुल्की बहसें, एक-दूसरे की टांग खींचना और किसी के उदास होने पर उसे हँसाना—यही पल इन वर्षों को सुनहरा बना देते हैं।

"दफ़्तर की इन मेज़ों पर हमने अपनी जवानी के सबसे हसीन साल लिखे हैं, अजनबियों को मिलाकर एक परिवार बनाया है; पर वक़्त की बहती नदी में आज एक खामोश सवाल तैर रहा है—क्या ये सुनहरा दौर कभी लौटकर आएगा?"

घर से ज़्यादा वक़्त और थकान का साझा इलाज...

हम अपने घर से भी ज़्यादा समय इस दफ़्तर की चहारदीवारी में बिताते हैं। पूरे सप्ताह के काम का दबाव और थकान इसी वर्क-फ़ैमिली के साथ हँसी-मज़ाक में हल्की हो जाती है। जब कोई मुश्किल फ़ाइल सामने आती है और कोई पास आकर कहता है—"चिंता मत कर भाई, मिलकर निपटा लेंगे", तो वही सहारा हमें नई ऊर्जा देता है।

अनिश्चित कल और शब्द से वो अनजाना डर...

ज़िंदगी का सफ़र अजीब है। आज हम साथ हैं, पर आने वाले वर्षों में सरकारी आदेशों, ट्रांसफर और बदलती परिस्थितियों के साथ न जाने कहाँ होंगे। विदाई का विचार मन को उदास करता है। सच कहूँ तो मुझे इस "आख़िरी" शब्द से एक अजीब सी नफ़रत है; इसे सुनते ही दिल में डर सा लगने लगता है।

"वक़्त की सबसे बड़ी ख़ामी यही है कि वह सबसे ख़ूबसूरत पलों को कभी ठहरने नहीं देता।"

भारी मन और यादों का अमर कारवां...

'आख़िरी' शब्द ऐसा लगता है जैसे कोई दरवाज़ा हमेशा के लिए बंद हो रहा हो। कल जो दोस्त हमारे बेहद करीब हैं, वे शायद किसी दूसरे शहर में हों और बातचीत कुछ औपचारिक फोन तक सिमट जाए। फिर भी जगहें बदलने या चेहरों के दूर हो जाने से दिल का जुड़ाव कम नहीं होता। इन गलियारों में गूँजे हमारे ठहाके और साथ बिताई यादें कभी मिट नहीं सकतीं।

जब भी हम आने वाले वर्षों में, साल 2058 के उस अंतिम पड़ाव पर पहुँचकर पीछे मुड़कर देखेंगे, तो इस दफ़्तर के ये तीन साल और ये चेहरे हमारी आँखों में नमी और चेहरे पर एक ख़ूबसूरत मुस्कान बनकर हमेशा तैरते रहेंगे।

"वक़्त का पहिया केवल आगे बढ़ता है, लेकिन यह दिल हमेशा पीछे मुड़कर इन सालों को अपनी ज़िंदगी का सबसे सुनहरा अध्याय कहेगा।"

...आशुतोष की कलम से..!

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

किताबों का सफ़र



उमाशंकर दूबे 'अनुज'
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

किताबें हमेशा से इंसान की हमसफर रही हैं। विभिन्न कालखंडों में किताबों ने तत्कालीन समाज, संस्कृति, राजनीति एवं अर्थव्यवस्था से दुनिया को परिचित कराया। अगर हम ये कहें कि किसी भी सभ्यता के विकास में किताबों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है, तो ये कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। किताबें मानव जीवन के अंधेरे में उस प्रकाश स्तंभ की भांति रहीं जिसके उजाले में हमने प्रगति का सफर तय किया।

किसी भी अन्य नवाचार की तरह किताबों की भी एक लंबी जीवन यात्रा है। आप उस कालखंड का चिंतन करें जब पहली बार किसी ने अपनी भावनाओं को लिखित रूप दिया होगा। वैसे तो लेखन का इतिहास लगभग 4500 ईसा पूर्व (करीब 6500 वर्ष पूर्व) के आसपास विकसित होना शुरू हो चुका था, किंतु वो भावनाओं के भौतिक प्रदर्शन की शुरुआत भर कही जा सकती है। जब मौखिक रूप से व्यक्त की गई बातों को लंबे समय तक याद रखना तथा इसे हु-ब-हू रूप में अगली पीढ़ी तक पहुंचाना दुष्कर प्रतीत होने लगा तो भावनाओं को संकेतों, चित्रों और शब्दों के जरिए व्यक्त करने का प्रयास प्रारम्भ हुआ।

कीलाक्षर लिपि का इतिहास : ऐसा माना जाता है कि लेखन का पहला प्रयास दक्षिणी मेसोपोटामिया के रहने वाले सुमेरिआई लोगों द्वारा लगभग 3500 ईसा पूर्व में प्रारंभ किया गया था। वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए चिकनी मिट्टी की तख्तीनुमा ठोस सतह पर एक नुकीले लेखनी की सहायता से कुछ संकेत उकेरते और उसे धूप अथवा आग की सहायता से शुष्क बना लेते। पूरी तरह से शुष्क हो जाने के बाद ये काफी दिनों तक संरक्षित रहते थे तथा सांकेतिक विचारों के प्रसार में सहायता करते थे। चूँकि इसके अक्षर कील के समान नुकीले होते थे, इस कारण भाषाई विद्वानों एवं इतिहासकारों द्वारा इसे कीलाक्षर लिपि की

किताबों से जुड़े कुछ प्रमुख शब्द

- Bibliophile: किताबों का प्रेमी (शौकीन)
- Bibliography: ग्रन्थ सूची
- Bibliology: पुस्तकों का अध्ययन
- Bibliomania: पुस्तकों से अत्यधिक प्रेम
- Bibliotherapy: पुस्तकों से मनोचिकित्सा
- Bibliotheca: पुस्तकालय
- Biblioclasm: पुस्तकों को नष्ट करने वाला
- Biblioklept: किताब चुराने वाला
- Bibliopole: पुस्तक विक्रेता
- Bookworm: किताबी कीड़ा
- Reading Nook: पढ़ने के लिए शांत
- Author: लेखक
- Publisher: प्रकाशक
- Editor: संपादक
- Plot: कथानक/कहानी का मुख्य आधार
- Genre: शैली (कहानियों के प्रकार)
- Best-seller: सर्वाधिक बिकने वाली किताब
- Bookmark: स्मरण हेतु लगाया गया चिन्ह
- Annotate: किसी आलेख में टिप्पणी लिखना
- Skim: सरसरी निगाह से पढ़ना
- Pour over: बारीकी से अध्ययन करना

किताबों से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब बाइबिल है। यह दुनिया में सबसे ज्यादा छपी प्रतियों वाली किताब है।
- टर्निप टाउन का टीनी टेड दुनिया की सबसे छोटी किताब है जिसका आकार 100×70 माइक्रोमीटर है।
- दुनिया के सबसे बड़े पुस्तक संग्रह का रिकॉर्ड जॉन क्यू. बेनहम के नाम है जिनके पास अनुमानित कम से कम 15 लाख पुस्तकें संग्रहित हैं।
- दुनिया की सबसे मंहगी किताब किताब लियोनार्डो दा विंची की कोडेक्स लेस्टर मानी जाती है जिसे बिल गेट्स ने नीलामी में 30.8 मिलियन डॉलर में खरीदी थी।
- पुस्तक प्रकाशन के मामले में अमेरिका, चीन और ब्रिटेन अग्रणी देश हैं।
- बाइबल दुनिया की सबसे अधिक अनुवादित पुस्तक है जिसका अनुवाद 3000 से अधिक भाषाओं में किया जा चुका है।
- मार्सेल प्राउस्ट द्वारा रचित ' इन सर्च ऑफ लॉस्ट टाइम' विश्व का सबसे लंबा उपन्यास माना जाता है, जिसमें करीब 3 लाख से अधिक शब्द हैं| वहीँ सबसे छोटी कहानी ऑगस्टो मॉन्टेरोसो की कहानी 'द डायनासोर' को माना जाता है।
- संयुक्त अरब अमीरात के अबू धाबी के रहने वाले सईद राशिद अलमहेरी किताब प्रकाशित करने वाले दुनिया के सबसे कम उम्र के व्यक्ति हैं। उन्होंने 4 साल 218 दिन की उम्र में 'द एलीफैंट सईद एंड द बेयर' प्रकाशित किया था।

संज्ञा दी गई। इस प्रकार, सुमेरियाई लोगों द्वारा मानव सभ्यता के प्राचीनतम ज्ञात लेखन शैली का विकास किया गया था।

पैपाइरस लेखन पद्धति : यह हस्तलेखन की आरंभिक पद्धतियों में से एक मानी जाती है। पैपाइरस एक प्रकार का कागज था, जिसका उपयोग प्राचीन मिस्र में लेखन के लिए किया जाता था। यह एक जल में उगने वाले पौधे 'पैपाइरस' की तनों से बनाया जाता था। पैपाइरस के तनों को काटकर, उनकी पतली परतें निकालकर, उन्हें एक-दूसरे के ऊपर रखकर दबाया जाता था और सुखाया जाता था। इससे एक चिकनी सतह वाला कागज जैसा पदार्थ बनता था, जिस पर लिखना आसान होता था। इसपर लिखने के लिए नरकट को काटकर कलम बनाई जाती थी, जिसे 'रीड पेन' कहा जाता था। स्याही के रूप में मुख्य रूप से कालिख तथा आयरन-ऑक्साइड या रेड ओकर का उपयोग किया जाता था। इस पद्धति का उपयोग मुख्य रूप से मिस्र, यूनान और रोम के लोग अपने दस्तावेज़, ग्रंथ और पत्र लिखने के लिए करते थे। इसे पढ़ते समय एक तरफ से खोलना और दूसरी तरफ से लपेटना पड़ता था। यह कागज की खोज से पहले का सबसे लोकप्रिय लेखन माध्यम था।

ताड़पत्र और भोजपत्र : प्राचीन काल में भारतीय उपमहाद्वीप विशेषकर दक्षिण भारत में ताड़पत्र का उपयोग एक प्रमुख लेखन माध्यम के रूप में प्रचलित था। इस हेतु ताड़ के पेड़ों के पत्तों को पहले सुखाया जाता था फिर उन्हें उबालकर और चिकना करके उन पर लोहे की कलम से अक्षर उकेरे जाते थे। अंत में उन पर कालिख या स्याही लगाई जाती थी ताकि अक्षरों में रंगीन उभार प्रदर्शित हो सके।

इसी प्रकार मुख्यतः हिमालय और उसके आसपास के क्षेत्रों में उगने वाले भोज वृक्षों के छाल यानी भोजपत्र का इस्तेमाल भी पहली शताब्दी के आसपास प्रारंभ हुआ जिसे प्राचीन पांडुलिपियों को लिखने के लिए उपयोग में लाया जाता था। धर्म, दर्शन, खगोल एवं इतिहास लेखन के क्षेत्र में सदियों तक भोजपत्र एक प्रमुख माध्यम रहा। कालिदास, सुश्रुत, चरक, वराहमिहिर आदि ने पांडुलिपियों के माध्यम से भारतीय इतिहास एवं दर्शन को एक नई दिशा दी।

कागज का आविष्कार एवं प्रसार : ऐसा माना जाता है कि कागज का आविष्कार सर्वप्रथम चीन के लेई-यांग प्रांत में एक दरबारी व्यक्ति 'त्साई' द्वारा किया गया था। इस प्रक्रिया में संभवतः शहतूत की छाल और भांग की लुगदी बनाकर तथा उसे निचोड़कर एक चटाई के रूप में तैयार किया जाता था तथा इसे सूखने के लिए धूप में लटका दिया जाता था। सूखने के बाद ये लेखन हेतु एक उपयुक्त सामग्री के रूप में उपलब्ध होता था।

चीन में कागज के आविष्कार के बाद यह शिल्क रूट यानी रेशम मार्ग के जरिए पहले मध्य पूर्व और फिर यूरोप तक पहुंचा। आविष्कार के लगभग 800 साल बाद यूरोप के स्पेन में पहले कागज मिल की स्थापना हुई। मिलों में कागज का उत्पादन शुरू होने से धर्मग्रंथों, सार्वजनिक महत्व की पुस्तकों तथा अन्य अभिलेखों की छपाई का प्रचलन तेजी से बढ़ा। चौदहवीं शताब्दी में गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के साथ ही हाथ से लिखने की दुष्कर प्रणाली को एक नया विकल्प मिला और अब किसी भी लेखन सामग्री की सैकड़ों प्रतियों को एक साथ छापा जा सकता था। 19 वीं सदी में औद्योगिक क्रांति के दौरान नई तकनीकों के विकास से छपाई ज्यादा आसान हुई जिससे किताबों का वैश्वीकरण संभव हो सका। छपाई लागत कम होने से किताबें सस्ती हुई। अब आम इंसान भी अपने जेब खर्च की कीमत पर किताबें खरीद और पढ़ सकता था। वर्तमान समय में भी भौतिक रूप से छपी किताबें ज्ञान प्राप्त करने की सर्वाधिक प्रचलित स्रोत हैं।

डिजिटल ई-बुक : ई पुस्तक से हमारा तात्पर्य एक ऐसे डिजिटल फाइल से है जो किसी इलेक्ट्रोनिक उपकरण के स्क्रीन पर किसी मुद्रित पुस्तक के समान पढ़ी जा सके। ये किसी मुद्रित पुस्तक का डिजिटल रूप भी हो सकता है जिसे अलग-अलग प्रारूप में डाउनलोड कर संरक्षित किया जा सके। ई पुस्तकों की दिशा में पहला प्रयास सन 1971 में प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग के तहत अमेरिका में हुआ। 1990 में पर्सनल डिजिटल असिस्टेंट, जो आज के टैबलेट और स्मार्टफोन का एक पूर्ववर्ती रूप था, ने इसकी लोकप्रियता में वृद्धि की। 2007 में अमेजन द्वारा 'किंडल' नामक ई पुस्तक लाया गया जिसने डिजिटल बुक के अनुभव को ज्यादा रोचक एवं सुविधाजनक बना दिया। उपयोगकर्ता इसमें ई-फाइल के कई रूपों को न केवल पढ़ सकते हैं बल्कि इसमें अक्षरों को छोटा या बड़ा करने तथा स्क्रीन के प्रकाश को भी परिवेश के अनुसार कम अथवा ज्यादा करने का विकल्प मिलता है।

ऑडियोबुक्स : ऑडियोबुक्स को किसी पुस्तक अथवा रचना का मौखिक संस्करण कहा जा सकता है। वैसे तो बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही ऑडियो रिकॉर्डिंग प्रचलित होने लगी थी किन्तु 'ऑडियोबुक' शब्द का इस्तेमाल सर्वप्रथम 1970 के दशक में किया गया जब कहानियों एवं कविताओं के रिकार्डेड कैसेट लोगों के द्वारा पसंद किये जाने लगे। यूरोप के व्यस्त जीवनशैली में पढने के बजाये सुनने वाली किताबों का प्रचलन धीरे-धीरे बढ़ने लगा। भारत में ऑडीबल, कुकू एफ.एम., स्टोरी टेल, पॉकेट एफ.एम. आदि प्लेटफ़ॉर्म अपने सब्सक्राइबर्स के लिए कई रोचक कहानियों एवं घटनाओं को ऑडियो फॉर्म में प्रस्तुत करते हैं जिन्हें हाल के समय में काफी लोकप्रियता मिली है। लोग इन्हें यात्राओं के दौरान, व्यायाम के दौरान तथा कार्यस्थल पर मुख्य रूप से इस्तेमाल करते हैं ताकि खाली समय का सदुपयोग हो सके।

Dedicated to Truth in Public Interest

निष्कर्षतः विकास के विभिन्न चरणों की अग्निपरीक्षा उत्तीर्ण कर आज किताबें समाज की बौद्धिक नींव रखने में अपनी मुख्य भूमिका निभा रही हैं। ये आज भी इतिहास, दर्शन, विज्ञान, खगोल और संस्कृति की सबसे विश्वसनीय स्रोत हैं। वैज्ञानिक शोध इस ओर इशारा करते हैं कि नियमित पठन से मस्तिष्क की कोशिकाएं सक्रिय रहती हैं, जिससे याददाश्त और विश्लेषणात्मक सोच में सुधार होता है। किताबें हमें साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नता से परिचित कराती हैं, ताकि हम स्वयं को परिष्कृत कर सकें। विश्व के महान हस्तियों एवं महापुरुषों की जीवनी पढ़कर युवाओं को सही दिशा और प्रेरणा मिलती है। अतः पुस्तकें उन खिड़कियों की तरह हैं जिनसे हम दुनिया को एक नए नज़रिए से देख सकते हैं।

नदियां



अर्चना गुप्ता
बहन सुश्री रीनू गुप्ता रीनू गुप्ता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कुछ नदियां कितनी शांत होती है
शांत बिल्कुल शांत
इतनी शांत की एक छोटा सा पत्थर
झकझोर देता है
उनके मन को।

लेकिन, क्या कभी शांत नदी की गोद मे
पनपते तूफ़ानों को महसूस किया है?

शांत नदी जितनी सरल नज़र आती है,
उतनी सरल तो उसकी धाराएं भी नही होती

उफनती नदियों को पार पाना आसान है
वो ठीक वैसी ही होती है
जैसे एक छोटा बच्चा खिलौनों की जिद करता है
पा लेना चाहता है उसकी नजरों से गुज़री हर चीज़

उछलती कूदती शोर मचाती
हिलोरे मारती पत्थरों को छेड़ती
अपनी ही धुन मे मस्त
उन्हें किसी की परवाह नहीं होती

लेकिन शांत नदियां उम्र के उस पड़ाव पर होती है
जहां उनमें स्थिरता आ जाती है
समय के साथ जैसे हम खो देतीं है अपना अल्हड़पन
वो तय कर चुकी होती है एक लंबा सफर

जो सिखा देता है उन्हें जीवन की सच्चाई
वो नज़र आता है उनके व्यवहार में
कैसे दुखों का बोझ
उनकी रफ्तार को धीमा कर देता है

वो अब अठखेलियाँ नहीं करती
उन्हें चिंता होती है अपने वज़ूद की
वो शांत होकर चिंतन करती है

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्यूँ उन्होंने चुना सिर्फ दुखों को अपने अंदर?
कभी कभी पश्चताप के उनके आंसु

लांघ जाते है सारी सीमाएं
उनके अंदर का दर्द
क्रोध बन बाहर निकलता है
और उजाड़ देता है कई बस्तियाँ

क्रोध जोड़ता है उनके दुखों मे
एक और दुख
वो फिर से हो जाती है
उतनी ही शांत
जितना शांत होता है
एक हारा हुआ मन

लेकिन भूल जाती हैं वो शायद
तप कर ही तो सोना चमकता है
बिना वक़्त से लड़े तो
हीरा भी कोयला होता है

लड़ना होगा उसको भी
वक़्त से हालात से
तब जाकर कहीं शाश्वत होंगी
उनकी धाराएं

जो नहीं लड़ता अपने लिए
अपने वज़ूद के लिए
वो खो देता है दुखों के बोझ तले
वक़्त की आँधियों में टिक नहीं पाता
जैसे नदियां खो देती है
अपना वज़ूद रेतीली जमीन पर।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नज़्म



अमित कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बे-हिसाब झेली हैं इस जिंदगी में दुशवारियां हमने।

मैं हुआ हर बार खतावार उसका जो करी गलतियाँ तुमने।

इक बार भी कोशिश न की तुमने मेरे दिल में झांकने की,

और तेरे इश्क में लुटा दीं न जाने कितनी जिंदगियां हमने।

सीने से लगाए बैठा हूँ सारे वो गम जो मुझको दिए तूने,

औरों के लिए गुनाह है मेरी नजर में की हैं नादानियाँ तुमने।

हम कल भी तेरे थे आज भी तेरे हैं मगर फासला है कि,

कभी बेफिक्र थे अब समेट ली हजारों बेचैनियाँ हमने।

ये "खामोश " इश्क का समुन्दर और मेरे दिल की दुआ,

डूब जाए हर कोई वहां तक जो देखी हैं गहराईयाँ हमने।

बिछड़ कर हुए हम दूर जरूर फिर भी तू मेरे पास है।

किया हर वक़्त ये एहसास कि तू मेरे आस पास है।

कोई ख़ुशी ही नसीब न हुई मुझे जब तू ही न मिली मुझे,

दिल में बहुत शोर है मेरे अफ़सोस सब बे-आवाज है।

मुद्दतें गुजर गईं कभी मिले थे उस शख्श से,

जो हर रोज आता जाता मेरे आईने के पास है।

दो पल सकूँ पाने के लिए क्या- क्या न किया हमने,

मेरा सब कुछ तो गिरवी पड़ा तेरे पास है।

ये वीरान "खामोश "जिन्दगी किस काम आएगी भला,

लुटाते जा रहे इश्क में हर इक सांस जो मेरे पास है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कुछ अशआ'ऱ



अमित कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

(1) कुछ इस कदर बढ़ गईं हैं मेरी बेचैनियाँ "खामोश ",
न देखूँ तो बेचैनी तुमको देखूँ तो बेचैनी।

(2) देखता हूँ जो सबाब ए हुस्न "खामोश,"
उठती है तलब कुछ पी लूँ जाकर।

(3) कभी थमा ही नहीं ख्वाहिशों का सिलसिला "खामोश,"
एक और ये ख्वाहिश कि कोई ख्वाहिश न रहे।

(4) राज भी अब राज नहीं रहते "खामोश ",
हुस्न के चर्चे अब अदाएं करती हैं।

(5) मैं रोज पीता हूँ मय, जीने के लिए,
और मैं रोज जीता हूँ, मय पीने के लिए।

(6) रूबरू हुआ जो हकीकत से "खामोश",
फिर वास्ता ही न रहा कभी हकीकत से कोई।

(7) इतना लूटा इस जामने ने हमें "खामोश",
कुछ न रहा मेरे पास सिवाय एक सच के।

(8) ये शोर कह रहा है इस "खामोश" समुन्दर का,
तू इत्तफाक रख मुझसे, मेरे तूफ़ाँ से तबाही ही होगी।

(9) क्या बात करूँ मैं हुस्न वालों की ए दोस्त,
बड़ा शोर मचाती हैं उनकी "खामोश " अदाएँ।

(10) चलता ही जा रहा हूँ अकेले "खामोश " ऐसी राह पर,
जहाँ मैं ही हूँ साथ मेरे और मैं ही मेरा हमसफ़र भी।

(11) हैं तो शरीक सारे इसमें पर ये महफिल "खामोश" है,
सुन सको अगर खामोशियाँ तो यहाँ बहुत शोर है।

(12) दोस्ती हो या फिर दुश्मनी "खामोश" बड़ी शिद्दत से कीजियेगा,
मगर रखना इतना ख्याल कि जो भी हो खुलेआम ये कीजियेगा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

(13) वो इश्क ही क्या जिसमें बर्बाद न हो,
दिल इस कदर जले कि राख़ न हो।

(14) मेरा कुछ भी बोलना गुनाह हो गया "खामोश",
वो हंगामा भी गर खड़ा करे तो कोई बात नहीं।

(15) लफ्जों पर बंदिशे ही सही मगर इशारों से इजहार तो कर,
नाकाम हुआ तो क्या हुआ मुहब्बत में कुछ काम तो कर।

(16) हर बार नया चेहरा हर वक़्त इक नया वजूद,
इंसान ने आईने को भी हैरत में डाल रखा है।

(17) शोर -ए- शहर ये कह रहा है "खामोश",
तलाश रहा खुद को भागते हुए आदमी।

ये मेरी मौलिक रचनायें हैं।



दोस्ती



कीर्ति मेहरा
आशुलिपिक

दोस्ती एक शब्द नहीं,
एक एहसास है दोस्ती |
जिनके हों सच्चे दोस्त,
उनके लिए खास है दोस्ती ||

बचपन में, खुला आसमान है दोस्ती |
लड़कपन में, जान है दोस्ती ||
पचपन में, परिवार है दोस्ती |
जीवन में, हमराज़ है दोस्ती ||

गम की धूप में,
शीतल छांव है दोस्ती |
मन की उलझन में,
राहत की साँस है दोस्ती |
गैरों की भीड़ में,
अपनी मुस्कान है दोस्ती ||

राह सही जो दिखलाये,
वो प्रकाश है दोस्ती |
जिनके हों सच्चे दोस्त,
उनके लिए खास है दोस्ती ||



हमसफ़र



कोमल भारतीय
लिपिक

जब राहों ने हर स्वप्न का दर्पण चूर किया,
मेरे आत्मबल ने फिर साहस का सूरज भर दिया।
विपदाओं की धधकती अग्नि में जब मन तपता रहा,
विश्वास का कमल हर पीड़ा के जल में खिलता रहा।

मैंने न भाग्य की देहरी पर कभी शीश झुकाया,
अपने श्रम से ही जीवन का स्वर्णिम प्रभात सजाया।
हर असफलता ने मुझे ऊँचाइयों का मंत्र सुनाया,
हर आँसू ने धैर्य का अमृत बनकर साथ निभाया।

अब किसी हाथ की प्रतीक्षा नहीं, न किसी किनारे की आस,
मेरा हमसफ़र है मेरा अडिग साहस, मेरा अटल विश्वास।
जो स्वयं को जीत ले, जग उसके चरण चूमता है,
अँधेरा भी उसी के आगे दीपक बनकर झूमता है।

मैं ही अपनी उड़ान, मैं ही अपने गगन का विस्तार हूँ,
मैं ही संघर्ष का संगीत, मैं ही विजय का उद्घोष हूँ।
जब तक आत्मविश्वास हृदय में दीप-सा जलता रहेगा,
तब तक मेरा हमसफ़र बन, मेरा भविष्य संवरता रहेगा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

ये जीवन सरल नही होता



मीनू श्रीवास्तव

ये जीवन सरल नही होता,
सरल बनाना पड़ता है,
नित जीवन के संघर्षो में ,
खुद को तपना पड़ता है

मोह माया के बंधन को ,
मानव जीवन की काया को ,
सब छोड़ के जाना पड़ता है,
सोना चांदी हीरा मोती ,
धरा का कोई मोल नही ,
खाली हाथ आये है ,

खाली हाथ जायेंगे,
मिट्टी की हम मूरत है ,
मिट्टी में मिल जायेंगे,
जब तक सांसे चलती है ,
नित जीवन के पल बढते है ,

कर्मभूमि,कर्तव्यनिष्ठा से ,
पथ पर हर पल बढते है ,
विपदाओ के घेरे हो ,
या फिर दुःख की छाया,
नित जीवन निरंतर हम,

कर्तव्यनिष्ठा से पथ पर चलते है ,
सत्यनिष्ठा और परिश्रम से ,
निज जीवन सफल बनायेंगे ,
धरती माता की खातिर हम ,
अपनी जान गवांगे |

COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA
INSTITUTION OF INDIA
सत्यनिष्ठा
Truth in Public Interest

'कोई कविता बन जाती है'



संध्या श्रीवास्तव
(डॉ. सतीश कुमार श्रीवास्तव 'नैतिक')

जब मन में उठती हैं लहरें
और बाढ़ आँख में आती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

ये शब्द नहीं हैं मोती हैं
दुख के सागर के सीपी के
कवि ने तो कविता रची मगर
आँसू का अमृत पी-पी के

मन से पढ़कर समझो इसको
यह अद्भुत पाठ पढ़ाती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

जब दौर बुढ़ापे का आए
और डसने लगे अकेलापन
ये भाई-बहन, बेटे-बेटी
भी बन जाएँ जानी-दुश्मन

जब खून के रिश्तों में दौलत
खूनी दीवार उठाती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

जब महल और झोपड़पट्टी
की खाई बढ़ती ही जाए
कहीं फेंका जाए मालपुआ
कोई कचरे से रोटी खाए

जब डायन बनकर भूखमरी
निर्धन का पेट जलाती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

जब-जब दहेज के चक्कर में
बहुओं को जलाया जाता है
जब-जब किसान को साहुकार
हर दिन आकर धमकाता है

कर्ज़ा अदायगी की चिंता
जब फ़ाँसी पर लटकाती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

जब अहं के चंगुल में फंसकर
हम खुद में ही खो जाते हैं
जब स्वार्थ के होकर वशीभूत
हम भूल वयम् को जाते हैं

जब मृग-तृष्णा जैसी इच्छा
हमको दर-दर भटकाती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

जब जाति-धर्म और मज़हब के
दंगे फैलाए जाते हैं
गीता-कुरान, मंदिर-मस्ज़िद
जब आपस में टकराते हैं

मतलबी सियासत जब 'नैतिक'
जमकर दंगे फैलाती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

जब मन में उठती हैं लहरें
और बाढ़ आँख में आती है
तब कोई कवि जन्म लेता
कोई कविता बन जाती है

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

महानगर के पाँव



संध्या श्रीवास्तव
(डॉ. सतीश कुमार श्रीवास्तव 'नैतिक')

पहली ही बारिश में फूले
महानगर के पाँव
कैसे करें बचाव

कल तक धूप से त्राहिमाम था
आज है पानी-पानी
सबकुछ बिखरा पड़ा टूटकर
क्या-क्या कहें कहानी

नाले भी नालायक निकले
करते उल्टा काम
सड़कों पर पानी बहता है
सुबह, दोपहर, शाम

जल जमाव में फंसी व्यवस्था
खोज रही है नाव
कैसे करें बचाव

खड़े पेड़ आंधी से उखड़े
बीच सड़क पर आए
यातायात सिपाही सीटी
मारे, हाथ हिलाए

वाहन आवागमन की हालत
हद से ज्यादा खस्ता
निगम प्रशासन पेड़ काटकर
खोल रहा है रस्ता

कहीं सड़क पर गड्ढे मिलते
जल का कहीं जमाव
कैसे करें बचाव
बिजली कड़की, आसमान में

काले बादल छाए
बिजलीकर्मी काट के बिजली
निश्चिंत सो जाए

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चारो ओर है घोर अंधेरा

परेशान सब घर पर
चट चट, चट चट, पट पट, पट पट
मार रहे हैं मच्छर

कागज पर फल-फूल रहा है
दवा-धुआँ छिड़काव
कैसे करें बचाव

परेशान है महानगर की
बहुत बड़ी आबादी
इधर-उधर हर जगह दिख रही
है जमकर बर्बादी

आँधी-पानी-बिजली से सब
परेशान बस्ती में
राजनीति की चाँदी है
नौकरशाही मस्ती में

रुका हुआ महानगर गिन रहा
अपने सारे घाव
कैसे करें बचाव

जनता के संग मंत्री-नेता
स्वार्थ भाव रखते हैं
अवसर मिले आपदा में भी
तभी चाव रखते हैं

राशन-टेंडर इक्का-दुक्का
मगर बाढ़ चौका है
सड़कें धँसना, पुल गिर जाना
बहुत बड़ा मौका है

जल्दी ही लाएँगे मेयर
फिर नवीन प्रस्ताव
कैसे करें बचाव

COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धरती माता



सुधीर कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/1440

धन्य है धरती माता जिस पर सारे जीवों ने जन्म लिया

धन्य है धरती माता जिसने सारे जीवों को शरण दिया

धरती है तो जंगल, पहाड़ और नदियाँ है

धरती है तो खेत खलिहान और वादियां है|

धरती है तो हर जीवों का जीवन है

धरती है तो काशी, मथुरा व्रन्दावन है|

धरती हमारी धरोहर है इसके संरक्षक हर नर नारी है

धरती को बचाने की हर मानव की जिम्मेदारी है|

आज धरती को नाश करने का मानव विनाश की ओर बढ़ रहा है

धरती को प्रलय करने का खुद षडयंत्र गढ़ रहा है|

धरती को बचाना है तो इसे युद्ध की भूमि मत बनाओ

इसे स्वर्ग बनाना है तो इसे मानवता की भूमि बनाओ |

हे मानव अब चेत जाओ धरती ही हम सब की माता है

धरती से ही हर प्राणी है जन्म जन्म का नाता है

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

बचपन छीनता मोबाइल



सुवीर पाण्डेय
लेखापरीक्षक//2366

कभी गली में खेला करते,
कभी पेड़ों पर चढ़ते थे,
मिट्टी में खुशियाँ ढूँढ़ा करते,
खिलखिलाकर हँसते थे।
अब हाथों में मोबाइल है,
आँखों में इसकी चमक,
खेल-कूद सब दूर हुए,
बढ़ गई स्क्रीन की ललक।
न दादी की अब प्यारी बातें,
न नानी की कोई कहानी,
मोबाइल में खोकर भूले,
बचपन की वो दुनिया सुहानी।
मैदानों में सन्नाटा है,
कमरों में शोर निराला,
छोटी-सी इस स्क्रीन ने,
बचपन हमसे छीन डाला।
आओ फिर से खेलें मिलकर,
कंचे, गिल्ली-डंडा,
पेड़ों की छाँव में बैठें,
मन हो जाए फिर से ठंडा।
मोबाइल रहे जरूरत भर,
बन न जाए जीवन का मालिक,
बचपन फिर मुस्काए अपना—
यही पुकार है आज की बालक!

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गुजरते बसंत, बदलती दुनिया



सुवीर पाण्डेय
लेखापरीक्षक//2366

गुजरते बसंत के संग-संग,
बदल रही है दुनिया सारी,
कल तक जो थी अपनी-सी,
आज लगे कुछ अनजानी।
कभी पेड़ों पर झूले थे,
आँगन में हँसी बिखरती थी,
मिट्टी की खुशबू आती थी,
चिट्ठी से खबरें मिलती थीं।
अब ऊँची इमारतें हैं,
शीशे के बंद मकान,
हाथों में पूरी दुनिया है,
फिर भी दिल क्यों है वीरान?
कभी सूरज के संग जागे,
चाँद के संग सो जाते थे,
तारों की गिनती करते-करते,
सपनों में खो जाते थे।
अब सूरज से पहले स्क्रीन जगे,
रातें भी रोशन रहती हैं,
पास खड़े इंसान दूर हुए,
दूरियाँ फिर भी बढ़ती हैं।
कभी रिश्ते मिलने से बनते थे,
अब संदेशों में ढलते हैं,
आँखों से आँखें मिलती थीं,
अब इमोजी दिल की बात कहते हैं।
फिर भी हर गुजरता बसंत,
कुछ नई उम्मीदें लाता है,
सूखी डालों पर हरियाली का,
एक नया गीत सुनाता है।
दुनिया बदले, मौसम बदले,
बदले जीवन के रंग,
पर बचा रहे मन में इंसान,
और रिश्तों में सच्चा संग।
चलो समय के साथ चलें हम,
पर इतना ध्यान रहे—
तकनीक बढ़े, संसार बढ़े,
पर दिल इंसान रहे।
गुजरते बसंत से पूछो,
क्या खोया, क्या पाया हमने?
बदलती दुनिया के बीच कहीं,
क्या खुद को बचाया हमने?
बसंत तो हर साल आएगा,
फिर फूल खिलेंगे डालों पर,
पर बचपन, रिश्ते, बीते पल—
न लौटेंगे इन राहों पर।
इसलिए इस बदलती दुनिया में,
थोड़ा ठहरना भी सीखें,
गुजरते बसंत की खुशबू को,
दिल में भरना भी सीखें।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चार कविताएं

1



प्रमोद रंजन
श्री नील श्री वास्तव सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के संबंधी

तेल बाती ना हो तो भी बुझ जाता है दीया
हर बार बहती हवा कसूरवार नहीं होती।

हकीम की न मानो तो भी जा सकती है जान
हरदम ज़हर या दवा क़सूरवार नहीं होती।

सदियों से हमने ही बांट रखे हैं अपने भगवन
किसी मजहब की सदा कसूरवार नहीं होती

ख़ुद पर ज़्यादा यकीन से भी हो जाते हैं हादसे
हर बार दूसरे की खता कसूरवार नहीं होती

साथी ग़लत मिल जाए तो भी बहक जाते हैं हम
हर सफ़र या रास्ता क़सूरवार नहीं होती।

वहशी नियतों से भी नाकाम हुई है मोहब्बत
हमेशा महबूब की अदा क़सूरवार नहीं होती।

अपनी नादानियों से भी कभी अनजान रहे हम
हर बार ख़बर या पता क़सूरवार नहीं होती।

बुजदिली ने भी हमारी राह में रोड़े बिछाए हैं
रोज़ लिहाज या हया क़सूरवार नहीं होती।

जो हाल तुम्हारा है वो तेरे कर्मों का फल है
कभी बद्दुआ या दुआ कसूरवार नहीं होती।

ख़ुदकुशी की चाह में परवाने जल जल मरे
हर बार जलती शमा क़सूरवार नहीं होती

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

2

अब और ना देश का नुक़सान कीजिए
हर बात में ना हिंदू मुसलमान कीजिए।

दोनों हाल में प्यार भाईचारे की है बात
चाहे बोल में भैया या भाईजान कीजिए।

बंदगी खुदा की हो या पूजन भगवान का
है एक ही बात भजन या अजान कीजिए।

मजहब चाहे कोई हो सियासत में न लाइए
वोट के नाम पर ना राम रहमान कीजिए।

धरम करम के नाम पर चन्दा ना डकारिये
ना शोहरत की खातिर कोई दान कीजिए।

बाजे गाजे नाच शोर को इबादत से ना जोड़िए
भक्तों के खातिर बहरा ना भगवान कीजिए।

दरिंदगी की भेंट चढ़ी अबोध और आपको
कैसे नींद आ गई आकर सबकी शंका का समाधान कीजिए।

कुछ कर नहीं सकते तो फिर गद्दी छोड़िए
इस तरह भी मुल्क पर एहसान कीजिए।

राधा हो हरप्रीत हो या मरियम के जुबैदा
हो कोई भी नाम बेटियों का सम्मान कीजिए।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

3

अब और ना देश का नुक़सान कीजिए
हर बात में ना हिंदू मुसलमान कीजिए।

दोनों हाल में प्यार भाईचारे की है बात
चाहे बोल में भैया या भाईजान कीजिए।

बंदगी खुदा की हो या पूजन भगवान का
है एक ही बात भजन या अजान कीजिए।

मजहब चाहे कोई हो सियासत में न लाइए
वोट के नाम पर ना राम रहमान कीजिए।

धरम करम के नाम पर चन्दा ना डकारिये
ना शोहरत की खातिर कोई दान कीजिए।

बाजे गाजे नाच शोर को इबादत से ना जोड़िए
भक्तों के खातिर बहरा ना भगवान कीजिए।

दरिंदगी की भेंट चढ़ी अबोध और आपको
कैसे नींद आ गई आकर सबकी शंका का समाधान कीजिए।

कुछ कर नहीं सकते तो फिर गद्दी छोड़िए
इस तरह भी मुल्क पर एहसान कीजिए।

राधा हो हरप्रीत हो या मरियम के जुबैदा
हो कोई भी नाम बेटियों का सम्मान कीजिए।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

4

आज बहुत दिनों के बाद किताबों की अलमारी
साफ़ करते करते हाथ लगी एक किताब पुरानी
सोचा अब सब काम छोड़ता हूँ
पहले इसे फिर से पढ़ता हूँ

ऐसा विचार जैसे ही मेरे मन में उठा
में अपनी मैं बालकनी में आ बैठा
किताब विश्व की महान महिलाओं पर थी
सती सावित्री से ले कर मदर टेरेसा तक

पन्ना धाई से लेकर रानी लक्ष्मीबाई तक
उनके गुणगान में थे
यानि सारे पन्ने नारियों के सम्मान में थे
इतने में मेरी नजरें सामने पड़ी

बन रही थी एक बहुमंज़िली इमारत बड़ी
एक आदिवासी महिला सर पर आठ ईंट लेकर
चल रही थी आपने कदम साध कर
और पीठ पर रखा था

अपने दूधमुँहे बच्चे को बांध कर
उस वक्त तो उसका हाल बुरे से बुरा था
जब वो बच्चे को दूध पिलाने के लिए रुकी
और ठेकेदार ने उसे टेढ़ी नज़रों से घूरा था

मुझे लगा उसके किरदार में क्या
मदरटेरेसा या पन्ना धाई का तेज नहीं था
फिर क्यों मेरे हाथ की पुस्तक में
उसके नाम का पेज नहीं था
अक्सर मेरे मन को ये बात सालती है

जब आदर्शों की बात होती है
तो कवि सूर्यकांत निराला की कल्पना की
वो औरत की क्यों छूट जाती है
जो गर्मी की चिलचिलाती धुप में
इलाहाबाद के सड़कों पर पत्थर तोड़ती है
और अपने भूखे बच्चे का पेट पालती है

हमारी पुरानी जिंदगी



जितेन्द्र कुमार
एम टी एस

जब समय था, जिंदगी बहुत आसान लगती थी। ना पैसों की चिंता थी, ना भविष्य का डर।

बस दोस्त थे, स्कूल और छोटी-छोटी बातों में खुशी मिल जाती थी। बारिश में भीगना,

बिना वजह हसना, और रात को बिना किसी टेंशन को सो जाना, शायद वही असली सुकून था।

लेकिन समय के साथ सब बदल गया। दोस्त दूर हो गए, जिम्मेदारी और मुस्कान के पीछे कई परेशानियां हुए गई। आज जब वो अपनी पुरानी तस्वीरें देखता तो चेहरे पर मुस्कान आ जाती है, लेकिन दिल में एक दर्द भी होता है।

क्योंकि कुछ चीजें वापस नहीं आती और उनमें सबसे खूबसूरत चीज होती है हमारी पुरानी जिदगी।

स्कूल की असली कीमत

जब स्कूल में थे. तब छुट्टी का इंतजार करते थे। जब स्कूल खत्म हुआ, तब उसी स्कूले को याद करने रने लगे।

जब वहां थे, तो उर जल्दी बड़े होना चाहते थे। और जब बड़े हो गए, तो फिर से बच्चा बनने की ख्वाहिश होने लगी। शायद जिंदगी का सबसे बड़ा मजाक यही है।

जिस समय को हम जल्दी छोड़ना चाहते है, आज बाद में उसी समय को सबसे ज्यादा याद करते है। आज अगर कोई पूछे कि, जिंदगी का सबसे खूबसूरत दौर कौन साथा? तो बिना सोचे एक ही जवाब होगा "स्कूल वाले दिन "

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सीख जिन्दगी की



सुमन केशरी
सहा. पर्यवेक्षक

वक्त का पहिया चलता है,

जिन्दगी में सब कुछ बदलता है।

जो सीख किताबों से न मिली,

वो सीख जिन्दगी ने दे दी।

लोगों ने तमाम चेहरे पे चेहरा लगाया है,

वक्त ने चेहरे पर से चेहरे का नकाब उतार दिया।

जो सीख किताबों से न मिली,

वो सीख जिन्दगी ने सिखा दिया।।

जिन्दगी की कसमकस में, उलझने बहुत हैं।

परेशानियाँ और दिक्कते अपार हैं,

मजाल है मैं, उनके आगे घुटने टेक दूँ।

इम्तहाँ लेने वाले तू, कड़ी से कड़ी इम्तहाँ ले ले,

इक दिन मेरे हौसले के आगे, मुश्किलें झुक जायेंगी।

ऐ जिन्दगी सफलता कदम चूमेगी।

जो सीख किताबों से न मिली,

वो सीख जिन्दगी ने सिखा दी।।

हमें हम पर विश्वास है,

इक दिन कामयाबी जरूर मिलेगी।

सोने को अग्नि में जितना तपाया जाता है,

उसका रंग उतना निखरता है।

COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मैं इक सुमन हूँ,

ऊपर वाले तेरे दिल में घर कर लूँगी।

कठोर से कठोर कड़ी से कड़ी, परीक्षा ले कर भी,

इक दिन कामयाबी को मेरी झोली में डालेगा।

जो सीख किताबों से न मिली,

वो सीख जिन्दगी ने सिखा दी।।

मुझे उस दिन का इन्तजार है,

जिस दिन मैं पत्थर को पिघला दूँगी।

इस धरती पे तूने भेजा है, तूने कुछ सोच के,

राह तू दिखा दे, मंजिल मैं ढूढ़ लूँगी।

मंजिल मैं खोज लूँगी।

जिन्दगी में यदि सब कुछ आसानी से मिल जाए,

तो ऊपर वाले तुझे कोई याद करे क्यूँ।

वक्त का पहिया चलता है,

नई-नई मिलती है सीख, जिन्दगी की।

नई-नई मिलती है सीख, जिन्दगी की।।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हौंसलें



सुमन केशरी
सहा. पर्यवेक्षक

क्यूँ जिन्दगी में उलझने बड़ी हैं,

उलझनों से कह दो मेरे हौंसलें बड़े हैं।

क्यूँ जिन्दगी में उलझने बड़ी है.....

जिन्दगी में तूफान आए तो आए,

मेरे हौसलों के आगे वो भी ढह जाए।

कहते हैं कि मुक्कदर ऊपर वाला लिखता है,

लेकिन मैं कहती हूँ अपना मुक्कदर मैं लिखुँगी।

अगर सब कुछ ऊपर वाला करवाता है,

तो मुझे इस दुनिया में इम्तहाँ क्यूँ देना पड़ता है।

क्यूँ जिन्दगी में उलझने बड़ी हैं,

उलझनों से कह दो मेरे हौसलें बड़े हैं।।

मैं जो कुछ कह रही हूँ निरर्थक नहीं है,

मेरे कहने का कुछ तो अर्थ है।

मेरे अनुभव बताते हैं असंभव को संभव किया है,

और संभव को असंभव किया है।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती,

संघर्ष के बिना जीत का अहसास नहीं होता।

जीत का अहसास मुश्किलें याद दिलाती हैं।

क्यूँ जिन्दगी में उलझने बड़ी हैं,

उलझनों से कह दो मेरे हौसले बड़े हैं।।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

बढ़ती उम्र



मीनू पाल
बहन सुश्री किरन लता

जब भी मेरी शादी की बात चलती है,
मन जाने क्यों चिढ़ जाता है,
कोई चेहरा सामने आता है,
और दिल चुपचाप सवाल उठाता है—

"क्या यही सही है?"

घर वाले कहते हैं—
"इतनी बड़ी हो गई हो…"
हाँ, बड़ी हो गई हूँ,
ये बात मैं भी जानती हूँ,
मगर क्या उम्र बढ़ने के साथ
मेरी पसंद भी मर जानी चाहिए?

क्या सिर्फ इसलिए कि
अब समाज सवाल करने लगा है,
मैं अपना पूरा जीवन
किसी ऐसे इंसान के नाम कर दूँ
जिसे मेरा दिल पहचानता तक नहीं?

मुझे भी चाहिए कोई…
पर कोई भी नहीं।
जो मुझे समझे,
मेरी खामोशी पढ़े,
मेरी हँसी के पीछे की थकान जाने,
और मेरे "हाँ" से पहले
मेरे "नहीं" की भी इज़्ज़त करे।

मुझे शादी से डर नहीं लगता,
डर लगता है गलत इंसान से—
जिसके साथ पूरी ज़िंदगी बितानी हो
और फिर हर दिन खुद से पूछना पड़े,
"काश… मैंने थोड़ा और इंतज़ार
किया होता।"

तो हाँ……
मैं बड़ी हो गई हूँ…
पर इतनी भी बड़ी नहीं
कि अपने जीवन का फैसला
सिर्फ लोगों की जल्दी में कर दूँ।

मुझे देर से मिले,
मगर ऐसा मिले
जिसे देखकर दिल कहे—
"हाँ… अब समझ आया,
इंतज़ार क्यों ज़रूरी था।"

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मुक्तक



किरण लता
सहायक निदेशक /राजभाषा

सम्बन्ध बनाना
सम्बन्धों को जीना और बात है
सम्बन्धों को घोलकर पीना
उदरस्थ करना
उसके रस को रक्त बनाना
उसे भावना संग दौड़ना, कुछ और बात है।

सपने देखना
सपनों का बन जाना और बात है
सपने को हकीकत बनाना
उसी का हो जाना
खो जाना
ऐसे हालात बनाना कुछ और बात है।

साथी बनाना
साथी का बन जाना और बात है
साथी को दिल से लगाना
दिल के गहरे ले जाना
मिट जाना
ऐसे जज्बात जगाना कुछ और बात है।

प्रेम करना
प्रेमी का हो जाना और बात है
प्रेम को मंजिल बनाना
देना ही देना
लेना भूल जाना
ऐसी ही बिसात बिछाना कुछ और बात है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 3

कार्यालय की गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 14.09.2025 से दिनांक 29.09.2025 तक कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

इस दौरान कार्यालय में अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमे अधिक से अधिक संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया।

समापन समारोह के दिन कार्यालय की हिंदी पत्रिका तरंग के 147-148 वें अंक का विमोचन किया गया एवं हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।


















सेवानिवृत्ति सह-सम्मान समारोह

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश, प्रयागराज; द्वारा कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश, प्रयागराज कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश शाखा प्रयागराज तथा कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उत्तर प्रदेश शाखा प्रयागराज में कार्यरत सेवानिवृत होने वालें अधिकारीयों/कर्मचारियों हेतु प्रत्येक माह के अंतिम कार्यदिवस पर सेवानिवृत्ति सह-सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है।

समारोह में सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा, वर्गाधिकारियों एवं शाखाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में, अंगवस्त्र, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह अवसर उनके दीर्घकालीन सेवाकाल, कर्तव्यनिष्ठा एवं संस्था के प्रति समर्पण के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का प्रतीक है।

सेवानिवृत्त कार्मिकों के लिए यह समारोह सम्मान, आत्मीयता और गौरव का अविस्मरणीय क्षण होता है। उनकी सेवाओं एवं योगदान को स्मरण करते हुए यह आयोजन भावी पीढ़ी के लिए भी समर्पण, निष्ठा एवं कर्मठता की प्रेरणादायी मिसाल प्रस्तुत करता है।









ऑडिट सप्ताह 2025 : तकनीक, नवाचार और सांस्कृतिक उत्सव का संगम

कार्यालय में 16 से 27 नवंबर 2025 तक ऑडिट सप्ताह 2025 का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। इस अवसर पर "सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में सुधार के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग", "स्वायत्त निकायों का प्रबंधन, शासन, जवाबदेही", "वित्तीय प्रबंधन और ऑडिट" तथा "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में डेटा-आधारित हाइब्रिड ऑडिटिंग" विषयों पर ज्ञानवर्धक सेमिनार आयोजित किए गए। सेमिनार में एम.एन.आई.टी. इलाहाबाद की पूर्व डीन एवं विभागाध्यक्ष प्रो. गीतिका गोयल ने अतिथि वक्ता के रूप में प्रतिभागियों को संबोधित किया।

ऑडिट सप्ताह के दौरान कार्यालय परिसर में चित्रकला प्रतियोगिता एवं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन तथा ऑडिट की जागरूकता को सामान्य जन मानस तक पहुचाने के उद्देश्य से कार्यालय परिसर से एक पद यात्रा का आयोजन किया गया। समापन समारोह में 'उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक कला केंद्र' के कलाकारों द्वारा कथक नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी गई तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा गीतों की प्रस्तुति से समारोह में उल्लास एवं उमंग का वातावरण बना।

यह संपूर्ण आयोजन प्रधान महालेखाकार महोदय एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया के अनुमोदन एवं मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ऑडिट सप्ताह से तकनीकी नवाचार, ज्ञान-विनिमय, रचनात्मकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को एक मंच पर लाकर कार्यालयीय कार्य-संस्कृति में नई ऊर्जा का संचार किया।










भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
ऑडिट सप्ताह (20-28 नवम्बर, 2025)
समापन समारोह


भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग


ह (20-28 नवम्बर, 2025)
8 नवम्बर 202


ट सप्ताह (20-28 नवम्बर, 2025)
28 नवम्बर 25


ऑडिट सप्ताह (20-28 नवम्बर, 2025)
28 नव 2025


ट सप्ताह (20-28 नवम्बर, 2025)
28 नवम्बर 2025


ट सप्ताह (20-28 नवम्बर, 2025)
28 नवम्बर, 25


ह (20-28 नवम्बर, 2025)
नवम्बर 2025

गणतंत्र दिवस-2026

कार्यालय में प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा 77 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। ध्वजारोहण के पश्चात तिरंगे को सलामी भी दी गई। अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान प्रधान महालेखाकार महोदय ने सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा राष्ट्र एवं समाज की प्रगति हेतु अपने जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने पर बल दिया गया। उन्होंने बताया कि एक विस्तृत राष्ट्र को सफलतापूर्वक शासित करने हेतु संविधान की भूमिका अहम हो जाती है। हमारे संविधान निर्माताओं ने गणतंत्र की मूल भावना को केंद्र में रखते हुए 'जनता का शासन' स्थापित किया है। उन्होंने वर्तमान समय में संविधान और विधिक नियमों के प्रति और अधिक निष्ठा एवं अनुपालन सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया।











अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

दिनांक 21 जून 2026 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय के प्रथम तल स्थित सरस्वती सभागार में एक योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया। प्रातः 7 बजे से आयोजित इस योगाभ्यास सत्र में कार्यालय के अधिकारियो/कर्मचारियों ने भाग लिया। योग प्रशिक्षक ने कार्यालय के काम-काज में योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला तथा अनेक योगासनों के माध्यम से कार्मिकों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने का उपाय बताया। इस सत्र में प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य वर्गाधिकारीयों के साथ कार्यालय के कार्मिकों की सक्रिय भागीदारी रही तथा प्रधान महालेखाकार महोदय ने योग को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया। सत्र के अंत में सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों ने सत्र के सफल संचालन हेतु आमंत्रित प्रशिक्षक के प्रति आभार व्यक्त किया।










स्वतंत्रता दिवस 2026

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज में 80वां स्वतंत्रता दिवस राष्ट्रीय उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय, वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन महोदया, अन्य वर्गाधिकारी महोदय एवं शाखाधिकारी की गरिमामय उपस्थिति में ध्वजारोहण समारोह संपन्न हुआ।

राष्ट्रगीत के उपरांत प्रधान महालेखाकर महोदय द्वारा ध्वजारोहण किया गया तत्पश्चात सामूहिक राष्ट्रगान किया गया | प्रधान महालेखाकर महोदय द्वारा देश के अमर शहीदों को नमन करते हुए उनकी सर्वोच्च बलिदान को याद किया और श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

कार्यक्रम का सांस्कृतिक पक्ष भी अत्यंत मनमोहक रहा, जिसमें कार्यालय के समस्त कर्मियों ने उत्साहपूर्वक विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं, जिससे स्वतंत्रता दिवस की गरिमा और भी बढ़ गई। इस प्रकार यह महोत्सव देशभक्ति, एकता और समर्पण की भावना के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।











विभिन्न सेमिनार का आयोजन

कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों के लिए कल्याण अनुभाग के सौजन्य से वित्तीय जागरूकता के लिए विभिन्न बैंकों द्वारा बैंकिंग जागरूकता शिविर, ART OF LIVING के योग प्रशिक्षिका डॉ. सुत्ता सिंह द्वारा मानसिक शांति एवं उत्तम स्वास्थ हेतु एक ध्यान शिविर तथा प्रयागराज के कई प्रतिष्ठित हॉस्पिटल एवं फिजियोथेरेपी एंड रिहैबिलिटेशन सेंटरो द्वारा स्वास्थ्य एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया| स्वास्थ शिविरों के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने हेतु जानकारियाँ प्रदान की गईं|









सितंबर 2025 से अगस्त 2026 तक सेवनिवृत हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

क्रम संख्या	नाम (सर्वश्री)	पदनाम	आई डी संख्या
1.	राम सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231746
2.	दीपक कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3231658
3.	दिलीप कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3230451
4.	शकुन्तला देवी	एम.टी.एस.	UPALA3231627
5.	सतीश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक .	UPALB3231164
6.	किशोर कुमार कनौजिया	स्टाफ कार ड्राइवर	UPALB3230451
7.	गोविन्द लाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231763
8.	संतोष कुमार केशरवानी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231834
9.	लक्ष्मण प्रसाद	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3232449
10.	निजामुद्दीन	लेखापरीक्षक	UPALB3232101
11.	चन्द्र प्रकाश श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231659
12.	राजेश कुमार द्विवेदी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231669
13.	लालजी त्रिपाठी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231769
14.	विजय कुमार नय्यर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231680
15.	अजय कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3230420
16.	बलवन्त राय मदान	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3232606
17.	लालजी केशरवानी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231787
18.	सावित्री देवी	लेखापरीक्षक	UPALB3231520
19.	अब्दुल वली	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3230348
20.	नन्द लाल	पर्यवेक्षक	UPALV3230992
21.	अशोक कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3230388
22.	संजय सक्सेना	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231650
23.	मलिक मोहम्मद अफाक अहमद	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3230540
24.	कुलदीप चन्द्र श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231757
25.	मुन्ना प्रसाद	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3232188
26.	चौधरी रंजय कुमार	सहा. पर्यवेक्षक	UPALA3231184
27.	राकेश कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231756
28.	संजय अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3230442
29.	संजय कुमार राय	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3231793
30.	सुमित चक्रवर्ती	पर्यवेक्षक	UPALA3230965
31.	राम प्रकाश	सहायक पर्यवेक्षक	UPALV3231011

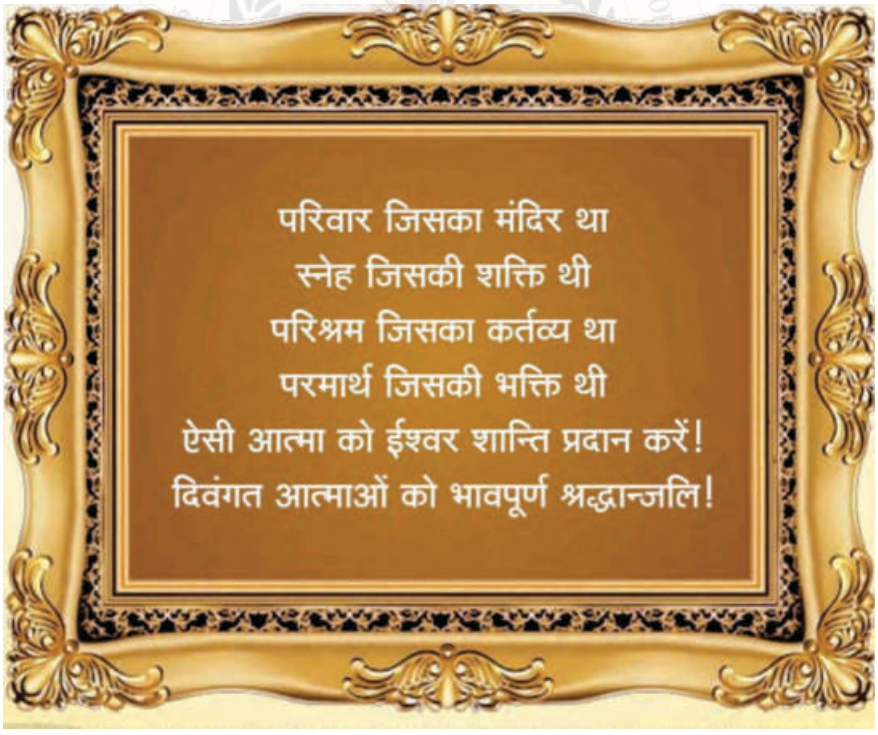
32.	ललित कुमार सेन	लेखापरीक्षक	UPALB3232023
33.	शिव शंकर सोनकर	एम.टी.एस.	UPALB3232047
34.	राजेश कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3230479
35.	राम किशोर वर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3232183
36.	ललित कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231753
37.	दीपक कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231795
38.	ध्रुव कुमार अग्रवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	D-479
39.	मोहम्मद दाउद	पर्यवेक्षक	UPALA3230836
40.	उदय राज सरोज	पर्यवेक्षक	UPALB3230976
41.	शमशेर अली खान	सहायक पर्यवेक्षक	UPALV3230957
42.	हेमेन्द्र कुमार	वरि० लेखापरीक्षक	UPALA3231284
43.	सत्येन्द्र बनौधा	लिपिक	UPALA3231570
44.	सरस्वती देवी	एम.टी.एस.	UPALA3231517
45.	चंद्रभान	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231760
46.	कमला कान्त	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3230481
47.	राम लौटन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3232185
48.	राम शरण यादव	वरि०लेखापरीक्षक	UPALA3231437
49.	प्रेम शंकर	पर्यवेक्षक	UPALB3230988
50.	मनीष कुमार जायसवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3230545
51.	जुगल किशोर रावल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3231656
52.	उमा शंकर अवस्थी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231681
53.	राधे श्याम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALV3231871
54.	अनूप कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	UPALA3231279
55.	संजय सक्सेना	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3230349
56.	देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALB3230513

Dedicated to Truth in Public Interest

स्मृति शेष

कार्यालय अपने प्रियजनों के आकस्मिक निधन से शोकाकुल है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्माओं को अपने ही श्री चरणों में स्थान प्रदान करें।

क्रम संख्या	नाम (सर्व श्री)	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	मृत्यु की तिथि
01	सुनील कुमार सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	UPALB3231338	24.02.2026
02	दीपक कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	UPALA3230419	17.07.2026
03	सौरभ सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	1978	19.07.2026



राजभाषा (प्रमुख अधिनियम एवं नियम)

क) राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967):

- धारा 3 - संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा।
- धारा 3(3) के तहत 14 दस्तावेज अनिवार्य रूप से द्विभाषी होंगे: संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां, अनुबंध, करार, लाइसेंस, टेंडर आदि।

ख) राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित 1987, 2007, 2011):

- नियम 5 - हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में देना अनिवार्य है।
- नियम 6 - हिंदी और अंग्रेजी दोनों में लिखे जाने वाले दस्तावेज।
- नियम 10(4) - जिस कार्यालय में 80% कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है, उसे राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है।
- नियम 8 - 'क' क्षेत्र (उ.प्र., म.प्र., बिहार, राजस्थान, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, झारखंड) से 'क' क्षेत्र को पत्राचार शत-प्रतिशत हिंदी में होगा।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य

वार्षिक कार्यक्रम — हिंदी प्रयोग संबंधी लक्ष्य (2026-27)

क्र.सं.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित) • क से क : 100% • क से ख : 100% • क से ग : 70% • क से क व ख : 100% • ख से क : 90% • ख से ख : 90% • ख से ग : 60% • ख से क व ख : 90% • ग से क : 60% • ग से ग : 60% • ग से क व ख : 60%	100%	90%	60%
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%

नोट : • क्षेत्र 'क' : हिंदीभाषी राज्य / संघ राज्य क्षेत्र • क्षेत्र 'ख' : आंशिक हिंदीभाषी राज्य / संघ राज्य क्षेत्र
• क्षेत्र 'ग' : अहिंदीभाषी राज्य / संघ राज्य क्षेत्र
• सभी निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु राजभाषा नियम, 1976 एवं क वर्गीधानों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

ग) वार्षिक कार्यक्रम:

प्रत्येक वर्ष राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें हिंदी में पत्राचार, टिप्पण, प्रशिक्षण के लक्ष्य निर्धारित होते हैं।

घ) कार्यालय के लिए विशेष:

महालेखाकार कार्यालयों को राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित किया गया है। अतः सभी धारा 3(3) के दस्तावेज, लेखापरीक्षा रिपोर्ट के सार, प्रेस विज्ञप्ति द्विभाषी जारी करना अनिवार्य है।

कार्यालय में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता की कुछ झलकियाँ


















SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रकाशक :

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

